श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला नं० २६

श्री

चारित्र पद्यावलि

कर्त्ता—

मुनिराज श्री दर्शनविजयजी महाराज
वगैरह (त्रिपुटी)

द्वितीय	वीर निर्वाण सं० २४६५	मूल्य
१००० प्रति	विक्रम सं० १९९६	०-२-०

प्रकाशक—
१—श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला,
वीरमगाम (गुजरात)
२—पं० बालाभाई वीरचंद देशाई,
C/o पटेलनो-माढ़, मालपुरा
एलीस ब्रीज, मु० अहमदाबाद।

मुद्रक—
पं० भूपसिंह शर्मा,
सरस्वती प्रेस, बेलनगंज, आगरा।

अनुक्रमणिका

रागों का समय

सुबह ४ बजे से ६ बजे तक

प्रभात, बीमास, ललित, भैरव, वेलावल, आशावरि तोड़ी वगैरह।

६ बजे से ३ बजे तक

सारंग, गौड़ सारंग, गौड़ मल्हार, गौड़ वगैरह।

३ बजे से ७ बजे तक

मल्हार, मुल्तानि, पिलु, भिमपिलास, धनाश्री पूर्वी, पूरिया, श्री राग, गौडी वगैरह।

सुबह ४ बजे से रात के १२ बजे तक

कल्याण, द्रुपद, हमीर, विहाग, भूपाल, केदारो, देश, कामोद, दरबारी कनड़ो, वाघेसरी, सींहानो कनड़ो, गजल, तिलंग, मालकोश, जय जयवन्ती, कार्फी शंकरा, वढंस, बरवा, परज, सोहिणी, कालिगड़ो, वसंत, हिंडोल, खमाच झिंझोटी, गारा, माजी, पहाड़ी, आशा, माढ़, मांड़ आशामांड, छांया खमाच, सिंध, सिंध-काफी वृन्द वगैरह।

❀ प्रस्तावना ❀

आत्म कल्याण के साधनों में संगीत-भजनों का भी अनोखा स्थान है। इस बात को मद्दे नजर रख कर इस पद्यावली का निर्माण और प्रकाशन हुआ है।

मुनि दर्शनविजयजी आदि त्रिपुटी ने भारत वर्ष के सब तीर्थों में विहार करके भिन्न २ राग रागिनी में इतिहास तीर्थ महात्म्य दर्शन पूजन फल इत्यादि विषयों से भरपुर भजन पद झंडा-भजन जयन्ती गहुली वगेरह पद्य बनाये हैं। जिनमें से कुछ संग्रह चारित्र मंजरी और चारित्र स्तवनावली में प्रकाशित हो चुका था, उसके खतम हो जाने पर यह बढा हुआ दूसरा संस्करण संगीत प्रेमीओं को सादर किया जाता है।

इस कार्य में श्रीमती सेठानीजी भगवतीदेवीजी ने आर्थिक सहयोग से हमें उत्साहित किया है इस लिये हम उनके आभारी हैं।

— प्रकाशक

आगरा निवासी

श्रीमान् सेठ अचलसिंहजी जैन

की धर्मपत्नी

अ० सौ० श्रीमती भगवतीदेवी

की तरफ से

चतुर्दशी के उद्यापन निमित्त

भेंट

रागद्वेषप्रणाशाय, सर्वजीवहितैषिणे ।
विद्योद्धारकर्त्राय, नम कमलसूरये ॥

श्री

चारित्र पद्यावलि

---

१ श्री आदिनाथ स्तवन (अयोध्या शहर)

(राग—अब तो जिनन्दजी का ले लो शरण)

श्री विनितापुरी तीरथ जुहार ॥ टेर ॥

ऋषभ अजितजी श्रीअभिनंदा,
सुमति अनंत जिन पाचों श्रीकार ॥ श्री० ॥१॥

देव विमान से च्यौन को पाकर,
चारों गति का कीना सहार ॥ श्री० ॥२॥

जन्म धराया पांचों जिणंद ने,
    यहां सभी ने छोड़ा संसार ॥ श्री० ॥३॥
चार प्रभुने कंवल पाकर,
    समोसरन में गाये मलहार ॥ श्री० ॥४॥
पुरिमताल में ज्ञान ऋषभ को,
    कोडा कोडि सुर साथ विहार ॥ श्री० ॥५॥
पुरी अयोध्या पांचों प्रभु के,
    उन्नीस पुण्य कल्याण विचार ॥ श्री० ॥६
भव्य भुवन में श्री जिन प्रतिमा,
    समोसरन और चरण उदार ॥ श्री० ॥७॥
तीरथ दरशन दर्शन पावे,
    शिर नमावत वार हजार ॥ श्री० ॥८॥

२ श्री आदिनाथ स्तवन (हस्तिनापुर)

(राग—श्याम कल्याण)

पारणु' कीजे स्वामी, ऋषभ जिनंदा ॥ टेर ॥
विनितापुरी में चार हजार से,
महाव्रत पाच धरदा ॥ पा० ॥१॥
पूरव संचित कर्म उदय से,
घडा अन्तराय लहंदा ॥ पा० ॥२॥
आहार पानी शुद्ध न पावे,
कठिन तपस्या करदा ॥ पा० ॥३॥
चार सौ दिन के वार्षिक तप से,
तोडा निघन का फदा ॥ पा० ॥४॥
हस्तिनापुर में नाथ पधारे,
देखे उन्हें नृप नंदा ॥ पा० ॥५॥

श्रेयांस बालक जाति स्मरण से,
घर में बुलावे मुनिंदा ॥ पा० ॥६॥
ईख के रस से प्रभु पड़िलाभे,
नृप सुत भाव अमंदा ॥ पा० ॥७॥
धन्य श्रेयांसो, धन्य इक्षुरस,
पाया सुपात्र जिनंदा ॥ पा० ॥८॥
वार्षिक तप का पारणा कीना,
सुर पंच दिव्य करंदा ॥ पा० ॥९॥
दान तीरथ यूं गजपुर ठानुं,
यहां जिन चरण धरन्दा ॥ पा० ॥१०॥
ढूंढत ढूंढत तीरथ पाया,
चरण का शरण लहंदा ॥ पा० ॥११॥
संवत निधि गज नंदा चंदा,
पारणा दिन गुण वृन्दा ॥ पा० ॥१२॥

तीरथ पाया दर्शन गाया,
जय जय श्री जिनचन्दा ॥ पा० ॥१३॥

३ श्रीआदिनाथ आखातीज स्त० (५०)

(राग—जाओ जाओ ओ मेरे साधु रहो गुरु के संग)

आवो आवो आदीश्वर दादा, ग्रहो इक्षु रस दान ॥टेर॥
नाभिनंदन विनिता मंडन,
ऋषभ देव गुणगान ।
चार हजार मनुष्यों साथे,
योगी नन्या प्रधान ॥ आवो० ॥१॥
लोको आपे कन्या घोड़ा,
मीना विधिना अजाण ।
स्वीकारे नहीं तेने प्रभुजी,
चार ज्ञान थी जाण ॥ आवो० ॥२॥

साथना सघला छुटा थइ ने,
वसीया वन वेरान ।
हस्तिनापुर नाथ पधार्या,
फरता वरस प्रमाण ॥ आवो० ॥३॥
श्रेयांसे समजी पोकारी,
वोलाव्या भगवान ।
विनति करी के दादा दासनुं,
स्वीकारो आदान ॥ आवो० ॥४॥
श्री श्रेयांसे एम भावता,
इक्षु रसे वहुमान ।
पारणु वार्षिक तपनुं करावी,
साध्युं निज कल्याण ॥ आवो० ॥५॥
धन्य दिवस धन्य भाग्य हमारा,
शासन ना सुल्तान ।

अम आँगणिए आज पधार्या,
शा शा करूं सन्मान ॥ आवो० ॥६॥
अक्षयत्रीज ने उत्तम दिवसे,
पहेलुं ए मुनि दान।
वार्षिक तप ए जगमा मोटुं,
जेम ग्रहगण मा भाण ॥ आवो० ॥७॥
सर्व मंगल मा पहेलुं मंगल,
तप धारी भगवान ।
चारित्र दर्शन गुणना सागर,
करो जगत कल्याण ॥ आवो० ॥८॥

८ श्री सिद्धगिरि वंदन स्तवन

(राग - कव्वाली - अहिंसा का डंका आलम में)

श्री सिद्धगिरि को वंदन हो,
अर्चन पूजन गुणरंजन हो ॥ टेर ॥

श्री नेमनाथ विन सभी जिनवर
पुंडरिक प्रमुख मुनि गणधर ।
आये इस पर नृप नन्दन हो ॥ अर्चन० ॥१॥
क्रोड़ों की संख्या में मुनिवर,
वसे शिव भुवन में यहां आकर ।
बने सिद्ध बुद्ध निरंजन हो ॥ अर्चन० ॥२॥
सिद्धगिरि के ध्याता पापी भी
आतम कल्याण को पाते हैं ।
बने कुक्कुट भी नृप चंदन हो ॥ अर्चन० ॥३॥
इस गिरि की तारीफ़ आगम में
गणधर भी साफ़ वताते हैं ।
जो भारत भूमि के मंडन हो ॥ अर्चन० ॥४॥
आलम सारे में इस गिरि से
नहिं तीरथ शानि रखते हैं ।

बडे पुण्य से गिरि के फर्सन हो ॥ अर्चन० ॥५॥
हम ध्यान में आदि जिनेश्वर हो
चारित्र व दर्शन के नर हो ।
मानव जीवन हम धन धन हो ॥ अर्चन० ॥६॥

५ श्री आदि जिन स्तवन

(कम्मा की छाया में गांधी का तेरा पालना)

कदमों की छाया में, प्रभु के पैर पूजना ॥ टेर ॥
आदि जिनेश्वर आदि नरेश्वर ।
मरुदेवी मात के लाल,
नाभि के नंद पूजना ॥ कदमों० ॥१॥
पूर्व निवाणु, आप पधारे ।
कीना समोसरण रे,
तीरथ भूमि पूजना ॥ कदमों० ॥२॥
सिद्धाचल पर, उसी भूमि में ।

खिर्नी के दरखत की,
छाया में प्रभु पूजना ॥ कदमों० ॥३॥
उसी छाया में, चक्री भरत ने।
प्रभुजी के चरणां रे,
बैठाये सुबह पूजना ॥ कदमों० ॥४॥
मोर व सांप भी, वैर विसर गये।
अकल महिमा रे,
भक्ति से पैर पूजना ॥ कदमों० ॥५॥
आधि उपाधि, व्याधि को टारे।
शीतल छाया रे,
सिद्धाचल गिरि पूजना ॥ कदमों० ॥६॥
गिरिवर फरसन, चारित्र दरशन।
जन्म सफल भयोरे,
आदीश्वर प्रभु पूजना ॥ कदमों० ॥७॥

६ श्री आदिनाथ स्तवन

(राग—मेरे मौला बुला ले मदीने मुझे)

आदिनाथ शत्रु जे, बुला ले मुझे ॥ टेर ॥
आप आये थे गिरिपर ।
पूर्व निन्नाणु प्रभो !
और भी जिनवर पधारे ।
निमल गिरि पुनित हो ॥
ऐसी भूमि का फरस करा दे मुझे ॥ आदि० ॥१॥
इस गिरि पर ध्यान धर के ।
जाप निजपद का किया !
कर्म शत्रु को हटा कर ।
वो ही शिव स्वामी हुआ ॥
उसी ध्यान का पाठ सिखादे मुझे ॥ आदि० ॥२॥

चंद्र शेखर मुक्ति गामी।
हुआ कर्म हटाय के !
हुआ कुक्कुट चंद राजा।
सिद्ध गिरि पर आय के ॥
इसी तौर का ज्ञान दिलादे मुझे ॥ आदि० ॥३॥
श्री सीमंधर स्वामी ने यूं।
कहा इंद्र के सामने !
तीर्थ शत्रुंजय के सानी।
और नहीं इस काल में ॥
तीरथ भक्ति का प्याला पिलादे मुझे ॥ आ० ॥४॥
अन्यमति संसर्ग से मैं।
द्वेष जिनमत का किया।

कुमति की कुमगति मे।
द्वेष मूर्ति का किया ॥
अब चरणों का दास बनाले मुझे ॥ आदि० ॥५॥
बालकी अरदास अमृत–
पान भक्ति लीजिये !
सिद्ध गिरि बुलाय के।
निज आतम दर्शन दीजिये ॥
गिरनारी की शेर बतादे मुझे ॥ आदि० ॥६॥

---

७ श्री आदिनाथ स्तवन

(राग—काली कमली वाले, तुम से लाखों प्रणाम)

श्री आदीश्वर नाना तुम से लाखों प्रणाम ॥ टेर ॥
आपने युगला धर्म निवारा।
नीति रीति का किया प्रचारा ॥

दीना वार्षिक दान ॥ तुम से० ॥१॥
पांच महाव्रत धर्म स्वीकारा।
साथ में निकले चार हजारा ॥
वार्षिक तप अभिराम ॥ तुम से० ॥२॥
केवल पाकर धर्म बताया।
सत्य शांति का नाद सुनाया ॥
भविक जीव विश्राम ॥ तुम से० ॥३॥
नसीब से जिन दर्शन पाया।
रत्न चिंतामणि हाथ में आया ॥
औरों से क्या काम ॥ तुम से० ॥४॥
मुक्ति कमल में वास तुमारा।
चारित्र दर्शन जय जयकारा ॥
सिद्धाचल शुभ धाम ॥ तुम से० ॥५॥

---

८ आदिनाथ का स्तवन

(राग—कानुडा नारी कामणकुरनारी)

श्री सिद्धगिरि पर ध्यानवी।
कुञ्जोमा प्रभुजी शाति आलापे।
देवो सुर पूरे वेणु वासलीए;
ॐ सवि जगमा शाति व्यापे॥ टेर॥
काल अनादि भमतो चेतन,
रजल्यो भव भवमां।
शाति न पाम्यो पण निर्भागी,
कर्म विडंबनमा।
ए कर्मा ए कर्मा,
ए कर्म शत्रुने दूर करवा काजे।प्रभुजी° ॥१॥
त्रण भुवन मा सिद्ध गिरि सम
अन्य नथी तारु।

भावे भेटो ए तीरथ ने,

भवजल थी तारु ॥

सुरंगे सुरंगे,

सुरंगे चारित्र दर्शन गुण राजे ॥प्रभुजी० ॥२॥

---

६ आदिनाथ महिमा

(राग माल कोश)

भेटो विमल गीरींद, भविकजन भेटो० ॥टेर॥

आदिनाथ प्रभु पूर्वनवाणु,

आव्या सिद्धि गिरींद ।

कांकरे कांकरे सिद्ध अनन्ता,

प्रणमों भाव अमन्द ॥ भ० ॥१॥

भव जल तरवा तारु तीरथ,

आतम गुण मकरन्द ।

शिव वधु वरवा मंडप ए गिरी,
कापे कलिमल कंद ॥ भ० ॥२॥
शत्रुंजय सिद्धाचल शिवगिरि,
मुक्ति निलय गुण कन्त ।
नाम प्रमाणे गुण ने धारे,
सेवे सुर नर इन्द ॥ भ० ॥३॥
मालकोश मां प्रभुजी आलापे,
तीरथ महिमा सम्बन्ध ।
देवो वॉसली ये सुर पूरे,
निसुणे श्रोता वृन्द ॥ भ० ॥४॥
पूरव पुण्य थी सिद्ध गिरीनी,
फरसना जीव लहन्द ।
हृदय कमल रची चारित्र दर्शन
पूजो आदि जिनन्द ॥ भ० ॥५॥

१० आदिनाथ स्तवन (शत्रुंजय)

(राग—रामकली)

दादाजी कृपा करी मने तारो;
आशरो एक तमारो ॥ टेर ॥
काल अनादि साथे रमिया,
प्रीत पुराणी संभारो ।
आज तमे पाम्या ठकुराई,
आव्यो हवे मुज वारो ॥ दा० ॥१॥
केवल पामी माने विसारी,
तो शे मने न विसारो ।
अंते मात ने शिव सुख आप्युं;
तो केम हुँ छुं अकारो । दा० ॥२॥
नर भव उत्तम कुल ने पाम्यो,
तोय न आव्यो आरो ।

तेहज कामने सिद्धज करवा,
पालव पकड्यो तमारो ॥ दा० ॥३॥
छेह न देशो दीन बालक छुं,
जेवो तेवो पण तारो ।
पतीत उद्धारण बीरुद तमारू,
ससार पार उतारो ॥ दा० ॥४॥
शत्रुजय मडन महाराजा,
एह अरज अवधारो ।
चारित्र दर्शन नेह नजर थी,
जन्म मरण दु ख वारो ॥ दा ॥५॥

---

११ आदिनाथ स्तवन (मु० कोठ)

(राग–मनडु किमि ही न बाजे हो कुथुजिन०)

मूरत मोहन गारी, हो आदिजिन ।।मूरत०।।टेर।।

नाभि राजा ना नंद नगीना,
मारु देवी ना जाया ।
इक्ष्वाकु वंश सागर चंदा,
देव दानव नमे पाया ॥ हो० ॥१॥
परमातम पुरुषोत्तम प्यारा,
परमेश्वर जयकारा ।
युगला धर्म निवारक दादा,
न्याय नीति ना आधारा ॥ हो० ॥२॥
आदि नरेश्वर आदि तीर्थंकर,
मोह चमू हणनारा ।
जगजीवन जगनाथ जिनेश्वर,
आदि धर्म दातारा ॥ हो० ॥३॥
हाथ झालीने केई ने तार्या,
तारक बीरुद संभालो ।

जेवो तेवो पण बालक तमारो,
नेह नजर थी निहालो ॥ हो० ॥४॥
कोंठ जिनालय बिंब मनोहर,
ऋषभ जिनेश्वर भेट्या।
चारित्र दर्शन वदन करता,
कठिन कर्म दल मेट्या ॥ हो० ॥५॥

---

१० श्री आदिनाथ स्तवन (मु० मेत्राणा तीर्थ)
(राग–पदम प्रभु प्राण से प्यारा, कव्वाली)
ऋषभ जिनराज ? जयकारा,
पूरव पुण्ये मल्या प्यारा।
समाणी आंखना तारा,
चमकता दिव्य मीतारा ॥ऋ०॥१॥
धरम के कर्म ना जाणे,

प्रभु ध्यान मैं धारो ।

कर्यां नैतिक सुधारा,
युगलिया धर्म निवारा ॥प्र०॥२॥
प्रथम राजा प्रथम योगी,
प्रथम तीर्थेश पद भोगी ।
प्रथम दानों ना देनारा,
प्रथम धर्मों ना करनारा ॥प्र०॥३॥
पुराणुं धाम मेत्राणा,
अखंड आणा जगत् राणा ।
नागर गच्छ ने विजय कारा,
विराजे ईश भयहारा ॥प्र०॥४॥
प्रभु ! मुक्ति कमल वाला,
विनय-चारित्र रढियाला ।
विजय दर्शन ना आधारा,

वहाओ प्रेमनी धारा ॥ऋ०॥५॥

---

१३ आदिनाथ स्तवन (मु० आबू तीर्थ)

(राग-वालम तुमारी विनयलेता ।
मान मूरख नारी जोता, शिर झुके लली लली)

आदि नरपति आदि जिन पति,
साभरे छे पले पले ।
सर्व जीव नो हित कर्ता,
सांभरे मने पले पले ॥ टेर ॥
जे समयमा आ जगतमा, धर्म कर्म को ना मले।
नीति मारगने चलाव्यो ॥ सांभरे छे० ॥१॥
युगलयुगमा भाई भगिनी, दंपती रूपे मले।
एहवी रीति हटावी ॥ सांभरे छे० ॥२॥
छने धान्य गरल मारे, मनं भुख्या टलवले ।

विद्याओ तेने बतावी ॥ सांभरे छे० ॥३॥
छुटे हाथे दान दईने, साधु थई ने निकले।
ध्यान तपने केलवे एम ॥ सांभरे छे० ॥४॥
पामी केवल ज्ञान लक्ष्मी, आपणां शक्ति-बले।
संघ स्थाप्यो धर्म रोप्यो ॥ सांभरे ॥५॥
मात पुत्रो पुत्री पोते, मुक्ति सुखमां जइ भले।
एम प्रभुना गुण अनंता ॥ सांभरे छे० ॥६॥
आबू पर ए ऋषभ प्रभुना, चरण मां आवी ढले।
भाव थी चारित्र-दर्शन ॥ सांभरे छे० ॥७॥

---

१४ श्री आदिनाथ स्तवन

(मु० भांदक तीर्थ C. P.)

(राग—बलिहारी २ जगनाथ हो जाउं तोरी०)

सुखकारी (३) जग जीव को सुखकारी,

आदि जिनवर का पूजन कीजियेजी ॥टेर॥
पानी चन्दन फुलमाला,
धूप दीपक की माला ।
चावल निवेद फल धारी, जग० ॥१॥
खुशबो कपड़े और चूरण,
आंगी श्रीध्वज आभूषण ।
पुष्पारोहण जयकारी, जग० ॥२॥
पुष्प मण्डप फूल वृष्टि,
आठों मंगल गीत सृष्टि ।
वाद नाटक नृप नारी, जग० ॥३॥
आठों या सत्रा मान,
पूजा के भेद प्रमाण ।
आगम आज्ञा को दिलधारी, जग० ॥४॥
सब आयु भर पर्व में

मस्तक कपाल गले में ।
उर उदर टीकी धारी, जग० ॥५॥
स्तोत्रों चैत्यो का वंदन,
भजनों जय स्तुति निरंजन।
भाव पूजन शिवकारी, जग० ॥६॥
सूर्याभ पूजा ठाठ,
रायपसेणी में पाठ ।
ज्ञाताका पाठ स्वीकारी जग० ॥७॥
भद्रावती में दिलहर,
जौंहरी का जिन मन्दिर।
देव विमान अवतारी, जग० ॥८॥
आदि जिनवर बिराजे,
चारित्र भाव में राजे।
दर्शन पूजत भय टारी। जग० ॥९॥

१५ आदिनाथ स्तवन (मु० भादक तीर्थ)

(राग—सुसगी, ३ प्रभु मिल गये०)

जिनदा (३) जयकारा, आदि जिनन्द महाराया,
हो प्यारा, जिनन्दा जय कारा ॥ टेर ॥
कर्मों के (३) जंग में ही,
केसरि सा जय पाया ॥ हो० ॥१॥
भव्यो को (३) उपदेश से,
अमृत पान पिलाया ॥ हो० ॥२॥
पूजा से (३) पाप टारे,
इन्द्र पूजित जिन राया ॥ हो० ॥३॥
दर्शन से (३) ज्ञान देकर,
न्याय मारग उलमाया ॥ हो० ॥४॥
भादक में (३) आदिनाथ का,
सघ ने मंगल गाया ॥ हो० ॥५॥

१६ केशरीया आदिनाथ स्तवन (नागपुर)

राग—श्रीराग

जय केसरिया आदि जिणंद, जय ॥टेर॥

मरुदेवी का बाल सुहंकर,
इक्ष्वाकु कुल जलधिचन्द ॥ ज० ॥१॥

नाभिराय कुलकर कुल दीपक,
हुआ राज शासक अरविंद ॥ ज० ॥२॥

आपका जन्मोत्सव करते हैं,
दिक् कुमरी अमरी सुर वृंद ॥ ज० ॥३॥

युगला धर्म निवारण करके,
बोया धर्म कल्पतरु कन्द ॥ ज० ॥४॥

आदिम नृप आदिम तीर्थंकर,
तीर्थ प्रवर्तन हार जिनन्द ॥ ज० ॥५॥

पहिला योगी अमर फल भोगी,

मुक्तिकमल लीला मकरद ॥ ज० ॥६॥
तुमसम देव न और खलक में,
ज्यु तारा में शारद चन्द ॥ ज० ॥७॥
पञ्च कल्याणक चारित्र लीनो,
दर्शन शिर पद साधक इद ॥ ज० ॥८॥

---

१७ श्री संभवनाथ स्तवन (मु० अजमेर)
(राग—मेरे मौला बुलाले मदीने मुझे)
हमें संभवनाथ सनाथ करो,
प्रभो ! अर्ज हमारी दिल में धरो ॥ टेर ॥
सेना मात के लाल जी, जितारि नृप नदना।
अर्ज है यह दास की, कीजिए हम पर दया ॥
प्रभो ! सुनी पुकार, सहाय करो ॥ हमें० ॥१॥
चौरासी लक्ख योनि में, अनते चक्कर फिरे।

जन्म मृत्यु रोग से, बाल बाल दुःखी हुए ॥
अब उन्हीं भवों से, उद्धार करो ॥ हमें० ॥२॥
अग्नि जल भू वायु में, हरि में विकलेन्द्रि में ।
पशु पक्षि मनुष्य में, नारकी में देव में ॥
पाये दुःख बड़े, अब कर्म्म हरो ॥ हमें० ॥३॥
विना नाथ अनाथ जीव, सांढ़ से फिरते फिरे।
मस्ति में मिथ्यात्व की, कष्ट–गड्ढे में गिरे ॥
अब विरति औषध से, दुःख हरो ॥ हमें० ॥४॥
अजय मेरु शहर में, संघ के जिन-धाम में ।
विनति की आप से, ज्ञान न्याय आराम में ॥
प्रभो ! चारित्र दर्शन दान करो ॥ हमें० ॥५॥

---

१८ श्री सुमतिनाथ स्तवन (मु वेरावल बन्दर)

(राग भली आते शी बीमारी)

दादा सुमति जिनंद जय कारी,
करे सेव सुर नर नारी ॥ टेक ॥
गर्भ मा आवी, करी जग चावी, (२)
औत्पातिकी बुद्धि आपी,
मात मंगला राणी । दा० १
मेघराज जाया, सुर हुलराया, (२)
ताते पुत्रनुं नामज राख्युं,
"सुमति" मंगल कारी । दा० २
पिता परणावे, प्रभु राज्य पावे; (२)
त्रणसो धनुषनी देहडी छाजे,
स्वर्ण क्रातिना धारी । दा० ३
राज नगीना, शमरस भीना, (२)

दीक्षा लेवाने संचरिया,
भोग कर्म ने वारी । दा० ४
दीक्षा ने पामी, बनी सर्वज्ञानी (२)
थई तीर्थंकर विश्व जयंकर,
विचरे जिन जयकारी । दा० ५
रागने रोषा; काम ने क्रोधा; (२)
मद माया भय लोभ ए दोषा,
नाठा दूर अढ़ारी । दा० ६
ध्यान ने धारी, कर्म विदारी; (२)
शिव सुंदरी मंदिर पधारी,
मुक्ति पुरी शणगारी । दा० ७
वेरावल मंडन, भव भय भंजन (२)
दीपे दुख दलनार निरंजन,
दर्शन आनन्द कारी । दा० ८

१६ श्री सुमतिनाथ स्तवन (मु० दिल्ली)

(राज—कदमों की छाया में०)

सुमति प्रभु को वंदना, प्रत्यच भय भजना ॥ टेर॥

कोशल राया मेघरथ जाया,
मंगल सती नंदना ॥प्रत्यच०॥१॥

आयु चालीस लख पूरब की,
क्रौंच लछन रंजना ॥प्रत्यच०॥२॥

चार कल्याणक पुरी अयोध्या,
देह धराया कंचना ॥ प्रत्यच०॥३॥

सम्मेत गिरि में सिद्धि सहेल में,
काटे करम स्पदना ॥प्रत्यच०॥४॥

श्रावण द्वितीया बैशाख अष्टमी,
आठम मधु चंदना ॥प्रत्यच०॥५॥

चैतर ग्यारस नोम कल्याणक;

पांचों प्रपंच गंजना ॥प्रत्यक्ष०॥६॥
देहलीपुर में बाजार धूर में,
नौघरा मुख मंडना ॥प्रत्यक्ष०॥७॥
देवसूरि ने कीनी प्रतिष्ठा,
मूर्ति बनी है चंगना ॥प्रत्यक्ष०॥८॥
वीर संवत में निधि इषु जिन में,
च्यौन कल्याण शंसना ॥प्रत्यक्ष०॥९॥
चारित्र तान में दर्शन गान में,
कीनी कर्मों की भंजना ॥प्र०॥१०॥

---

२० श्री सुमतिनाथ स्तवन (मु. सर्धना यू. पी.)

श्री श्री सुमति जिनंद, जय हो ॥ टेर ॥
मेघराज के लाल नगीने,
मंगला मात के नंद, जय हो ।

तीनसौ धनुप का देह तुम्हारा,
इक्ष्वाकु कुल चद, जय हो ॥ श्री० ॥ १ ॥
साफ इन्साफ किया जननी ने,
इसी से सुमति कहंद, जय हो।
चार कल्याणक पुरी अयोध्या,
काटे कर्म के फद, जय हो ॥ श्री० ॥ २ ॥
सम्मेतगिरि में मोक्ष पधारे,
पाया आनन्द कन्द, जय हो।
सेन सूरि ने कीनी प्रतिष्ठा,
प्रभु आये आनंद, जय हो ॥ श्री० ॥३॥
सवत् उन्नीस सौ नव्वे में,
श्री सर्धना पावन्द, जय हो।
पार्श्व प्रभु के दीक्षा के दिन,
दर्शन भजन करद, जय हो ॥ श्री० ॥४॥

२१ श्री सुमतिनाथ स्तवन (मु० सर्धना)

नसीबा वर हम हैं, आज आनन्द बढैया,
श्री सुमति प्रभु का, पूजन भजन करैया ॥ टेर ॥
सावन सुदी में दूज तिथि को
च्यौन कल्याण कहैया ।
पुरी अयोध्या गर्भ में आये,
मंगला मात कन्हैया ॥ न० ॥१॥
वैशाख सुदी में अष्टमी के दिन,
जन्म कल्याण मनैया ।
सभी दिक्कुमरी सुरपति मिलकर,
ओच्छव भक्ति भरैया ॥ न० ॥२॥
आठम को वैशाख शुदी में,
दीक्षा धर्म ग्रनैया ।

चार महाव्रत धारे प्रभु ने,
तप जप योग धरैया ॥ न० ॥३॥
चैत शुदी में ग्यारस के दिन,
केवल ज्ञान वरैया ।
चारों संघ की कीनी प्रतिष्ठा,
बने भव तारण नैया ॥ न० ॥४॥
चैत सुदी में नोम दिन को,
सिद्ध बने सुख शैया ।
कुरु देश में सरधना में,
सुमति प्रवेश करैया ॥ न० ॥५॥
उन्नीस सौ नब्बे सन विक्रम,
दर्शन भक्ति भरैया ।
पार्श्वनाथ चारित्र में हमने,
पाया सफेद रुपया ॥ न० ॥६॥

उन्नीस सौ तेराणवे सन में,
फाल्गुन कृष्ण लहैया ।
एकादशी को प्रभु विराजे,
चारित्र दर्शन नैया ॥ न० ॥७॥

---

२२ श्री सुपार्श्वनाथ स्तवन (मु० भदैनी)

(राग—आशा गोड़ी—वा पदवी कब पाऊं)

श्री सुपास विराजे, तीरथपति ॥ टेर ॥
मूरत मनहर अमृत भीनी,
नैनां में ही सुराजे ॥ तीरथ. ॥१॥
जिन गुण पान से प्यास न छिपे,
हर्षित भया दिन आजे ॥ तीरथ. ॥२॥
थै थै आनन्द नाचत घर में,
ध्यान वाजिंतर बाजे ॥ तीरथ. ॥३॥

पुर भदैनी चार कल्याणक,
गगा तीर प छाजे ॥ तीरथ ॥४॥
श्री गुरु चारित्र पाठ कहते हैं,
दर्शन एक अवाजे ॥ तीरथ ॥५॥

---

२३ श्री चंद्रप्रभु स्तवन (मु० चन्द्रावती)

(राग—जिननी ने भजले मेरा दिल राजी)

चन्दा प्रभु, भजले मेरा दिल राजी ॥ टेर ॥
काल अनंता निरथा गुमाया,
हार गया सब बाजी ॥ चंदा० ॥१॥
मिला वीतराग जगत में दुर्लभ,
करले विषय में इतराजी ॥ चंदा० ॥२॥
सच्चे दिल मे करले कमाई,
भर ले जो हो अपना जी ॥ चंदा० ॥३॥

सच्चे स्वरूप में आप ही होते.
मिटे माया भ्रमनाजी ॥ चंदा० ॥४॥
जन्म के पीछे मरण लगा है,
सुधर सुधर अब पाजी ॥ चंदा० ॥५॥
चंद्रावती में चार कल्याणक
शांति करण प्रतिमाजी ॥ चंदा ॥६॥
चारित्र दर्शन यात्रा करने से,
हुई सफल सब बाजी ॥ चंदा ॥७॥

---

२४ श्री चंद्रप्रभु स्तवन (मालण)

(राग—आदिनाथ शत्रुंजे बुलाले मुझे)

प्यारा चंद्र प्रभुजी सहाय करो।
मारा भवो भवना सांव पाप हरो।।टेक।।
चन्द्र प्रभु ज्ञानी नरेश्वर,

महासेन ना नंदना ।
लक्ष्मणा रानी ना जाया,
चंद्रपुरीना मंडना ॥
धन्या न्यायनीतिनो भव्य झरो ॥ प्यारा ॥१॥
चंद्र लंछन मोह गंजन,
आयु दश लाख पूरवनुं ।
स्फटिक सम सूरत सलूणी,
दोढसौ धनुनुं तनुं ॥
दयानाथ दया भरी दृष्टि करो ॥ प्यारा ॥२॥
चंद्रपुरी मां चव्या जन्म्या,
चार व्रत पण आदर्यां ।
त्रण मासे नाग वृक्षे,
केवली-वनी विचर्यां ॥
मारा जीवनमां सुख शांति भरो ॥ प्यारा ॥३॥

आठमा जिन शिखरजी मां,
आठ कर्मों ने हरी ।
आठमी गतिमां पधार्या,
मुक्ति पटराणी वरी ॥
मने आशरो एक तुमारो खरों ॥ प्यारा. ॥४॥
गाम मालण धर्म पालन,
संघ भावित आतमा।
मंदिरे प्रभुजी जुहार्या.
चंद्र प्रभु परमातमा ॥
स्वामी चारित्रदर्शन भक्ति वरो ॥ प्यारा. ॥५॥

---

२५ श्री सुविधिनाथ स्तवन (मु० काकंदी)

(राग–श्री राग–मंगल पूजा सुरतरु कद)

जय जगनायक ? सुविधि जिनंद ! जय. ॥ टेर ॥

इक्ष्वाकु सुग्रीव नृप के नन्दन,
गुणधर रामा राणी नंद ॥ जय ॥१॥
श्वेत अनुपम काति के धारक
दीपत हैं ज्यूं शारद चन्द ॥ जय ॥२॥
मोह राज्य में क्रांति के कारक
गैर कानून के काटे फंद ॥ जय ॥३॥
कर्म सैन्य को चूर चूराकर,
धर्म रूप प्रकटाया अड ॥ जय ॥४॥
आत्म राज्य की झंडी उडाई,
पाया अपना पद महानन्द ॥ जय ॥५॥
चार कल्याणक पुर काकदी,
तीरथ पाया समकित कंद ॥ जय ॥६॥
चारित्रवाद में आतम दर्शन,
मत्र म्यगज का यही पसद ॥ जय ॥७॥

२६ श्री श्रेयांसनाथ स्तवन

(मु० नागपुर C. P.)

(राग—खमाच)

श्री जिन पूजन आनन्द कारी, श्री जिन. ॥टेर॥

इक्ष्वाकु कुल चंद,
सिंह. पुरी सुख कन्द ।
विष्णु वर्धन के सुनन्द,
विष्णु जननी आनन्द ॥
हुआ श्री श्रेयांस नाथ, जग जयकारी, श्री ॥१॥
कनक सी दीपे तन,
मोहे सुर सुरी मन ।
आनन्द के केलिवन,
सेवे जिन्हें गुणि जन ॥
चउ राशि लाख वर्ष, आयु के धारी, श्री ॥२॥

मालन 'माडव' पुरी,
आये लोग भूरि भूरि।
तप जप ध्यान धुरी,
सुमति साधु जी सूरि ॥
अजन शला का कीध, मगल कारी, श्री ॥३॥
नागपुर में विराजे,
सघ का मदिर छाजे।
जिनजी श्रेयास राजे,
सुरीला सीतार बाजे ॥
इंद्रपान एकतान, दर्शन की भारी, श्री ॥४॥

---

२७ श्री श्रेयांसनाथ स्तवन (मु॰ सिंहपुरी)

(राग—बलिहारी बलिहारी बलिहारी जगनाथ॰)

बलिहारी बलि॰ बलि॰ श्रेयासजी जिनन्दा,

दरशन दे कर हे भवि को तारियेजी ॥टेर॥
इक्ष्वाकु कुल के राजन्, विष्णु वर्धन कुल मंडन,
विष्णु राणी के श्रेष्ठ नंदा ॥ श्रे. ॥१॥
कनक समान काय, लाख चौरासी आय।
वर्ष लक्षण है अमंदा ॥ श्रे. ॥२॥
च्यवन जन्म व दीक्षा, केवल तत्व समीक्षा।
चारों कल्याण सुखकंदा ॥ श्रे. ॥३॥
सिंहपुरी श्रेयांस, पूरत है दास की आश।
चूरे जो राग द्वेष द्वंदा ॥ श्रे. ॥४॥
विदिशा में दो तले मंदिर, समोसरन् वीच में सुंदर।
फरके श्रेयांसनाथ झंडा ॥ श्रे. ॥५॥
चारित्र सेवक दर्शन, ज्ञान न्याय शुभ फरसन।
यात्रा से कटे भव फंदा ॥ श्रे. ॥६॥

२८ वासुपूज्य स्वामी स्तवन (मु० चंपापुरी)
(राग—माढँ, ताल—दादरा)

वासुपूज्यजी स्वामी, शिवपुर गामी,
तारन वाले देव।
पुरी चंपा के स्वामी, अंतरयामी,
तारन वाले देव॥ वासु ।टेर।
सिंदूर वर्णी देह धराई,
वसुराजा के नंद।
कर्म को काट के केवल पाया,
इक्ष्वाकु कुलचंद रे।
हुए जगत में नामी, जीव विश्रामी,
दुःख हरनारा देव रे॥ वासु. ॥१॥
समोसरण में आप बिराजे,
क्रोड़ों सुरों के साथ।

उपदेश से प्रतिबोध को करके,
हुए जगत के नाथ रे।
वाणी योजन गामी, मंगल कामी,
पाप विडारन देव रे॥ वासु. ॥२॥
अठारह दोष रहित कहाये,
तीर्थंकर श्रीकार।
चिद्घन ज्योति से ज्योति मिलाई,
सिद्ध बनें सुखकार रे।
हुए आप अनामी, मुक्ति के स्वामी,
अविनाशी अज देव रे॥ वासु.॥ ॥३॥
चंपापुरी में पांच कल्याणक,
वासु पूज्य जिणंद।
शांति विधायक, मोहक मूरत,
काटत है भव फंद रे।

दोय मदिरनामी, ज्यूं सुर धामी,
तीरथ नायक देव रे ॥ वासु ॥४॥
उन्नीस सौ सत्याशी पूप में,
शुक्र आठम का चद।
यात्रा सफल हुई मात्र मे दर्शन,
चारित्र सफल आनद।
नहीं मोह हरामी, निज को वामी,
जय जय श्री जिनदेव रे ॥ वासु ॥५॥

१६ श्री विमलनाथ स्तवन (तु० कपिलपुर)

विमल विमल महाराज, अरदास अवधारना ।टेर।
जिननी, हो शामल नदना,
कृतवर्मा नृप राज ॥ अर०॥१॥
जिननी, हो सुन्दर नदना,

तीन भुवन शिरताज ॥ अर० ॥२॥

जिनजी, हो कंपिलपुर में,

चार कल्याणक साज ॥ अर० ॥३॥

जिनजी, हो मूरत पादुका,

टारे करम की खाज ॥ अर० ॥४॥

जिनजी, हो अब मुझ दीजिये,

धर्म की देवी अवाज ॥ अर० ॥५॥

जिनजी, हो तीरथ पाया,

सफल भई घड़ी आज ॥ अर० ॥६॥

जिनजी, हो चारित्र शिष्य की,

अब रख दर्शन लाज ॥ अर० ॥७॥

---

३० श्री विमलनाथ स्तवन (मु० अजमेर)

(राग—अहिंसा का डंका आलम में)

श्री विमल जिनेश्वर जयकारा,
प्रभु जगत्रय पावन सुखकारा ॥ टेर ॥
कृत वर्मा नरपति के नंदन,
श्यामा सुत नृप सूकर लंछन ।
सुख छोड़के साधुपना धारा ॥ प्रभु० ॥१॥
अंतराय पंच को दूर किया,
मिथ्यात्व पंक को गाड़ दिया ।
अविरति अज्ञान को फटकारा ॥ प्रभु० ॥२॥
हैं हास्यादि को हटवाया,
निद्रा और काम को मिटवाया ।
और राग द्वेष मद को मारा ॥ प्रभु० ॥३॥
गुण गावें जो पंचिमपुर में

वनें तीर्थंकर ज्ञानी उर में ।
करे तीन भुवन में उपकारा ॥ प्रभु० ॥४॥
चोइस सौ वासठ संवत् में,
शशि पूनम श्रवण में सावण में ।
बैठाये प्रभु गुण उपचारा ॥ प्रभु० ॥५॥
अजमेर के वीच केसरगंज में,
श्री पल्लीवाल सित मन्दिर में ।
पूजा भक्ति करे संघ सारा ॥ प्रभु० ॥६॥
श्री मुक्ति कमल को स्वीकारा,
श्री ज्ञान न्याय को दिलधारा ।
जय चारित्र दर्शन आधारा ॥ प्रभु० ॥७॥

---

३१ श्री धर्मनाथ स्तवन (संस्कृत)

(राग—भैरवी)

वन्दध्वं वन्दध्वं श्रीमद्,
दिव्यनाकपति धर्मेन्द्रं ॥ चलन ॥
निरस्तसौख्य समृद्धि सुगेहं,
भग्न ध्वान्तं मद्रूपानं ।
घात्य घाति महा कर्म प्रपंच,
नाशयितार मद् मक्तं ॥ वं० ॥१॥
शस्यभिमन्न रीति भयादि,
भव्य प्रबोध दिनेश समं ।
सत् श्रेष्ठ सन्मानु श्रेष्ठ,
शीर्णांजन्य पन्थं ॥ वं० ॥२॥
पञ्चाभीर इति निभिन्ना,
यानि च भव पाशार्थ ।

वर्जित सर्व विकार मुनीन्द्रं,
प्राप्त परात्म पदं तारं ॥ वं० ॥३॥
सद्विलसन् गुण व्यूह गरिष्ठं,
दोषोन्मुक्तं चिद्रूपं ।
विश्वक् विश्व प्रकाश करं शं,
सद्भव्योभ्यो दातारं ॥ वं ॥४॥
अव्याबाधं मोक्षगतं तं,
नान्त स्थितिं वरकान्ति भरं ।
चारित्रानुग दर्शन सेवित;
पत्कमलं जन सौख्य करं ॥ वं० ॥५॥

---

३२ धर्मनाथ स्वामी स्त. (मु० रत्नपुरी नौराई)

(राग—पनिहारी)

जय जय धर्म जिनंदजी, म्हारा वाल्हाजी ।

जय जगत हितकार, वान्हाजी ॥ जय० ॥१॥
भानु नृप कुल दिन करा, म्हारा वान्हाजी ।
सुव्रता मात मल्हार, वान्हाजी ॥ जय० ॥२॥
आतम धर्म के दान से, म्हारा वान्हाजी ।
बने भव्य आधार, वान्हाजी ॥ जय० ॥३॥
ढाई अक्षर में भव्य को म्हारा वान्हाजी॥
तूं शिवपद दातार वान्हाजी ॥ जय० ॥४॥
धरम रहत भव में फिरे म्हारा वान्हाजी ।
तुम पद धर्म रा सार वान्हाजी ॥ जय० ॥५॥
रत्नपुरी नगरी में म्हारा वान्हाजी ।
वर्ती कल्याणक चार वान्हाजी ॥ जय० ॥६॥
प्रतिमा है थी नगर है म्हारा वान्हाजी ।
मार व दो आगार वान्हाजी ॥ जय० ॥७॥
दर्शन धर्म के मर्म से म्हारा वान्हाजी ।

पावे भव का पार वाल्हाजी ॥ जय० ॥८॥

---

३३ श्री शांतिनाथ स्तवन (मु० कलकत्ता)

(राग—यमन कल्याण, कालिंगडा की राह)

गावोजी गावो शांति जिनन्दा ॥ टेर ॥

जगपति अश्वसेन कुल चन्द,
चक्रवर्ति पंचम गुण वृन्द ।
तीर्थ विनायक अचिरानन्द,
ज्ञान विभाकर आनन्द कन्द ॥ गावोजी० ॥१॥

शांत दांत योगि गम्भीर,
भवजल तारण मोहन वीर ।
भव्य उद्धारक जिनपति धीर,
जो सेवक की टारे पीर ॥ गावोजी० ॥२॥

महावीर जिन मंडल आय,

दिल में भक्ति रंग प्रकटाय।
सभी मिलकर प्रभु के गुण गाय,
दर्शन मंगल खुशी मनाय ॥गावोजी० ॥३॥

---

२४ श्री शान्ति जिन स्तवन (बंगाला)
(राग—श्री राग)

स्वामि जिनराज के कोरि नोमोस्कार,
शांति जिनद के कोरि नोमोस्कार ॥टेर॥
विश्वोसेन देले शुनो सागोर,
ओचीरेर निन्दे शान्ति अवतार ॥ स्वामि० ॥१॥
दुःख संकट कोरिते दूरो जा के,
[illegible] ॥ स्वामि० ॥२॥
[illegible] आगुन,
[illegible] ॥ स्वामि० ॥३॥

कृपा दृष्टि कोरि आमा के देखून,
शिवोपोद् देन् प्रभु कोरून् उद्धार ॥आमि०॥४॥
सोफोल जोन्म होइलो आमादेर्,
दोर्शोन् कोरि पोडि चोरोन् तुमार॥आमि०॥५॥

---

३५ श्री शांतिनाथ स्तवन (मु० हस्तिनापुर)

(राग मेरे मौला बुला ले मदीने मुझे)

अब शांति जिनेश्वर शांति करो ॥टेर॥
चौराशी लख योनि फिरते,
आयो तुम शरणे प्रभु !
नागपुर नरेश स्वामी,
छोडु ना अब है विभु !!
मेरे शिर पर अपना हाथ धरो ॥ अब० ॥१॥
पांचवां चक्री नरेश्वर,

सोलवा जिन चन्द्रमा ।
ज्यूं कबूतर को बचाया,
वही फिर कीजे क्षमा ॥
शुभ नदिमें मेरा काज सरो ॥ अर० ॥२॥
च्यौन जन्म विराग दीना,
ज्ञान ये जगहित करा ।
हस्तिनापुर में हुए हैं,
चार कल्याणक जरा ॥
जरा है गजपुर में शांति परो ॥ अर० ॥३॥
तीर्थ धाम में दिव्य सुगन,
मूर्ति मनहारिणी ।
शांतिराट स्वामी प्रतिष्ठित,
सब रोग विदारिणी ॥
सभी भीर है मन भला करो ॥ अर० ॥४॥

दोनों तर्फ में कुंथु अर के,
चैत्य घर हैं दीपते ।
बार कल्याणक हुए यूं,
भव्य कर्म को झीपते ॥
प्रभु दर्शन दर्शन पाप हरो ॥ अब० ॥५॥

---

२६ श्री शांतिनाथ स्तवन (मु० हस्तिनापुर)

तीरथ मिला अब तारन् तरन् ॥ टेर ॥
हस्तापुर में तीनों प्रभु के,
बारह कल्याणक पाप हरन्॥ तीरथ० ॥१॥
वाचक शांति चंद्र प्रतिष्ठित,
शांति मूरत है शांति सदन ॥ तीरथ० ॥२॥
मूरत कुंथु अर प्रभु की,
करें जगतका आरत शमन ॥ तीरथ० ॥३॥

निसिहि का पहिली दूसरी मे,
तीनो प्रभुके स्मारक स्मरन ।।तीरथ० ।।४।।
टूंक ऋषभ में आदि के चरणा,
चक्री जिनंद के तीन चरन ।। तीरथ० ।।५।।
दर्शन पाया पाप कटाया,
तीरथ का क्या करू वर्णन ।।तीरथ० ।।६।।

---

३७ श्री कुंथुनाथ स्तवन (कु० हेमा)

(राग—म्हारा मन गम रंगे म्हारा मन)

म्हाना लागे मने कुंथु जिनन्द,
प्यारा लागे मने कुंथु जिनन्द ।।टेर।।
सुर नर वंदा, उपशम कंदा,
म्हारो भव भय टारो फंद ।।म्हा० ।।१।।
हस्तिनापुर धाम कल्याणक

मुक्ति वर्या सम्मेत गिरिंद ॥ वहा० ॥२॥
भूख्यूं बालक, जेम माता ने,
देखीने पामे परम आनन्द ॥ वहा० ॥३॥
ओगणीश से, नेवुं चौमासे,
बांद्या ऊंभा मां भाव अमंद ॥ वहा० ॥४॥
चारित्र पालन, दर्शन साधन,
खरे खरा छे कुंथु जिनंद ॥ वहां० ॥५॥

---

२८ श्री मल्लिनाथ स्वामी स्तवन

(मु० भोयणी)

(राग—काली कमली वाले तुम से लाखों प्रणाम)

भोयणी तीर्थना वासी प्रभुने क्रोड़ों प्रणाम ॥टेर॥
गरवी गुजराती भूमि मां,
धर्मधार चुंवाल भूमि मां ।

सुन्दर भोयणी गाम ॥ प्रभु ने० ॥१॥
पटेल केवलना खेतर मा,
त्रण हाथ कुवो गालंता।
प्रकटया ज्योति धाम ॥ प्रभुने० ॥२॥
सवत् ओगणीस से त्रीस वर्षे,
वैशाखी पूनम दिन हर्षे ।
दीठा मल्लि श्याम ॥ प्रभु ने० ॥३॥
वलद विना ने गाडे बेठा,
उटडो भोयणी सामे लेता।
आव्या अहिं अभिराम ॥ प्रभु ने० ॥४॥
आपे ढेडने दर्शन दीधा,
ठाकरडाना श्रीफल लीधा।
सार्या सहुना काम ॥ प्रभु ने० ॥५॥
नरोत्तम म्हेता नो भय टाल्यो,

काउसग्गजी नो पलटो पाड्यो।
दुखी जीव विश्राम ॥ प्रभु ने० ॥ ६ ॥
ओगणिश से तेतालिस टाणे,
महा शुदी दशमी ने वहाणें।
तख्तनशीन् थया श्याम ॥ प्रभु ने० ॥७॥
संवत् बाणुमां जिन भेट्या,
'मृगशर सुदि एकम' दुःख मेट्या,
बुध ज्येष्ठा आराम ॥ प्रभु ने० ॥८॥
मुक्ति कमलमां वास तमारा,
चारित्र दर्शन गुण आधारा।
प्रणामे लोक तमाम प्रभु ने० ॥ ९ ॥

२९ श्री नेमनाथ स्तवन (मु० शौरीपुर)

(राग—बोल बोल आदीश्वर बाबा कांई थारी मरजी रे)

बोल बोल नेमनाथजी, क्यों? मौन धराया रे,

मोहन कामणगारा रे ॥ टेर ॥

भमरी भमरी कर हुलराया,
जन्मोत्सव उलसाया रे ।
चौसठ सुरपति ने मेरु पर,
स्नान कराया रे ॥ मोहन० ॥१॥
यादव कुल में नाथ नरोत्तम,
सती शिवा का जाया रे ।
भूप समुद्र का लालजी जो,
श्याम सुहाया रे ॥ मोहन० ॥२॥
आयुधशाल में आय प्रभु ने,
अपना जोर बताया रे ।
शख धराया लछन में और,
शंख बजाया रे ॥ मोहन० ॥३॥
ब्याह करण को नेम नगीना,

राजुल तोरण आया रे।
पशुअन की पुकार से रथ,
मोड़ फिराया रे॥ मोहन० ॥४॥
गढ़ गिरनार में दीक्षा लीनी,
तप जप योग बढ़ाया रे।
कर्म काट के बने प्रभु जी,
श्री जिनराया रे ॥ मोहन० ॥५॥
विलपती राजुल करे विनती,
क्यूं मुज मन लुभाया रे।
मोह लगाकर आज नाथजी,
नेम रिसाया रे ॥ मोहन० ॥६॥
शिव सुन्दरी से नेह लगाकर,
मुज से कर न मिलाया रे।
शोच के राजुल ने भी नेम से,

संयम पाया रे ॥ मोहन० ॥७॥
धन्य युगल यह जग उपकारी,
ज्योत से ज्योत मिलाया रे।
राजुल नेम रमे शिवपुर में,
रंग सवाया रे ॥ मोहन० ॥ ८ ॥
शौरीपुर में नेम सदन में,
कल्याणक युग गाया रे।
कृष्ण मित्र को निरखत दर्शन,
शिर नमाया रे ॥ मोहन० ॥ ९ ॥

---

४० श्री नेम धुन स्तवन

(राग—गजल)

मुझे है काम नेमजी से, जगत रूठे तो रूठन दे।।टेर।
यदुकुल के तिलक प्यारा,

शिवासुत नेम जिन चंदा।
बड़े ब्रह्मचारी गुण वृन्दा,
उसे जी भरके देखन दे ॥ मुझे० ॥१॥
कई तो लोभ में लटके,
कई कई इश्क में भटके।
महा भोगों के सुखों को,
जगत् लूटे तो लूटन दे ॥ मुझे० ॥२॥
कपट मद दुःख इतराजी,
जगत है मोह की बाजी।
इसी से नाथ के दम में,
जीवन छूटे तो छूटन दे ॥ मुझे. ॥३॥
भरा बद्बो वपु नाशी,
प्रभू है सत् अविनाशी।
प्रभु के नाम को जपने,

शरीर लूटे तो लूटन दे ॥ मुझे ॥४॥
प्रभु के रूप मे हसती,
विषय विकार को कमती ।
प्रभु का मुख ना देखा,
नैना फूटे तो फूटन दे ॥ मुझे ॥५॥
अचल चारित्र से हरदम,
मुखी दर्शन गया विभ्रम ।
पुराणी कर्म की मटकी,
कभी फूटे तो फूटन दे ॥ मुझे ॥६॥

---

४१ श्री नेमनाथ स्तवन (गीरनारजी तीर्थ)
(राग—कुंवर कनैया बासरियां कहा भूल आये)
नेम ? मेरी नैया, मझधार ।
क्यों यों छोड आये ॥ टेर ॥

मनशा थी कि नेम लावेगा ।
गोरी राजुल लाडी ॥
यह मन्शा भी पुरी न कीनी ।
कहे शिवादे मैया ॥ मझ० ॥१॥
दुलहा बनकर आप पधारे ।
मुझे पगली बनाई ॥
राजूल रोती करे विनति ।
रथ को क्यों मोडैया ॥ मझ० ॥२॥
अपना यादव कुल है नामी ।
भागे कोई न भाई ॥
तुं दुल्हण को भी छुड़ आया ।
कहे कहान कनैया ॥ मझ० ॥३॥
सैन्य बचाया, पशु बचाये ।
आप बड़े उपकारी ॥

द्वारिका की प्रजा पुकारे ।
गढ गिरनार चढैया ॥ मफ० ॥४॥
नेमजी राजूल की जोगी तो ।
मुक्ति महल में मिलैया ॥
आपके चारित्र दर्शन ज्ञान हैं।
इनके आप रचैया ॥ मफ० ॥५॥

---

४२ नेमनाथ

(राग—कुंवर कनैया, यामरियाँ कहा भूल आये)

जाओ सखि जाओ ।
प्रभु नेम को बुलाओ ॥टेर॥
यादव चंदा शिवा नन्दा।
उन्हीं को मनाओ ॥
विरह ज्वाला जलती बाला।

प्रेम की प्याली पिलाओ ॥ कैसे भी बचाओ ॥जा. १॥
पशुअन के तो प्राण बचाओ ।
मनुष्य को रीझाओ ॥
मनुष्य के लिये लापरवा ।
कैसी दया जताओ ॥ इंसाफ कराओ ॥ जा० ॥२॥
आप जगत के नाथ बने पर ।
राजूल को ही सताओ ॥
व्याह को आप पधारे नहीं तो ।
दीक्षा पाठ पढ़ाओ ॥ अब शिष्या बनाओ जा.॥३॥
नेमजी प्यारे दीक्षा देकर ।
राजूल राग हटायो ॥
नेम राजूल की जोरी बनते ।
आनंद हर्ष मनाओ ॥ बाजें भी बजाओ ॥ जा.॥४॥
चारित्र दर्शन ज्ञान विमान से ।

मुक्ति शहर ले जाओ ॥
मादि अनंत आनंद में लीना।
जीवन भेद हटाओ॥ जीवन से मिलाओ जा ॥५॥

---

८३ श्री नेमिनाथ स्तवन (गिरनार)

(राग—गजल—कव्वाली)

सखि जल्दी बतादे ने ।
बसे छे क्या श्री गिरनारी ॥ टेर ॥
जोई में द्वारिका पुरी ।
बनी पागल भमी नगरी ॥
जीवन देरज्या नहीं क्या पण।
सतावो ना सखी मारी॥ स० ॥१॥
हृदय मा नेमने धरती ।
घणे लगा रे' ...

स्मरण कल्लोल जल भरती।
छवी ए नेमनी प्यारी ॥स. ॥२॥
अरे मारा सवि पायो।
समय एक साथमां उठ्या ॥
दिनो आडा थई बेठा।
करे नेमे ग्रही नांही ॥ स. ॥३॥
अहा शुद्ध प्रेम मूर्तिनी।
चरण रज नित्य हुं चाहुं ॥
भले योगी न कहेवाऊं।
पण न टेको तजुं मारी ॥ स. ॥४॥
करोड़ों देवमां बेठा।
जीवोमां प्रेम रेडे छे ॥
सखि ! चारित्र गुण योगे।
सफल दर्शद चमनकारी ॥ स. ॥५॥

४४ श्री नेमनाथ स्तवन

(राग—कानुडो नजाणे मारी प्रीत)

नेमजी न जाणे मारी प्रीत ।
शी कहु' दिलनी वातोरे नेम ॥ टेर ॥
आठ भवोनी अविचल प्रीति ।
छेदी फरेले चित्त, छोडे सघलो नातारे ॥ ने ॥१॥
राजूलनारी, करी दुःखियारी ।
शी आ जादव रीत नीतिनें ठेछे लातोरे ॥ ने २॥
जननी जनक थी चाले उलटो ।
तेनी शी परतीत, करे छे लोको वातोरे ॥ ने ३॥
रागिणीनी सामु' न जुओ ।
विरागण थी प्रीत, भणयाछे ए कई घातोरे ॥ने ४॥
नेमिजी विण आ जीवन कपरु ।
पीडे मोह स्वचित्त दिलडु करे कल्पातोरे ने ५॥

व्रत कंकण थी, आज मनावी ।
हैये राखी प्रीत, हरख न दिलमां मातोरे।। ने. ६।।
मुक्ति भुवननां कमल गंधनी ।
ललचावी मम चित्त, करे छे नवली वातोरे ने.।।७।।
चारित्र दर्शन रंग रंगिला ।
नेमनी जोड़ी सुस्थित, विलसता दिनने रातोरे ने. ८।।

---

४५ श्री नेमनाथ स्तवन (मु० गिरनार)

देखे नेमि जिणंद नैनां सफल भई ।। टेर ।।
व्याह करण को नेम पधारे,
संकेत करके गये गिरनारे ।
जाकर वसे एकन्त ।। नैनां० ।। १ ।।
तीन लोक का राज जमाया,
विश्व शांति कानून फरमाया ।

सेवक हैं सुर इन्द्र ॥ नैना० ॥२॥
समोसरन में नेम नगीने,
बैठे हैं सुख चैन में लीने।
रैवत गिरि कानन ॥ नैना ॥३॥
भेद को पाकर नेम के लारे,
राजुल जाय मिली गिरनारे।
नैना से नैना मिलन ॥ नैना० ॥४॥
उपशम प्रेम में देह निखारा,
दुविधा नासी भया उजियारा।
डारा जादु मुनिंद ॥ नैना ॥५॥
नेम अनुपम राजुल गोरी,
ऐसी बनी एक मेरु की जोरी।
मिली भया आनन्द ॥ नैना ॥६॥
शिव मंदिर में दोनों पधारे,

चारित्र दर्शन प्रेमी प्यारे।
पाया परम आनन्द ॥ नैनां. ॥ ७ ॥

---

४६ श्री पार्श्वनाथ स्तवन (मु० शंखेश्वर)

(राग—मालकोष, ताल—त्रिताल)

शंखेश नाथ ! मुझ पकड़ हाथ ॥ टेर ॥
देव नगीना अमीरस भीना,
नजर करो वनु आज सनाथ ॥ शंखेश० ॥१॥
रमकडुं समकित संयम सुखड़ी,
सामे वतावी शु खेंचो नाथ ! ॥ शंखेश० ॥२॥
सैन्य जरा निवारी ए रीत,
वारो जन्म मरण संगाथ ॥ शंखेश० ॥३॥
जेवो तेवो पण मानो पोतानो,
कर्म जंग मां आपो साथ ॥ शंखेश० ॥४॥

चारित्र दर्शन शख वगाड़ो,
विजय अमारो आज नाथ ॥ शंखेश० ॥५॥

---

४७ श्रीपार्श्वनाथ स्तवन (मु० वेरावल बंदर)

(राग—थई प्रेमवश पातलिया)

प्रभु पार्श्वजीनन्द जयकारी,
चितामणि चिंता विदारी रे ॥ टेक ॥
चेतन रफल्यो काल अनादि,
पुण्य दशा हवे जागी।
जिनराज मल्या सोभागी,
प्रभु तुज आणा दिलधारी रे ॥प्र १ ॥
कल्पतरु फाल्यो घरमाहीं,
आकनी प्रीति छांडी।
चिन्तामणि रत्न ने पामी,

छोड़ी में काचनी यारी रे ॥ प्र. २ ॥
बेसी चीर समुद्र ने कांठे,
खणाये कूप शु काजे ।
दिलमां श्री जिनजी विराजे,
शु करशे देव हजारी रे ॥ प्र. ३ ॥
अवर देवनी आश ने छंड़ी,
मोह ममत्व ने खंडी ।
पामु समकित जिन वंदी,
ए आश हृदय मां धारी रे ॥ प्र. ४ ॥
पारस चिन्तामणी शिवगामी,
जगत जीव विशरामी ।
वेरावल मंडन स्वामी,
मूर्ति दर्शन शिवकारी रे ॥ प्र. ५ ॥

---

४८ श्री पार्श्वनाथ स्तवन

(मु० नगर शेठ का वडा, अहमदाबाद)

(राग—गांधी का आज हिंद में अहसान हो गया)

श्रीपार्श्व प्यारे विश्व में,
मशहूर हो गये ।
विजेता मोह मल्ल के,
बहादुर हो गये ॥ टेर ॥
शचीश सूर्य चदा,
प्रभु के विख्यात वदा ।
दिनों के नाथ लोग में,
मशहूर हो गये ॥ श्री पार्श्व ॥१॥
असुर नरेश देवा,
करें आपकी ही सेवा ।
भक्तों के पाप टार के,

मशहूर हो गये ॥ श्री पार्श्व. ॥२॥

सर्वज्ञ सर्वदृष्टा,
जिनेन्द्र धर्म सृष्टा।
आलम में तत्व आपके,
मशहूर हो गये ॥ श्री पार्श्व. ॥३॥

श्री राजनग्र स्वामी,
देखे जिनेन्द्र नामी।
शेठों के धर्म बाग में,
मशहूर हो गये ॥ श्री पार्श्व. ॥४॥

तुम्हीं प्रभु हमारा,
चारित्र के आधारा।
दर्शन त्रिपुटी योग में,
मशहूर हो गये ॥ श्री पार्श्व० ॥ ५ ॥

---

४६ श्री गोड़ी पार्श्वनाथ स्तवन

(मु० अजमेर)

(राग–होरी–वीर प्रभु मन भायो,जी मेरे भव दुख टारो)

पर्श्व को ध्यान लगायो जी,
पायो नाथ सुदर्शन, पार्श्व. ॥टेर॥
अश्वसेन राजा कुल तिलक,
वामा देवी को जायो ।
तीनों भुवन में प्रगट प्रतापी,
पुरुषादानी कहायो जी ॥ पायो. ॥१॥
च्यवन जन्म दीक्षा और केवल,
शहर बनारस ठायो ।
समोसरन देवो ने कीना,
पुण्य विपाक मनायो जी ॥ पा ॥२॥
प्रभु ने कल्याण पथ बतायो,

आतम धर्म सुनायो ।
समेत शिखर गिरि पर से प्रभुजी,
शिव भुवन में सिधायो जी ।। पा. ।।३।।
अजयमेरु में तपगच्छ मन्दिर,
गौड़ी पार्श्व सुहायो ।
पारस-विमल-चौमुख वीर जी,
सुव्रत-पारस भायो जी ।। पा. ।।४।।
संवत् चोवीस सौ बासठ में,
चारित्र दर्शन आयो ।
ज्ञान न्याय सह भजन भक्ति में,
ध्यान तरंग बढ़ायो जी ।। पा. ।।५।।

---

५० श्री पार्श्वनाथ स्तवन (मु० मथुरा)

(राग—श्याम कल्याण)

आज है बधाई मथुरा, पार्श्व भुवन में ॥टेर॥
मंदिर सुन्दर यहां बनवाया,
शासन सूरि वचन में ॥ आ ॥१॥
पार्श्व जिनेश्वर यहां पधारे,
समवसरे थे कानन में ॥ आ ॥२॥
और बनाया पार्श्व का तीरथ,
कल्पद्रुम ध्यानन में ॥ आ ॥३॥
आगरा संघ ने यहा पर कीना,
जीर्णोद्धार सदन में ॥ आ ॥४॥
कीनी प्रतिष्ठा पार्श्व प्रभु की,
हर्षित होकर मन में ॥ आ ॥५॥
वीर के मन में मद इपु जिन में,

मधु शुदि सातम दिन में ॥ आ. ॥६॥
पूजन आरति अंगिया से सेवे,
ताज श्री देव देवन में ॥ आ. ॥७॥
शांति महोत्सव आनन्द मंगल,
धन्य वो दिन जीवन में ॥ आ. ॥८॥
चारित्र दर्शन जिन गुण गावे,
शिर झुकावे चरनन में,

---

५१ श्री सुपार्श्वनाथ (वगैरः) (मु० मथुरा)

(राग—अब तो जिन वाणी सुनाई जायगी)

मथुरापुरी में जिन तीर्थ नमो ॥ टेर ॥
सुपास का स्तूप, मेरु स्वरूप, कुवेरा देवी माना।
जिनेस्वर पास, पधारे खास, यहाँ सुरनाथ ठाना॥
कल्पद्रुम नाम, प्रभु का धाम, तीरथ् था यूं पुराना।

मुनिगण साथ, बडे सूरि राज, विचरते थे अमान ॥
ऐसी पुनीत भूमि में राग धमो ॥ मथुरा० ॥१॥
जम्बू गणइंद प्रभवादि वृंद, विचरते पुर आये।
दीना उपदेश बनाया गणेश, जम्बूने मोक्ष पाये ॥
पाच शत धार सत्ताईस लार, यहा स्तूप थे बनाये।
जगद्गुरु धीर सूरीश्वर हीर, उन्हीके दर्श आये ॥
भव तारण स्थान में मोह दमो ॥मथुरा० ॥२॥
आगम के पाठ, लिखाये अथाह,
स्कंदिल मुनिपति ने ।
चौरासी बाग, फलगापुर पास,
जिनके हैं नगीने ॥
प्रतिष्ठा चंग, रहा दिल रंग, प्रभुके चरण चीने।
प्रभु दर्शन करे मर्मी वृंद, छिन में पाप छीने ॥
सदा दर्शन निज गुण धार रमो ॥ मथुरा० ॥३॥

५२ चिंतामणि पार्श्वनाथ स्त. (मु. आगरा)

(राग—छोटी छोटी बुनिया रे)

देव चिंतामणि पास, स्वीकारो मेरी वंदना ॥ टेर ॥
पूरब देश में आगरा शहर में,
रोशन मोहल्ला उजास ॥ स्वी. ॥१॥
पार्श्व प्रभु का धाम सलूना,
मानु शांति निवास ॥ स्वी. ॥२॥
शीतल गोड़िचा शांति चउमुख,
अन्दुणी वेदिका जास ॥ स्वी. ॥३॥
यशब् की मूरत मोहनी सूरत,
सात फणों के प्रकाश ॥ स्वी. ॥४॥
जगद् गुरु ने तीरथ ठाना,
बैठाये गुण राश ॥ स्वी. ॥५॥
चिंतित पूरे चिंता चूरे;

सफल करे मन आश ॥ स्वी ॥६॥
पारस ज्ञानी ओर न नामी,
दास करे अरदास ॥ स्वी. ॥७॥
वीर के सन में मद् व्रत जिन में,
कीना दर्शन चउमास ॥ स्वी ॥८॥
चारित्र महल में भक्ति की स्हेल में,
दर्शन ज्ञान विलास ॥ स्वी ॥९॥

---

५३ चिंतामणि पार्श्वनाथ स्त. (मु आगरा)

(राग—खिदमत मुल्क म जो कि मर जायगे
वो अमर नाम दुनिया मे कर जायगे)

मेरा पार्श्व प्रभु ! मेरा पार्श्व प्रभु !
सलुना श्री चिंतामणि पार्श्व प्रभु ॥टेर॥
तुमने राग द्वेष को दूर किया,

क्रोध लोभ माया मद मोड़े प्रभु ! ।। मे. ।।१।।
अश्वसेन का नंदन काशीपति,
रानी वामादेवी का दुल्हारा प्रभु ! मे. ।।२।।
तुंही है जग्त में एक नाथ बड़ा,
इसी से तेरे चर्ण में आया प्रभु ! मे. ।।३।।
तुंही जीवन में तेरा लव तन में,
यही है मन में तुंही मेरा प्रभु ! मे. ।।४।।
आग्रा शहर के प्राचीन मंदिर में,
विराजो सभी संघ के दिल में प्रभु ! मे. ।।५।।
तुंही मुक्ति पुरी का सीतारा विभु,
श्री चारित्र दर्शन का आधारा प्रभु ! मे. ।।६।।

---

५४ भजन (मु० आगरा)

(खिम्मते मुल्क में जो कि मर जायंगे)

मेरे प्यारे औ दोस्तो ? मंदिर जायगे,
जायंगे जायंगे जायंगे जायगे ॥ टेर ॥
वहा नाथ विराजे सर्वज्ञ प्रभु,
उनका हरदम मिल कर गुण गायगे ॥१॥
तीनों लोगो के हैं रखवाले प्रभु,
उनकी पूजा मनाकर खुशी पायगे ॥२॥
मत झूठ बोलो मत गुस्सा करो,
ऐसी पाक बातें सिखकर ले आयंगे ॥३॥
टुटी जाय न माला कभी प्रेम की,
इन्ही भावों को दिल में जमा आयंगे ॥४॥
आप मानो न मानो खुशी आपकी,
दोस्तानी में खुश कर तुम्को ले जायगे ॥५॥

सब्को बाल हित कारिणी सभा कहे,
उनके दर्शन से पावन् होकर आयंगे ॥६॥

---

५५ श्री पार्श्वनाथ स्तवन (मु० भेलुपुर)

(आश --मैं कीनो नहीं तो बिन०, ताल-त्रिताल)

मेरो प्रभु पारसनाथ आधार ॥ टेर ॥
तुम सम देव आलम में न देखा,
आत्म शांति सुखकार ॥ मेरो० ॥१॥
श्री चरन में मुझ मन लीनो,
ज्यूं कोयल सहकार ॥ मेरो० ॥२॥
पापी को अपना पद दीजे,
पारस लोह विचार ॥ मेरो० ॥३॥
नव मंदिर भूषित काशी में,
भेलुपुर शिणगार ॥ मेरो० ॥४॥

सवत् छयाशी फाग की पाचम,
शुक्र कल्याणक चार ॥ मेरो० ॥५॥
दर्शन ज्ञान व न्याय को उत्तम,
चारित्र फल दातार ॥ मेरो० ॥६॥

---

५६ श्री पार्श्वनाथ स्तवन (मु० मधुवन)

(राग—हिंडोल, श्याम झूले हिंडोला कानन में)

झूले श्यान हिंडोला मधुवन में,
पारसनाथ सावरिया मधुनन मे ॥ टेर ॥
अश्वसेन वंश चंद, वामा राणी कुक्षि नद ।
मरगत काति है तन में ॥ झूले० ॥ १ ॥
पार्श्व साई तीर्थनाथ, साधु तीस तीन साथ ।
शुक्र बढाया कानन में ॥ झूले० ॥ २ ॥
सम्मेत शिखर गिरिंद, गये दूर कर्म वृन्द ।

ज्योति चमक है नैनन में ॥ झूले० ॥ ३ ॥
मेघडंबरी अनूप, उच्च गिरि एक टूंक ।
योग रुकाया निज मन में ॥ झूले० ॥ ४ ॥
भये संग में ही सिद्ध, मोक्ष गामी शुद्ध बुद्ध ।
शैलेशी के साधन में ॥ झूले० ॥ ५ ॥
श्री चारित्र तीर्थ धूर, बढे ज्ञान-न्याय पूर ।
दर्शन अपने भुवन में ॥ झूले ॥ ६ ॥

---

५७ श्री पार्श्वनाथ स्तवन (मु० मधुवन)

(राग--हिंडोल--एक ताल से तीनों पद)

धरो ध्यान को सजनां ! मधुवन में,
पारसनाथ सांवरिया का मन में ॥ टेर ॥
श्याम गई भई भौर, पर्म हर्ष ठौर ठौर ।
चढ़े ध्यान की झकोर, मधुवन में ॥ धरो० ॥ १ ॥

अंगूर अशोक आम, आंवला अनार जाम ।
नासपति पुष्प धाम, मधुवन में ॥ धरो० ॥२॥
निंब हरडे तमाल, कोला चाय पान ताल ।
औषधि हरि कमाल, मधुवन में ॥ धरो० ॥३॥
पत्र पुष्प ठाठ ठाठ, पानी भरे कुंड घाट ।
ठेर ठेर शांति पाठ, मधुनन में ॥ धरो० ॥४॥
कोकिला कुहुरु शोर, उडते फिरे चकोर ।
नाचते रंगीले मोर, मधुनन में ॥ धरो० ॥५॥
चले समीर मंद मंद, खिला है शिशिर चंद ।
नहीं द्वंद शोक धंद, मधुवन में ॥ धरो० ॥६॥
भुवन उत्तंग बार, गणधर जिन धार ।
भोमियाजी लार लार, मधुवन में॥ धरो० ॥७॥
चारित्र निर्मेक सार, तीर्थ आप ही श्रीकार ।
दर्शन विशुद्धि धार, मधुवन में ॥ धरो ॥८॥

५० श्री पार्श्वनाथ स्तवन (सम्मेतशिखरजी)

(राग – टोपी वालानों टोली उतर्यां)

सम्मेत शिखर पार्श्व प्रभुजी बैठा ध्यानमां ।
अति ऊंची मनोहर भेखड़ो,
ऊंचा गगन समां शिखरमां जाय रे ।।सं. ।।१।।
उठी घेरी ईशानमां बादली,
ली लां, तरुवर मां पलटा पूराय रे ।।स. ।।२।।
चमकारे जबुके बिजली,
नरी, बरफ सभी सफेदी सजाय रे ।। स. ।।३।।
मंद मंद पवननी लहेरमां,
रूड़ा, मयूर तणां टहूका सूणाय रे ।।स.।।४।।
प्रभु चढ्या शैलशी श्रेणिये,
दिशा, सुगन्ध धरी अति मलकायरे।।स.।।५।।
शुदि श्रावण मासनी अष्टमी,

सोहे, धवलशशी विशाखा नी मांय रे ॥ स ॥६॥
चिद्रूप थया प्रभु पासजी,
बीजा, त्रण्य त्रीश मुनिवर शिव जायरे ॥ स ॥७॥
प्रभु पार्श्वनुं मन्दिर त्या वन्दुं,
सोहे, सम्मेत शिखर मोटो गिरि रायरे ॥ स ॥८॥
शुभ चारित्र दर्शन साधवा,
प्रेमे नमन करूं जिनवरना पाय रे ॥ स. ॥९॥

---

५६ सम्मेत शिखरगिरि चैत्य परिपाटी

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमत जिनेन्द्राय जलादिक यजा महे स्वाहा

(पूजा करने वाले, प्रत्येक टूंक में, सामान्य तरह तीर्थंकरो का दोहा कह कर इस मंत्र पाठ को बोल कर पूजा करें)।

॥ दोहे ॥

गौतम गणधर गुण निला, अमृत लब्धि प्रधान ।
गिरिवैभारे शिव वर्या, करो जगत कल्याण ॥१॥
कुंथुनाथ कुगति हरे, स्थापक शिव पद स्थान ।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२॥
ऋषभ चंद्रानन वारिषेण, वर्धमान भगवान ।
चारे शाश्वत जिनवरा, करो० ॥३॥४॥
नमिनाथ नीति वदे, दुःख दारिद्र कृपाण ।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥५॥
अरति हरता अर प्रभु, अद्भुत धाम प्रमाण ।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥६॥
कर्म अरिदल मेटता, मल्लि मल्ल प्रधान ।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥७॥
श्री श्रेयांस जिनेश्वरा, श्रेय करे जग भाण ।

सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥८॥
सुविधि नाथ सुविधि कहें, शिव साधन विधि ज्ञान।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥९॥
पद्म प्रभु निर्लेप छे, लोकमा पद्म समान।
सम्मेत शिखरे शिव-वर्या, करो० ॥१०॥
मुनि सुव्रत व्रत सारथी, करता मोक्ष-प्रयाण।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥११॥
चन्द्र प्रभु शशि लंछना, चन्द्र क्रांति समान।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥१२॥
आदि राज आदि प्रभु, ऋषभ देव भगवान।
अष्टापद गिरि शिव वर्या, करो ॥१३॥
चार अनंते संवर्या, देव अनन्त महान।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥१४॥
शीतल प्रभु शीतल गुणा, आपे अमृत पान।

सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥१५॥
सम्भव शमरस सागरा, नायक समता खाण।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥१६॥
वासव पूजित वासुपूज्य, धारक केवल ज्ञान ।
चंपा नगरे शिव वर्या, करो० ॥१७॥
अभिनन्दन आनन्द रूप, सप्त भंग नय वाण ।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥१८॥
पार्श्वनाथ पारस समा, सर्व ख्यात गुणवान !
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥१९॥
शुभ गण धर प्रभु पार्श्वना,शुभ देशक शुभ तान ।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२०॥
धर्म प्ररूपे धर्म ने, भाव शील तप दान ।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या करो० ॥२१॥
ऋषभ चन्द्रानन वारिषेण, वर्धमान भगवान ।

चारे शाश्वत जिनवरा, करो० ॥२२-२३॥
पाचमा जिन सुमति प्रभु,सुमति दायक जाण।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२४॥
शातिनाथ शाति करे, सुख सौभाग्य सुकान।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२५॥
वर्धमान महावीर जी, शासन ना सुलतान।
पावापुरीमां शिव वर्या, करो० ॥२६॥
देव सुपार्श्व सुपार्श्व छे, सेवे देव सुजाण।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२७॥
निमल विमलता शी कहु, मोक्ष मार्ग सधान।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२८॥
अजितनाथ जग मा अजित, केवल ज्ञान कमान।
सम्मेत शिखरे शिववर्या, करो० ॥२९॥
नेमि चक्र सम नेमजी, मोडे मोहनु मान।

गढ़ गिरनारे शिव वर्या, करो० ॥३०॥
पार्श्वनाथ पारस समा, तीर्थ पति गुणवान ।
सम्मेत शिखरे शिव वर्या ॥ करो० ॥३१॥

३-४-२२-२३ का संस्कृत पाठ

वंदे शाश्वत मृषभं, चंद्रानन जिनेश्वरं ।
वारिषेणं वर्धमानं, इति शश्वत् चतुष्टयं ॥

और और तीर्थकर के लिये सकलार्हत् के संस्कृत श्लोक कहना चाहिये ।

नोटः—हमने विक्रम सम्वत् १६८६ चैत्र सुदी १३ शुक्रवार के दिन शिखरजी तीर्थ की पहिली यात्रा की । बारस की शाम को गंधर्व नाला (भाता-तलाटी) की धर्मशाला मे जाकर रात रहे और प्रातःकाल ऊपर जाकर चैत्य

जुहारे। उसमें नीचे लिखे अनुसार समय लगा।

स्थान,	टूक पहुचने का समय, [घ० मि०]	विशेष
गधर्वनाला धर्म०	(५-३५)	प्रात काल विहार किया
सीतानाला	६-०	
गौतम स्वामी	६-४०	चेत्य १५ मिनिट
मुनि सुव्रत०	७-५	
अनतनाथ	७-१२	
चद्र प्रभु	७-३५	चेत्य (पीछे लौटे)
जल मदिर	८-३०	चेत्य ४० मिनिट
धर्मनाथ	९-३२	
महावीर स्वामी	९-४०	चेत्य ५ मिनिट
पार्श्वनाथ	१०-१५	
गंधर्वनाला धर्म	११-३०	

---

६० श्री पार्श्वनाथ स्तवन (मु० सम्मेत शिखर)

(राग—धन्य भाग्य अमारे आंगणे आव्या)

धन्य भाग्य गिरिवर,
सम्मेत शिखर की यात्रा कीनी सार।
मिला है आज पुण्य से,
मनुष्य जीवन का सार ॥ टेर ॥
जबू द्वीप में भारतवर्ष में,
आर्य क्षेत्र शुभकार।
दुःषम, काल में सम्मेत शिखर सम,
ओर न तीरथ धार ॥ मिला० ॥१॥
वीश जिनेश्वर ने इस गिरि पर,
पाया पद श्रीकार।
इसी से, शिखरजी तीन भुवन में,
सर्व तीरथ सिरदार ॥ मिला० ॥२॥

आत्म कल्याण के स्थान शिनंकर,
सेवत हैं नर नार।
भूमि, फरम है शाति दायक,
जिन मंदिर मनहार॥ मिला० ॥३॥
गौतम गुरुजी कुंथु चंद्रानन,
ऋषभानन नमि धार।
अर मल्लि, श्री श्रेयाम सुविधि,
पद्म प्रभु शिनकार॥ मिला० ॥४॥
मूनि सुमतजी चंदा प्रभुजी,
ऋषभ अनंत उदार।
शीतल, सभव वासुपूज्यजी,
अभिनदन दिलहार॥ मिला० ॥५॥
जल मदिर में पारस प्रतिमा,
गौतम शुभ गणधार।

श्रीधर्म, शाश्वता वर्धमानजी,
वारिषेण जय कार ॥ मिला० ॥६॥
सुमति शांति महावीरजी,
सुपार्श्व विमल सार ।
अजित, नेम श्री पार्श्वनाथ हैं,
सम्मेत शिखर शिंगार ॥ मिला० ॥७॥
पारस गिरि में पार्श्वनाथजी,
वंछित फल दातार ।
तृप्ति, न होती है दर्शन की,
आनंद हर्ष अपार ॥ मिला० ॥८॥
धन्य दिवस है आज हमारा,
धन्य घड़ी धन्य वार ।
श्री पार्श्वनाथ का ध्यान लगाया,
साधक पद आधार ॥ मिला० ॥९॥

वीर सिद्धि मे दिक्कुमरी जिन,
चैत्री पूनम रवि वार।
चारित्र, दर्शन ज्ञान न्याय का,
हुआ सफल अवतार ॥मिला०॥१०॥

---

६१ श्री पार्श्वनाथ स्तवन (मु० पटना)
(राग—खमाच)

श्री जिन गुरु के दर्शन करना,
पाप का होत बिखरना ॥ टेर ॥
श्रेणिक का पोता जात, उदायी चंपा का नाथ,
बसाये गंगा के पास, पाटलीपुर विख्यात।
हेम सूरिसर का वरना ॥ श्री० ॥१॥
यहां दीपत है उदार, पार्श्वजी सफेद सार,
और कृष्ण पार्श्व धार, पुराणे प्रभु श्रीकार।

नमन से करम को हरना ॥ श्री० ॥२॥
नेनां इषु दोष विक्रम, पूष शुक्ल भृगु पांचम,
उद्धारक है ज्ञानचंद. वर तपगच्छ संघ।
और चंदा जिन को समरना ॥ श्री० ॥३॥
कोशा वेश्या बोधकारी, स्थूलिभद्र ब्रह्मचारी,
पांच महाव्रत धारी गुरु पादुका श्रीकारी।
अमृत धरम सूरि शरना ॥ श्री० ॥४॥
शूलि का हुआ सिंहासन, श्रेष्ठिपति श्री सुदर्शन,
तपा श्रावक गुलाबचंदन, ठवे चरणां सुसज्जन।
दरशन हुए ऐसा मरना ॥ श्री० ॥५॥

६२ श्री पार्श्वनाथ महावीर स्तवन

(मु० बिहार शरीफ)

(राग—विना प्रभु पास के दर्शन, कव्वाली)

करे वीतराग के दर्शन,

यही वीतराग होता है ॥ टेर ॥

जहा आदर्श है अनुपम,
जहा सूरत मन मोहन ।
जहां शाति बसे भारी,
यही प्रभु धाम है उत्तम ॥ करे. ॥१॥
करे पारस मणि का संग,
धरे लोहा कनक का रंग ।
वही जिनराज होता है,
करे जिनराज का जो संग ॥ करे ॥२॥
शहर निहार के बिच में,
जिनालय युग्म दिलहर है ।
पारस जिन के महावीर के,
अति आनंद के घर हैं ॥ करे. ॥३॥
उभीरा रान और छ्यारी में,

वदि फाल्गुण दशम फरसन ।
कीनी मुनि ज्ञान-न्याय के सह,
प्रभु यात्रा सफल दर्शन ॥ करे. ॥४॥

---

६३ श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन

(राग—माल कोष, ताल–त्रिताल)

पास जिणंद से प्यार, मैं कीनो अब० ॥टेर॥
कोयल टहुकत है मद भर से,
ज्युं देखत सहकार ॥ मैं० ॥ १ ॥
मानस सर में मोति चुगत है,
हंसा प्रेम अपार ॥ मैं० ॥ २ ॥
मेघ घटा से थन थन नाचे,
मयुर करे झंकार ॥ मैं० ॥ ३ ॥
वर्षा काल में प्रेमी पपैया,

पिउ पिउ करत पुकार ॥ मैं० ॥४॥
सुरपति नरपति जिन गुण गावें,
मालन कोश उदार ॥ मैं० ॥५॥
दर्शन आतम हरख भयो री,
श्री अतरिच्छ श्रीकार ॥ मैं० ॥६॥

---

६४ श्री पार्श्वनाथ स्त० (मु० भादक तीर्थ)
(राग—श्रीराग, मगल पूजा शिव तरु कन्द)
जय जय भादक पार्श्व जिनद ॥ टेर॥
दक्षिण देश की पुनित भूमि,
मद्रासती नगरी सुख कन्द ॥ ज ॥१॥
दीपत है श्री पार्श्वनाथ का,
मन्दिर यहा जन नयना नन्द ॥ ज ॥२॥
पार्श्वनाथ की प्रतिमा सुन्दर,

विराजे ज्युं नभ में चन्द ॥ ज. ॥३॥
शाम सप्त फण धर प्रभु मूरत,
अर्ध पद्म आसन गुण वृन्द ॥ ज. ॥४॥
चिंता चूरे चिंतित पूरे,
और मिटावे भव का फन्द ॥ ज. ॥५॥
चारित्र दर्शन अमृत पिलावे,
इन्द्र पूज्य जय वामा नन्द ॥ ज. ॥६॥

---

६५ श्री महावीर (चरित्र सूचि)

(शार्दूल विक्रीडितम्)

प्राणान्ता च्च्यवनं सुरेन्द्र नमनं गर्भाप हारो जनिः।
देवाद्रौ स्नयनं च नाम करणं क्रीडा च शालोत्सवः॥
उद्वाहो गृहिता सुदेव विनयो, दानं च दीक्षोत्सवः।
दुःखं केवल-तीर्थकर्म च शिवं, श्री वीर संकीर्तनम्॥

६६ श्री महावीर स्तवन (संस्कृत)

(राग—झिन्झोटी)

हे तीर्थ कृत् श्री भगवन् सततं नमाम्यहं त्वां "वलन"

सिद्धार्थ वश व्योम्नि, दिप्यत्मरीचि धामन्,
श्री त्रैशलेय स्वामिन् ?
सतत —१

कंदर्प कुंभि नाशे, महाकेसरिन् श्री वीर ?
सद् भारती भराब्धे ?
सततं —२

पापेस्तु जानुदघ्न मग्न च त भूजग।
स्तन्ध प्रबोध कलन् ?
सतत —३

दुर्मोह भूत्तमोंधे स्मिन् विश्व विश्व मध्ये।
विलसन् प्रकाश ज्योति.।
सतत —४

पश्याम्यह दशा त्वा, पूज्य ? स्मराम्यहं त्वा;
श्री वीर ? वीर ? सम्यक्।
सतत —५

कलधौत कांति स्वामिन् ? विनयावनम्र भृत्यः।
चारित्र दर्शनोहं। सततं.–६

---

६७ श्री महावीर स्वा० स्त०(मु० क्षत्रियकुंड)

(राग—सोरठ, ताल–त्रिताल)

वीर! मेरी नैया को दे दो सहारा,
नहीं है कोई आधारा ॥ टेर ॥
कर्म कीचड़ है गहरा भारी,
भोग पानी हय खारा ।
राग द्वेष नदी आश्रव नाली,
संसार जलधि अपारा ॥ वी० ॥१॥
दर्शन मस्तूल टूट गया है,
चारित्र पाल उडारा ।
अविरति भाव का पवन चलत है,

रात्रि प्रमाद अंधारा ॥ वी० ॥२॥
ज्ञान के डाडे टेढे बने हैं,
गुरु मल्लाह न थारा ।
गुरु आदेश लंगर नहीं पाया,
जहाज पुराण असारा ॥ वी० ॥३॥
है चट्टान नोकपाय बीच में,
चार कषाय घडिआला ।
आगम दिशा यंत्र गुमाया,
जिन आणा परिआरा ॥ वी० ॥४॥
भय अनंत सत्रा वध (२४५७) चलते,
सातम पूप अंधारा ।
वीर निर्वाण से वीरजी पाया,
क्षत्रियकुंड मितारा ॥ वी० ॥५॥
संसार दरिया में है नैया,

तूंही तूंही आधारा ।
चारित्र दर्शन गुण ही प्यारा,
कमल विनय जयकारा ॥ वी० ॥६॥

---

६८ महावीर स्वामी (क्षत्रियकुंड तीर्थ)
(राग—सोरठी देशी, मारी नाड़ तुम्हारे हाथे)
मारुं नाव चढ्युं तोफाने,
वीर संभारजो रे, मारुं. ।।टेर।।
कर्म कीचड़ भोग पानी खारां,
राग द्वेष नदी आश्रव नालां ।
भर्यो संसार समुद्र आ,
वीरता आपजो रे ॥ मारुं. ॥१॥
खोयु आगम दिशायंत्र,
जिन आणा सुकान न तंत्र ।

नथी सुकानी सु गुरुजी,
नाथ उगारजो रे ॥ मारुं ॥१॥
कषाय झुन्ड ने करनत भारी,
नव नोकषाय खडक नी धारी।
नावना चूरा थाशे,
नाथ बचावजो रे ॥ मारु. ॥२॥
तीव्र प्रमादनी आधी चढ़ी छे,
हवा पण अविरतिनी उघडी छे।
भान भुल्यो भगवान,
पंथ देखाडजो रे ॥ मारु ॥४॥
तूट्यो छे वृप सम्यक् दर्शन,
तूट्या ज्ञान हलेमाना दंड।
चारित्र मद उडे छे,
न्हारे थानजो रे ॥ मारु ॥५॥

उगणीश से सत्यासी वर्षे,
पोष वदिमां सातम दिवसे ।
क्षत्रियकुन्ड पति विनति आ,
अवधारजो रे ॥ मारुं. ॥६॥
मुक्ति कमल विनय दिल धारी,
चारित्र पद सेवा स्वीकारी ।
ज्ञान न्याय सह दर्शन,
पार उतारजो रे ॥ मारुं ॥७॥

---

६९ श्री महावीर स्वामी स्तवन

(मु० ग्राकर, ऋजुबालुका नदी तीर्थ)

(राग—आवी मुरति मोहनगारी, चिदानंद महावीर नारी)

मूरत हरदम दिल हरती है,
चिदानन्द वीर जिनन्द की ॥ टेर ॥

राग नहीं है, द्वेष नहीं है।
अज्ञान काम मिथ्यात्व नहीं है,
केवल दर्शन नीकी ॥ म्र ॥ १ ॥
गई अविरति, नहीं नींद रति।
नहीं है शोक दुगछा अरति,
जल हल ज्ञान की टीकी ॥म्र ॥२॥
हास्य हटाया, भय भी कटाया।
पाचों विघ्न को दूर हटाया,
सूरत वीर्य स्वरूप की ॥ म्र ॥ ३ ॥
कर्म काटकर, भये तीर्थंकर।
दोष अठार विनाशी जिनवर,
चायिक भाव दिनन्द की ॥म्र ॥४॥
ऋजुवालुका, वीर पादुका।
चार बनी समोसरन् भूमिका,

केवल कल्याणक की ॥ मू. ॥ ५ ॥
जिन पद लीनी, यात्रा कीनी ।
चारित्र दर्शन स्तवना कीनी,
प्रभु के चरण कमल की ॥ मू. ॥ ६ ॥

---

७० श्रीमहावीर स्वामी स्त० (मु० गुणायाजी)

(राग—खमाच, ताल–पंजाबी ठेका)

महावीर प्रभु मुख से यूं फरमावे ॥ टेर ॥
गुणशील वन में वीर पधारे,
साधु समूह सोहावे ।
समवसरन में बारह परषदा,
वीर व्याख्यान सुणावे ॥म. ॥१॥
जीव अनादि कर्म संगत से,
चारों गति दुख पावे ।

चिद्घन जीव को निज गुण प्राप्ति,
शास्वत स्थान पहुँचावे ॥ म ॥२॥
निज गुण पाने को थी विरति,
कर्म ग्रन्थी को जलावे।
छोड दे माया ममता प्राणी !
ज्यू वीतराग कहावे ॥ म ॥३॥
वीर वचन को सुनके केई,
चारित्र, समकित पावे।
इस उपदेश मे पुनीत भूमि,
जल मन्दिर निरचावे ॥ म ॥४॥
मूरत मनहर वीर जिनद की,
भवि जन के मन भावे।
चारित्र सेवक दर्शन यात्रा,
मोह की जड को कटावे ॥म ॥५॥

७१ श्रीमहावीर स्वामी स्त० (मु० पावापुरी)

(राग—आदिनाथ शत्रुंजय बुलाले मुझे)

प्रभु ! मुक्तिपुरी में बुलालो मुझे ॥ टेर॥

तीर्थपति चौवीसवां श्री-
वर्धमान जिनंद जी।
आपकी वर्दाश्त कीनी,
प्रेम से भय भंजनी।
अब तो जिन ! अपना बनालो मुझे॥प्रभु.॥१॥

भूमि तल में आप थे सुर,
कोड़ा कोड़ी साथ थे।
मुख्य गणधर पाट मुझ को,
किया सुपुर्द आप ने।
इसी रीतिसे अब भी दिलादो मुझे ॥ प्रभु. ॥२॥

दास की सब तोड़ के प्रभु,
क्यों दयाके मोह से ।
[illegible] [illegible] है [illegible] क्या ?
[illegible] [illegible] [illegible] है ।
[illegible] [illegible] मुरारी कहै ॥ [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

केवल ज्ञान स्वरूप मिलादो मुझे ।।प्रभु.।।५।।
इस रीति की भावना से,
केवली गौतम हुए ।
वीर भक्ति पाठ पढ़ते,
और शिव स्वामी हुए ।
इसी तौर का भाव दिलादो मुझे ।। प्रभु. ।।६।।
-बाल की अरदास सुनके,
कृपा दृष्टी कीजिये ।
ज्योति रूप जगाय के निज,
आत्म दर्शन दीजिये ।
स्वामी ! सिद्ध स्वरूपमें मिलालो मुझे ।।प्र.।।७।।

---

७२ महावीर (पावापुरी)

(राग—कवाली, मेरे मौला बुलाले मदीने मुझे)

भेट्या पावापुरी, मनमोहनजी ? ॥ टेर ॥

दूर देशे, अमर कीर्ति,
जेहनी प्रसरी घणी ।
तेह पुरीमा आवता तो,
भाग्यनी सीमा बनी, उर्मीओ मधुरी ॥मन ॥१॥
विमल जलमा धवल मन्दिर,
सुधा कांति दीपतु ।
देखता महावीरनु त्या,
दिलडु रहे चोट तु, तृप्ति रे अधूरी, ॥मन ॥२॥
भविक भावुक भावना थी,
गाय वीर गुण मजरी ।
आत्मनु कल्याण साधे,

भाव वैरी संहरी, आठे कर्म चूरी, ॥मन.॥ ३ ॥
धन्य दिन पल धन्य जीवन,
धन्य शांसि वासना।
वीरनी ए वीर भूमि,
भेटतां वधता गया, मन आश पूरी ॥मन.॥४॥
ओगणीशे छयासी, फागण
कृष्ण तेरस श्री करी।
ज्ञान-न्याय उमेद साथे,
करी यात्रा अघहरी, दर्शन पाठ धुरी॥मन.॥५॥

---

७३ श्री महावीर स्वामी (मु० पावापुरी)

(राग—जिनराज नाम तेरा०)

महावीर को हो वंदन,
तन से, वचन से, मन से ॥ टेर ॥

चौवीसवा जिनेश्वर, परमेष्ठि नाथ ईश्वर।
सिद्धार्थ के हो नदन, तन से० । महा० ॥१॥
पावापुरी के स्वामी, जिहा पाच धाम नामी।
आनद केलि नदन, तन से० । महा० ॥२॥
स्तूप में, समोसरन में, महावीर के चरन हैं।
निर्वाण धाम मडन, तन से० । महा० ॥३॥
महताव् कुमारी मन्दिर, जल बीच धाम सुदर।
शाति करे ज्यू चदन, तन से० । महा० ॥४॥
जय हो अलख निरजन, दर्शन विशुद्ध अजन।
श्री पावापुरी मडन, तन से० । महा० ॥५॥

---

७४ श्री तीर्थ भूमि (मु० वैभारगिरि, राजगृही)
(राग—ठुमरी)
वैभारगिरि पर जानाजी,

मिथ्यात्व मोह हटाना जी ॥ टेर ॥
राजगृही की पांच पहाड़ी,
श्री वैभार बखानाजी ।
वीर जिनंदजी यहां समवसरे,
पांच हैं टूंक सोहानाजी ॥ १ ॥
पहेली टूंक में जिन पादुका,
पांच तिसरी में मानाजी ।
धन्ना शालिभद्र की मूरति,
दुसरी में दिल ठानाजी ॥ २ ॥
चौथी टूंक में मुनिसुव्रत हैं,
और विभु वर्धमानाजी ।
पांचवी टूंक में गौतम मन्दिर,
गणधरों का निर्वानाजी ॥ ३ ॥
वीच में पुनीत भूमि में भी,

गणधर के निर्वानाजी ।
और अनेक मुनीश्वर के हैं,
शिवपुर प्राप्ति ठिकानाजी ॥४॥
संवत् उन्नीस सौ छयासी में,
चैत्री एकम का गानाजी ।
चारित्र सेवक दर्शन से है,
तीरथ शिव परवानाजी ॥ ५ ॥

---

७५ श्री तीर्थ भूमि (सु० राजगृही)

(राग—सारंग अथवा काफी)

वंदना, वंदना, वदना ।
जिनराज को सदा मेरी वंदना ॥ टेर ॥
मुनिसुव्रत के चार कल्याणक,
राजगृही गुण रचना ।

राजगृही में दो जिन मंदिर,
काटे मोह विटंबना ॥ जिन० ॥ १ ॥
विपुलाचल सिद्धा अइमंता,
श्री देवी का नंदना।
उत्तर मुखी मुनि सुव्रत का,
मन्दिर है दुःख खंडना ॥ जिन० ॥ २ ॥
रतनाचल में उत्तर मुखी,
चउ जिन चर्ण में वंदना।
शांति, पार्श्व, वसु, नेमि करत हैं,
पूजक कर्म निकंदना ॥ जिन० ॥ ३ ॥
उदय गिरि में पश्चिम मुखी,
पांच शिखरी अभिनंदना।
श्यामल मूरत पादुका छै,
हरें मृत्यु की आक्रंदना ॥ जिन० ॥ ४ ॥

स्वर्ण गिरि में पूर्वाभिमुख,
ऋषभ मूरत को वदना।
वैभार गिरि में पाच टुकें हैं,
बहुत भुवन गिरि मडना ॥ जिन० ॥५॥
तोड दी धन्ना शालिभद्र ने,
भोग करम को फंदना।
वीर के गणधर बने इस गिरि में,
शिवपुरी के मडना ॥ जिन० ॥ ६ ॥
मुनिसुव्रत वीर साधु हरत हैं,
माया तृष्णा की स्पदना।
चारित्र पद दर्शन यात्रा से,
शाश्वत शाति आवडना ॥ जिन० ॥ ७ ॥

---

७६ श्री महावीर स्तवन (पावापुरी)

(राग—आगया है कर्म युग कुछ कर्म करना सीखलो)

मैं भया निर्भय जगत में,
वीर का शरणा लिया ॥ टेर ॥
था अनादि काल से मैं, कर्म से बंधा हुआ ।
कर्म जाल को तोड़ने को, वीर का० ॥१॥
राग द्वेष औ क्रोध माया, लोभ ने पकड़ा मुझे ।
फंद में से छूटने को, वीर का० ॥२॥
भटकता अंजान मुसाफर, डाकूओं से फसा हुआ ।
शर्ण चाहे शूरका ज्यूं, वीर का० ॥३॥
राग द्वेष से पूर्ण देवको, मूढ़ होकर सेविया ।
कार्य सिद्धि ना हुई अब, वीर का० ॥४॥
वीतराग अलग निरंजन, कर्म गंजन ईश्वरा ।
श्री महावीर मिल गये हैं, वीर का० ॥५॥

पानापुरी ईश जिनवर, इन्द्र पूजित श्रीधरा।
सत्य दरशन भाव फरसन, वीर का० ॥६॥

---

७७ महावीर (मु० कलकत्ता)

(राग—विमलाचल वासी मारा वहाला)

महावीर जिनेश्वर राजे, अनुपम दिवस गणो।
सहु दिलड़ां आनदमा नाचे,
संघमा हरख घणो ॥ टेक ॥
ज्ञात कुलनो जल हल सूरज, सिद्धारथ नृप नन्द।
त्रिशलाजी नो नानडियो प्रभु,
जन मन नयनानन्द। अ० ॥१॥
मूर्ति मनहर दीपे उज्वल, शोमा नो नहीं पार।
शातरसेथी पूरी निशदिन,
शिर मगल करे नार अ० ॥२॥

चौवीसमां तीर्थंकर सोहे, धारक केवल ज्ञान।
दर्शन दई भविजीवने तारे,
शासन ना सुल्तान। अ० ॥३॥

जेठ शुदि पांचम चोवीशसे, सत्तावन सन् वीर।
ऋषभ शांति सह देव विराजे,
कलकत्ता महावीर। अ० ॥४॥

सकल संघ जिनना गुण गावे, दिल धरी ऐकतान।
धीर वीर उपकारी जिणंदशुं
मागे अक्षय दान। अ० ॥५॥

वीरता आवो वीर विभुजी, चारित्र भाव सुहाय।
अम हृदये वसो निशदिन जिन गुण,
दर्शन ज्ञान ने न्याय। अ० ॥६॥

---

७८ महावीर स्वामी स्तवन (कलकत्ता)

(राग— अहिंसा का डंका आलम में)

जय जय जगतारक देव विभु,
महावीर प्रभु महावीर प्रभु ॥ टेर ॥
जय तीर्थपति कल्याण करा,
सत् केवल ज्ञान विज्ञान धरा,
जग हित करा, दु:ख विघ्न हरा ॥ महा० ॥१॥
जय अचल अकल शिवदल विमला,
जय अजर अमर अरूपी अमला ।
जय अगम निगम नय योग कला ॥ महा० ॥२॥
श्री वीरजी का दर्शन पाया,
महावीर मंडल ने गुण गाया ।
जय त्रिशलानन्दन जिनराया ॥ महा० ॥३॥

७९ श्री महावीर स्तवन (सु० कलकत्ता)

(राग—ताल—त्रिताल)

सेवक होकर आया मैं, कुछ लेकर जाऊंगा ।।टेर।।
त्रिशला मात दुलारे,जिसकी सेवा सुर धारे ।
पूर्व पुण्यसे मालिक पाया,प्रेम जमाऊंगा।।से.।।१।।
आणा शिर चढ़ाऊं,उपदेश जीवन में लाऊं ।
नाम रटूं मैं हरदम दिलमें,जिनगुण गाऊंगा से. २
भवो भव आपकी सेवा.मांगूं देवाधि देवा ।
आप चरण में अक्षय धन को,पाकर जाऊंगा।।से.३
श्री महावीर जिन मंडल, करे वंदन पूजन गायन।
दर्शन पाया चारित्र ध्याया, खुशी मनाऊंगा।।से.४

८० श्रीमहावीर स्वामी स्त० (मु० कलकत्ता)

(राग—श्याम कल्याण)

खुशी मनाई प्रभु का दर्शन पाया ॥ टेर ॥
चरम जिनंदा, सिद्धार्थ नंदा,
त्रिशला रानी का जाया ॥ खु० ॥१॥
ज्ञातृ सुधाकर, नल रस सागर,
वीर जिनेश्वर राया ॥ खु० ॥२॥
शशि सम कांति, शमरस शांति,
देखत दिल उलमाया ॥ खु० ॥ ३ ॥
ऋषभ जिनंदा, शांति मुनींदा,
बीच में ताज सजाया ॥ खु० ॥ ४ ॥
सम्प्रति काल की, मूरति नीकी,
वीर भक्ति मन भाया ॥ खु० ॥ ५ ॥
सब ने मिल कर, कीनी प्रतिष्ठा,

कलकत्ता वीर ध्याया ॥ खु० ॥ ६ ॥
वीर के सन में, ऋषि व्रत जिन में,
पांचम ज्येष्ठ बैठाया ॥ खु० ॥ ७ ॥
शांति उत्सव में, चारित्र दर्शन,
जय जय नाद बजाया ॥ खु० ॥ ८ ॥

---

८१ श्री महावीर स्वामी (कलकत्ता)

(राग—अमे जइने के शुं कान तारी माने)

अमे जइने के शुं वीर, तारी माने ॥ टेर ॥
मुठी मारीने नीचो नमाव्यो,
ते दी हतो कोई भीने वाने ॥ अमे० ॥१॥
पंख्याने पाटले बैठो चड़ी ने,
एवो उछाछलों सौको माने ॥अमे०॥२॥
वावो वनी ने फर्या करे छे,

कँ कँ सभारे एकी ताने ॥अमे० ॥३॥
चन्दन वाला करे बहु चाला,
तने शोधे छे गामे राने ॥ अमे० ॥४॥
आखु जगत चकडोले चढ्यु छे,
मीठा वीणा शा तारा गाने॥ अमे० ॥५॥
जिनभूवन मा प्रेमे पेस्यो,
अलगो अमोथी रहे शाने ॥ अमे० ॥६॥
चारित्र दर्शन प्रीति पुराणी,
तु तो हवे संभारे शाने ॥ अमे० ॥७॥

८२ महावीर स्वामी

(राग—ठुमरी)

प्रभु आप पधारो मुझ मदिरीएँ ॥ टेर ॥
निर्मेक दीपक जग मग ज्योती,

ध्यान शशी पूरण कलीऐ ॥१॥
तप जप चौक पुराऊं शेरी,
सुमन भावना पाथरीऐ ॥२॥
शुद्धशील शणगार सजावी,
समकितनु तिलक करिये ॥३॥
निगोद पियर वसमु मान्यु,
विषम वाटने परिहरी ऐ ॥४॥
सासरुं संजमपुरमां शास्वत,
उज्वल धाममां संचरिये ॥५॥
धर्मराजनी महेर थइ छे,
वखत वितावो शुं ? जरिए ॥६॥
ताला वेली लागी तुम्हारी,
कषाय चोकी विखरिये ॥७॥
जगत भगतनु वैर अनादि,

लोक लाज थी ना डरिये ॥८॥
आतमा भोक्ता निज गुण भोगी,
रग राग दो घडी करिये ॥९॥
हूं विनाशी तुं अविनाशी,
दुनिधा टाली दिल ठरिये ॥१०॥
सत्ता गुण मिलानी सोह,
एक मेक थइ विचरिये ॥११॥
आत्मानो अक्षय रस प्रगटे,
शिव भुवननी सेजडिये ॥१२॥
चारित्र राज गुरु शासन माहीं,
दर्शन सुख निज मन्दिरीए ॥१३॥

८३ श्री महावीर स्वामी स्तवन

(राग—मेरे मौला बुलाले मदीने मुझे)

मुझे वीर दरस की प्यास लगी ॥ टेर ॥
देह में मिथ्यात्व धूप की, उष्णता व्यापी रही ।
और चार कषाय सिगड़ी, लपट भी आती रही ॥
अब शांति करन की चाह लगी ॥ मुझे० ॥१॥
राग द्वेष से युक्त जग में, देव देवी अनेक हैं ।
वीतराग विना अवर को, ना भजु यह टेक है ॥
वीतराग दशा की सुवास लगी ॥ मुझे० ॥२॥
जाप आपका दर्द काटे, अन्य को क्यों ध्याइये ।
आपके दर्शन फरस से, आत्म तृप्ती पाइये ॥
ज्ञान अमृतपान की आस लगी ॥ मुझे० ॥३॥
वीर दर्श को प्राप्त करके, भविक कर्मों को दहे ।
चंड कौशिक स्वर्ग पावे, चोर आत्म दशा लहे ॥

चन्दनबाला की भव जजाल भगी॥ मुझे० ॥४॥
शांत मुद्रा ध्यान गंभीर, महावीर जिणंद को।
इन्द्र चन्द्र प्रणाम करके, काटे भव भय फन्द को॥
स्वानुभव दर्शन की चिराग जगी॥ मुझे० ॥५॥

---

८४ श्री जिनवर के चरणों में स्तवन

(राग—गांधी तो आज हिंद के, अहसान हो गये)

प्रभो! चरन में आ खडा, तेरा भिखारी हूं॥टेर॥
चौराशी लाख गहेरा, भरा पडा अन्धेरा।
उसी में मैं घुरा फिरा, बडा दुःखारी हूं॥ प्र० ॥१॥
अब आपको ही देखा, चिराग सा अनोखा।
जिनेन्द्र के ही ध्यान में, मैं कर्मचारी हू॥प्र०॥२॥
तुमारे हैं अनंत, आतम के गुण भंते!
अब मैं प्रभु के गुणका, नया भिखारी हूं॥प्र० ॥३॥

अपार तेरी शक्ति, मेरी है अल्प भक्ति।
तो भी मैं तेरे गान का, छोटा सितारी हूं ।।प्र०।।४।।
मुक्ति कमल की लहजत, चारित्र की मोहब्बत।
दर्शनको दर्श दीजिये, आज्ञा विहारी हूं ।।प्र०।।५।।

---

८५ श्री महावीर स्वामी स्तवन

(राग—निरखत वीर जिनंद, अंखियां सफल भई)

देखे वीर जिनन्द, अंखियां सफल भई ।।टेर।।
समो सरन में जिनजी राजे,
बारह पर्षदा मांहि विराजे।
त्रिशलाजी के नंद ।। अं० ।।१।।
चौतीश अतिशय केवल नाणी,
जिनकी पैंतीश गुणयुत वाणी ।
सुने सुर नर इंद्र ।। अं० ।।२।।

इंद्रभूति गौतम गणधारी,
पूछे चरणों में शिरधारी।
टारे शंका मुनींद ॥ अं० ॥ ३ ॥
रत्न चिंतामणि हाथ में आया,
मोहनी मूरत से ललचाया।
दिल में है आनन्द ॥ अं० ॥ ४ ॥
चारित्र दर्शन गुण का खजाना,
वीर का सच्चा रूप पहिचाना।
उपशम रस का कन्द ॥ अं० ॥ ५ ॥

---

८६ श्री महावीर स्वामी स्तवन

(राग—विभास ताल—त्रिताल)

जिनंदा ! तोरे नैनों में क्या है तमाशा ॥ टेर ॥
राग नहीं है रंग नहीं है,

तो भी लगा मम स्वासा ॥ जिनंदा० ॥१॥
काम विकार कटाक्ष से न्यारा,
करत है शांति प्रकाशा ॥ जिनंदा० ॥२॥
नैनां प्याली अमृत पीना,
तो भी रहा मैं प्यासा ॥ जिनंदा० ॥३॥
नैनां नैनां से मैत्री जमाकर,
पूरे भविक मन आशा ॥ जिनंदा० ॥४॥
चारित्र दर्शन ध्यान में लीना,
करत श्री चरनों में वासा ॥ जिनंदा० ॥५॥

---

८७ श्री महावीर स्तवन (मु० बामन वाड़ा)

(राग-राधे कृष्ण बोल मुख से, तेरा क्या लगेगा मोल)

'महावीर' बोल मुख से, तेरा दिव्य चक्षु खोल ॥टेर॥
बहुत पुण्य उपाया,

तव दुर्लभ नर भव पाया।
मानुं "मुक्ति" का ही कोल ॥ तेरा० ॥ १ ॥
है शिव अमली वासा,
कर उद्यम जब तक श्वासा।
आतम "कमल" में अडोल ॥ तेरा० ॥ २ ॥
वीर जिनेश्वर पाया,
त्रिसला रानी का जाया।
हरदम "विनय" भक्ति खोल ॥ तेरा० ॥ ३ ॥
यह काया है विनाशी,
आत्मा चिद्घन अविनाशी।
धरले "चारित्र' अमोल ॥ तेरा० ॥ ४ ॥
ब्रातण वाड़ के स्वामी,
भजले वीर जग में नामी।
दर्शन का ही बाजे ढोल ॥ तेरा० ॥ ५ ॥

८८ महावीर स्वामी (कुल्पाक तीर्थ)

(राग—मथुरामां खेल खेली आव्या)

आवो आवो शिरताज ! अबोला शाने लहोछो ।।टेर

संसार त्यागी, बन्या वैरागी, पहेलां साध्युं निज काज

लीधी प्रतिज्ञा, कोई जाणे ना,

आंगणीए आव्या छो आज ।। अ० १

हूं दुःखियारी बाला तुम्हारी, वाकुला ल्योने महाराज

आंसुड़ा आव्यां हा वीर नाव्या,

एवो सुणी ने अवाज ।। अ० २

वीरे पधारी भीक्षा स्वीकारी, राखी वसुमती लाज।

साध्वी पदमां आप्युं पलकमां,

चंदन बाला ने स्वराज ।। अ० ३

एवीज रीते, एवीज प्रीते, अमने बोलावोने राज।

आपनी सामे निरखताने,

गाने करोछो नाराज ॥ अ० ४
श्रीकुलपाकमां, माणेक पाममा,
हसती सूरत दीठी आज
चारित्र दर्शन, ज्ञान न्यायामन,
पाणी पहेला बाधी पाज ॥ अ० ५

---

८६ चदनबालानी वीर विनति

(राग—शामलियानी करजो मारी महायरे)

श्री जिनवरजी ! करजो मारी महायरे,
तमे करुणा करीने व्हेला आवजो रे ।
नाथ नगीन सुदर्शना ना वीर रे,
आ दीन दु खीनी दाद दयालु धारजोरे ।
पधार्या आप घहाला, पछी पाछा शु ? चाल्या ।
रोवे आ दीन बाला, रुवे घट कालावाला ।

चंदनबाला नी अरदास,
विनति मानजो रे ॥ तमे० ॥ १ ॥
दधिवाहनी बेटड़ी, करमे अहीं आवी चड़ी।
मूला ये कर्यो उत्पात, शिर बोड़ी बेडी जड़ी।
फरी आवोने। महेर वसावो ने ॥
प्रभुछुं अनाथ नारी, तारा गुणमां रमनारी।
श्राविका आ तमारी, प्रभु देजो ना विसारी।
चारित्र दर्शननी सुणी अवाज,
आवी उगारजो रे ॥ तमे० ॥ २ ॥

---

९० महावीर को दिल की गुजारिश

(राग—शहीदो के खुंका असर देख लेना)

अब मुझे अपना बनाना पड़ेगा,
जैसे तैसे भी निभाना पड़ेगा ॥ टेर ॥

तेरे शरण में आय खडा हूं,
चर्णों का सेवक बनाना पडेगा॥ अ० १
राग द्वेष की बेडी पडी है,
इनके बंधन से छुडाना पडेगा॥ अ० २
चारो कषाय की चूंगी लगी है,
उनको यहा से हटाना पडेगा॥ अ० ३
पाचो इन्द्रिय दुश्मन खुफिया,
इन से इस्तिफा लिखाना पडेगा॥ अ० ४
मन वचन ने कीनी बगावत ।
उनके भी जोम को तुडाना पडेगा॥ अ० ५
मोह बड़ा दुश्मन सामने खडा है,
उससे सेवक को बचाना पडेगा॥ अ० ६
बगदी चारित्र दर्शन देकर,
सिद्धो का मागरित् बनाना पडेगा॥ अ० ७

६१ भाव धन्वतरीने विनति

(राग—कव्वाली, आगया है कर्मयुग कुन्ड०)

हे प्रभो ! निर्भय हवे जो, नाड़ छे तुम हाथमां,
तार जो हे बापजी आ, बाजी छे तुम हाथमां ॥ हे० १
मोह मदिरा छाक चसकी, हा गुमावी चेतना,
रोग रोमे रोम व्याप्यो, ते तपासो नाड़मां ॥हे० २
मान मुग्दर शिर फुटयुं, क्रोध फणीधर डंखता,
चोंटी माया दूष्ट डाकण,सहु मल्युं छे साथमां ॥हे०
ताप मिथ्या दृष्टि चढ़तो, धम धमे छे जीव आ,
तापगतिने शांत करवा,नाथ चांपो बाथमां ॥ हे० ४
क्रूरतानी ऊलटी थी कम कमाटी छुटतां,
नाथ दुःखमां तरफडुं छुं ;छे मुंझाणो आतमा ॥ हे०
थाय छे शुं ? थाय छे शुं ! ते कथ्युं कहेवाय ना,
छे न शांति ज्यां वसुं त्यां, भूलता भव पाथमां ॥हे०

दिन दु.खियाने उगारो, मूल कापो रोगना,
मानगद धन्वंतरी छो, हाथ पकडो हाथ मा ॥ हे० ७
रोगहर चारित्र चिद्घन, ज्यां तमारो वास त्यां,
नित्य दर्शन पाठ देता, लइ चलोने साथमा ॥हे० ८

---

६२ महा वीरता

(राग—सीला कैसे भुलाले मदोने मुझे)

अहो कर्म हणे महावीर शुरा । टेर ।
घोर तप करवाल धारी, क्षमा बखतर वीरता ॥
मावा, गभीर योद्धा, विघ्न बादल चीरता ।
जुझे एवी खरा, सुधीर शुरा, अहो० ॥१॥
ध्यान तोप अमोघ चापे, अडग दुर्धर दीपता ।
योगी, जेता महानल, मोह दलने जीपता ॥
मस्त लोभ मरा, सुधीर भुरा, अहो० ॥२॥

योग मुद्रा शांत निर्भय क्रोध मल्लने मारता।
फेंकी, समता सुदर्शन, विश्व शांति प्रसारता॥
सोहे वीर पूरा, सुधीर शुरा, अहो० ॥३॥

---

६३ देव श्रद्धा भजन

(राग—गजल)

प्रभु तारे शरण आव्यो,
अवरनी आश नवी चाहुँ।
हवे तारो धरी हाथे,
अहोनिश ध्यान तुज धारूं॥१॥
अनादि काल थी भमतां,
महा भाग्ये रतन मलीयुं।
हवे तो काचनी प्रीति,
तजी त्हारामां मन धरीयुं॥२॥

क्षीरोदधि नीर पामी ने,
कहो केम कूपने खणीये ।
मल्यो सहकार रस पुरो,
कहो केम खाखरो भजीये ॥३॥
खरे पक्षी तजी आवल,
भजे छे कल्प वृक्षोने ।
कहो परतत्र देवोने,
तजी केम चाहु ना तुजने ॥४॥
रहे सांनिध्यमा इन्द्र,
पछी शुं काम भूतो थी ।
खरे दारिद्र पण नासे,
चिंतामणी रत्न पासे थी ॥५॥
गुरु चारित्र पद मेरी,
रखुं वैराग्य मातें हुँ ।

अविचल सुख दर्शन नुं,
जिणंदजी एज याचुं छुं ॥६॥

---

६४ महावीर बालक्रीडा भजन

(राग—छोटा सा बलमा मोठे, आंगणे में)

छोटा सा राज कुमार,
दोस्तों से खेला खेले ।
त्रिसलाजी करती हरदम प्यार,
अपनी गोद में लेले । छो० ॥१॥
इमली पर करे कोई मोज,
कोई झुला में झुले ।
इक दिन साँप को दिखकर बाल,
वहां से भागे भोले । छो० ॥२॥
उसी दम वहां राजकुमार,

साप को दूर उछाले ।
फिर आये मिलकर बच्चे यार,
सबके डर को टाले । छो० ॥३॥
ची हम्(स्वारी) खेला में एक नया यार,
मैं हारा यूं बोले ।
राजकुमार् को कधा में ठान,
चढ़ गया होले होले । छो० ॥४॥
अब उसके शिर पर राजकुमार,
अपनी मुक्की ढोले ।
वो चिल्ला कर छोटा होकर बाल,
अपना शिर टंटोले । छो० ॥५॥
इसी वीरता का ले अभिमान,
सुरपति खुश हो डोले ।
"तुम ही हो सच्चे जग में वीर,"

कह कर जय जय बोले । छो० ॥६॥
तब से हुआ "श्री वीरजी" नाम,
मोह को मारे अकेले ।
चारित्र दर्शन खेला वीर का,
हो वीर वो खेले । छो० ॥७॥

---

६५ श्री महावीर स्तवन

(राग—उस्तादी कव्वाली—आ गया हे कर्म युग)

हे प्रभो! क्यारी अमीनी, आंख भीनी राख जो ॥टेर
बालपणामां मेरु गिरि पर, इन्द्र संशय संहरी ।
शंका शिशुकनी विदारी, एह बल अम आपजो ॥हे०
सर्व जीवने तारवाने, त्यागनी कम्मर कसी ।
नाथ तो तारी उगारी, दास दीनता काप जो ॥ हे०
बाकुला ग्रही सुपड़ामां, देती चन्दन बालीका ।

राजीतारी हेत थी तो,मुज शिर कर स्थाप जो।। हे०
इन्द्र ने उपदेशाता जे, आत्मशक्ति छे खरी।
चडकौशिक ने उगार्यो, विश्व व्हारे आवजो ।। हे०
संगमक सम पापी सामे, शी दशा हा एहनी।
एम मीनी आख करता, एह दृष्टि राखजो ।। हे०
ज्ञान केवल धाम सिद्धि, साधी प्रभुता पायरी।
दास दर्शन पाठ आपी, छाट अमीनी छाट जो। हे०

---

६६ संगमकना उपसर्गो

(राग—साथ धरे शीदने लाव्यो)

वीर जीणंदजी धीरता धारी, अचलपणे विचरे जगमा,
इन्द्र सभामा इन्द्रज बेठा, करे प्रशंसा रही संगमा,
शठा न कांई धारज धारी,
वीर जीणंद समो जगमा ।। वीर० ।।१।।
सुणी संगमक एम विचार्युं,इन्द्र थके जिमतिम संगमा,

देवो बेठा करे हाजीहा,
सरखो साथ मल्यो ठगमां ॥ वीर ॥२॥
कालामाथानो मानवी शुं छे, एह मुकाय शुं सुरचगमां
वीरना ढोंग ने करी उघाड़ो,
हुं आवुं झट-आ पगमां ॥ वीर० ॥३॥
आवी संगम करे उपसर्गो, दाटे वीरने धूल ढगमां;
कीड़ा डांस घीमेल वींछीथी,
देतो डंख रगेरगमां ॥ वीर० ॥४॥
नोलीयो साप उंदर थइ करडे, उछाले हाथी खगमां;
हाथणी पिशाच वाघ वनावी,
देवे दुःख दल डग डगमां ॥ वीर० ॥५॥
मात तातनां रूप विकुर्वी, लोभवतो मन लगलगमां;
छावणी बांधी सैन्यना हाथे,
अग्नि जगावे प्रभु पगमां ॥ वीर० ॥६॥
कान करड़तां पंखी बनावी, वंटोलियो विरचे पगमां;
वायु अने घन चक्र वनावी,
घसड़ी ने फेंके पगमां ॥ वीर० ॥७॥

सवार पाडी कहे जीणाद ने, निर्भयशा विचरो जगमां,
विमान विरची कहे तजो तप,
मोक्ष नथी ने चलो सगमा ॥ वीर० ॥८॥
छमास दोषित द्रव्य करीने, गोचरी विघ्न करे जगमा,
सात वार जिन शूली चडावे,
दोरी तुटे तड़तगमा ॥ वीर० ॥६॥
घधनधनना दु खो आपी, थाकी अते गयो सगमा,
इन्द्रे सगम दूर हकावी,
काढी मूक्यो सुर नगमा ॥ वीर ॥१०॥
एम अनेक सही उपसर्गो, सचरिया मुक्ति मगमा,
वीर जीणदजी आपो अटलता,
दर्शपद्नो धगधगमा ॥ वीर० ॥११॥

---

६७ भवभ्रमण भजन

(राग—हुं भजन करीश हरिनु सदा सु खेरे)

हुं चरण चाहुँ जिननु सदा सु" खे रे।

चोराशी ना फेरा फरतां,
रझल्यो बहु संसारे। हुं० ॥टेर॥
एकेन्द्रिमां निगोदमांहीं, अनन्ता युगो भम्यो।
पृथ्वीपणे ने जलपणे,
संसार मांही हुं भम्यो। हुं० ॥१॥
अग्निपणे वायुपणे, बादर निगोदे आथड्यो।
विकलेन्द्रिमां परवशपणे,
अहा हा प्रभु हुं तरफड्यो। हुं०॥२॥
टीच्यो मने कूट्यो मने, वींध्यो वली छेद्यो मने।
एवा अनन्ता दुःख वेठी,
नाथ आव्यो तुम कने, । हुं० ॥३॥
नारक अने तिर्यंचमां, पीड़ा अहा में शुं सही।
ते सर्व तो कथी जाय ना,
जे आप जाणो छो सही। हुं० ॥४॥

कै पुण्यना उदय थकी, सुरधाममा हुँ सुर थयो।
चिन्तामणी नरजन्म पामी,
तेह पण हारी गयो। हुँ० ॥५॥
अति पुण्यना उदयथकी, अहो आज जिनवर तुं मल्यो
पार तु करनार सुणी,
चरणमा दर्शन दल्यो। हुँ० ॥६॥

---

९८ महावीर स्तवन

(राग—आवो आवो पामजी मुज मलिया रे)

जगत में वीरजी उपकारी रे,
अष्ट गुण समूह के धारी॥टेर॥
गुण स्थानक श्रेणी प्रमाण रे,
मोह घारक ध्यान प्रधान रे।
हुए शुद्ध पूरण भगवान्। जगत में० ॥१॥

श्री केवल ज्ञान अनन्तरे,
अनुपम दर्शन विलसन्तरे।
जिन्होंने किया कर्म का अंत। जगत में० ॥२॥
अव्याबाध सुख से नामीरे,
सम्यक् क्षायिक के स्वामी रे।
अक्षय स्थिति से आरामी। जगत में० ॥३॥
अनामी नहीं पुद्गलरागरे,
रस रूप दशा का त्याग रे।
गंध फरस रहित वीतराग। जगत में० ॥४॥
अगुरु लघु का पद पायारे,
शुद्ध वीर्य स्वरूप की कायारे।
अष्ट करम रहित जिनराया। जगत में० ॥५॥
अतएव श्री चिद्घन रूप रे,
मैंने पाया श्री जिन भूप रे।

हुआ चारित्र दर्शन रूप। जगत में० ॥६॥

---

६६ महावीर शरण

(राग—वहालु वतन मने वहालु वतन)

प्यारू' शरण मने प्यारू' शरण।

व्हालु लागे वीर! तारू' शरण ॥टेर॥

मात के पिता कोई न त्राता,

सगा रोके नहीं नरक गमन।प्या०॥१॥

वाडी वजीफा, लच्मी के सत्ता,

कोई रोके नही जन्म मरण।प्या० ॥ २॥

चारित्र फरमन, महावीर दर्शन,

सरे खरू छे तारू शरण। प्या० ॥३॥

---

१०० महावीर स्वामी स्तवन

(राग—शहीदों के खूं का असर देख लेना)

ढूंढ़त ढूंढ़त आलम सारा,
नसीब से पाया दिदार तुम्हारा ॥टेर॥
हरि हर ब्रह्मा बुद्धि निहारे,
तूं ही जगत की जीवन धारा। ढूं० ॥१॥
कोई रागी, कोई द्वेषी,
तुं वीतरागी निरागी सोतारा। ढूं० ॥२॥
कोई कामी कोई लोभी,
तुं ही अकामी नामी अणगारा। ढूं० ॥३॥
कोई औरों की आश करत हैं,
तुं ईश इन्द्रो से पूजित प्यारा। ढूं० ॥४॥
कोई फसा है कर्म कसा है
तुं ही कर्मों से रहित उजियारा। ढूं० ॥५॥

आप चरन में आय खडा हू,
अपना बनालो, सु सेवक प्यारा। दू° ॥६॥
चारित्र मागू दर्शन मागू,
तु ही भवोभव देव हमारा। दू° ॥७॥

---

१०१ महावीर स्वामी (अहमदाबाद)
(राग—नागर वेलीओ रोपाव)
तारा गुणो प्रगटाव, मारा निगु ण जीवनमा ।
तें वार्षिक दानज दीधु, वली विप्रनु कामज कीधु
एवु दानित्व बतलाव ॥ मारा° ॥१॥
तें ममता माया छोडी, समारनी जालज तोडी।
एवो त्याग जमाव ॥ मारा° ॥२॥
तें काने खीला ठोक्या, ने संगमना दु:ख दीठा।
एवी वीरता ने लाव ॥ मारा० ॥३॥

तप तरवारे संहार्या, तें भाव शत्रुने मार्या।
एवी शूरता प्रगटाव ॥ मारां ॥ ४ ॥
तें परनी सहाय न लीधी, निज बलथी मुक्ति लीधी।
एवी मक्कमता वसाव ॥ मारां० ॥ ५ ॥
श्री राज नगरना राणा, महावीर वीर वखाण्या।
एवी वीरता महकाव ॥ मारां० ॥ ६ ॥
श्री मुक्ति कमलना वासी, विनय चारित्रना राशि।
दर्शन शांति फेलाव ॥ मारां० ॥ ७ ॥

---

१०२ महावीर स्वामी (मु० अहमदाबाद)

(राग—मथुरा मां खेल खेली आव्या हो कहान?)

वीरतानो खेल खेली आव्या, हो नाथ महावीर राया।
आठे मल्लोने हंफाव्या, हो वीर मुक्ति चांद लाव्या॥
मेरु डगाव्यो इन्द्र नमाव्यो,

देवोने दिलमां भाव्या ॥ हो वीर० ॥
साप उछाल्यो शिशुभय टाल्यो।
भल् भलाओ ने नमाव्या ॥ हो वीर० ॥१॥
पाठक पड्यो, पाम्यो अचम्बो।
इन्द्र स्याथी मणी आव्या ॥ हो वीर० ॥
ममार छोडी दई धन कोडी।
जगे मेदान मा आव्या ॥ हो वीर० ॥२॥
न्याय कापी मोह ने उत्थापी।
चारों कर्मो ने हफाव्या ॥ हो वीर० ॥
केवल पामी नमी जग नामी।
धर्म ना स्तमो रोपाव्या ॥ हो वीर० ॥३॥
अगियार पंडित, शका निडम्बित।
सान माही समझाव्या ॥ हो वीर० ॥
नाटी भगाड्या, कर्मो नमाड्या।

आत्म स्वराज्य जमाव्या ॥ हो वीर० ॥ ४॥
अहमदाबाद मां, सूरीला सादमां,
वीर जिनन्द जी मनाव्या ॥ हो वीर० ॥
मुक्ति महेलमां कमलनी सहेलमां।
चारित्र दर्शन फाव्या ॥ हो वीर० ॥ ५ ॥

---

१०३ श्रीमहावीर स्वामी (मु० पानसर तीर्थ)

(राग—नागर बेलीओ रोपाव)

साची खेती कराव, मारी जीवन वाड़ीमां।
माली तु' बनीने आव,उखर आतम वाड़ी आ।
जे देव गुरु ने धर्म ओलखवा ते खरो मर्म।
एवी शुद्धता वरताव ॥ मारी० ॥१॥
महाव्रत कुवा पाताली, पच्चीस वावो जलशाली।
एवी वावड़ी ओ खोदाव ॥ मारी० ॥२॥

आत्मानी भावना चारे, साथे ए भावना चारे।
एवा बीया रोपाय ॥ मारी० ॥३॥
निरता निरत स्वभावो, वली दानादिकनो ल्हावो।
एवा अकुरा प्रकटाय ॥ मारी० ॥४॥
लहके गुण वृक्षो कोडो, वली उत्तर गुणना छोडो।
एनी पादडीओ ल्हेकाय ॥ मारी० ॥५॥
रूपाला पक्षी डोले 'माहन' 'माहन' एम बोले।
एवा किल्लोल कराय ॥ मारी० ॥६॥
छो पानमर तीर्थना स्वामी, श्रीवीर तु' माली नामी।
तारी मढुली जमाय ॥ मारी० ॥७॥
श्री मुक्ति कमलो खीले, विनय चारीत्र रंगीले।
दर्शन परचो मडाय ॥ मारी० ॥८॥
(वि० स० १९८७ शु० कार्तिक वदी १०)

१०४ श्री स्तवन

(राग—आशावरी)

आ भवजलथी तार, जिणंदजी० ॥ टेर ॥
अगम अगाध अगोचर जलथी, पूरो भर्यो संसार।
पार पमाय न कलथी बलथी, शे पामूं निस्तार ॥१॥
आठ थाह छे आठ करमनां, फेलायो अंधकार।
क्रोध मान मायाना रंगो, प्होंचे न नजर लगार ॥२॥
करवत पूंछडुं जडबां मोटां, सर्वना स्वाहाकार।
राग द्वेष वे मोटा मगरो, दरियो डोले अपार ॥३॥
मारुं जीवन नाव अटूलुं, मोजानो पड़े मार।
गोथा खाय ने गावड़ानो डर, केम ते पामे पार ॥४॥
प्रभु मलियो वाहोश सुकानी, तेथी कर्यो पोकार।
चारित्र दर्शन दीवा दांडी, ए साचो आधार ॥५॥

१०५ अठारह दोष मुक्त स्तवन

(राग—तु ही देव साचो मलियो)

जिनदेव सचा स्वामी,

मुझे नाथ मिला गुण धामीरे॥टेर॥

करे सेनना आलम सारा, जिसमें है गुण अपारा।

जिसमें नहीं दोष अठारा,

जो आत्म स्वरूप का कामीरे। जि० ॥१॥

सब दान लाभ उपभोग, वीरज शक्ति और भोग।

नहीं पाच विघन का योग,

जिसको अतराय न आमी रे। जि० ॥२॥

नहीं विमोह अरति हसना, नहीं दुगञ्छा की घटना।

नहीं शोक नींद नहीं डरना,

जो मुक्ति पुरीका गामी रे। जि० ॥३॥

नहीं राग द्वेष मिथ्यात, अज्ञान दशा उत्पात।

नहीं अविरति की कोई बात,
नहीं काम कला की हरामीरे। जि० ॥४॥
यूं दोष रहित जिन स्वामी, चारित्र पूरण अनामी।
हरदम दर्शन की सलामी,
देवेन्द्र पूज्य शिव गामी रे। जि० ॥५॥

---

१०६ महावीर स्वामी प्रभुता

(राग—छे अगम अपार प्रभु तुम्हारी रचना)

छे अगम अपार, प्रभु तुम्हारी प्रभुता ॥ टेर॥
केवल ज्ञान भोगी, अद्‌भूत विश्वयोगी।
सर्वज्ञ श्रीकार। प्रभु. ॥१॥
देखे जगत् चराचर, भावो यथार्थ सुन्दर।
गुण पुंज उदार। प्रभु. ॥२॥
निज तत्व योग उलसे, अक्षय चारित्र विलसे।

कर्यो कर्म सहार। प्रभु ॥३॥
सात्विकता अमाप, निज शक्ति रूप आप।
अतराय न धार। प्रभु ॥४॥
मुक्ति कमल पराग, चारित्रपूर अथाग।
दर्शन आधार। प्रभु ॥५॥

---

१०७ महावीर स्वामी

(राग—छे आगम अपार प्रभु तुम्हारी रचना)

छे अगम अपार, प्रभु तुम्हारी प्रभुता ॥ टेर॥
सर्वज्ञ सर्व दर्शी, चारित्र सुद्ध फरसी।
चल योग धीकार। प्रभु ॥१॥
पूर्व्येश योग खाणी, पात्रींश गुण वाणी।
सम भाव विचार। प्रभु ॥२॥
अनेक ने उधार्या, अनेक जीव तार्या।

कर्यो कर्म संहार । प्रभु. ॥३॥
आतम रमण योगी, निजतत्व स्वाद भोगी ।
चिद्धन भंडार । प्रभु. ॥४॥
तीर्थेश दोष मुक्त, परमात्म तेज युक्त ।
दर्शन आधार । प्रभु. ॥५॥

---

१०८ श्री महावीर स्तुति

सर हरर खलतल धसग् छब छब,
नवण जल क्रीडा मणो ।
खण खणण तोड त्रोड तणक टन् टन्,
घोष कलशाओ तणो ॥
सुर संघ नाचे छणण छुम छुम,
रणण झुं झुं जय करो ।
ए वीर विभुनो जन्म उत्सव,जगतनुं मंगल करो ॥१॥
पिपि पीव् पुपू पूं तणण तिती,

भणण भु भ्रु वागता।
धप रणणण खल थल तडाक् धीं धीं,
धड़ाक् धू ध्रू गाजता॥
जय जय सुनन्दा जयउ भद्रा,
जयउ स्वतीश्र थल धरो।
चोवीश जिननो दीक्षा उत्सव, शांति सद्‌गुण पायरो॥२॥
गम सारि धपनी तु तिणि तू,
वीणा वागे सुस्वरे।
धा धा नतत् धीं धपम धों धों,
देव वाजा अनुसरे॥
स्याद्वाद नय निक्षेप भगी,
द्रव्य गुणनो सागरो।
श्रीवीर वाणी बोध महुनो, कर्म मल दूरे करो॥३॥
कड कडद् भुस् कडडाक् करी,
मड्‌वीर भैरवचूरतो।
धम धम अवानं वाजतो,
जिन-भक्त पड्‌चा पूरतो॥

चारित्र दर्शन विघ्न भंजन,
धर्म रक्षा तत्परो ।
मणिभद्रजी कल्याण माला, संघ ने कंठे धरो ॥४॥

---

१०६ चौवीशी स्तवन

(राग—बनजारो, घनघटा भूवन रंग छाया, नवखंडा)

चोवीश जिणंद जयकारा
प्रभु अधम उद्धारण हारा ॥टेर॥
वृष लञ्छन वृषभ जिणंदा ।
जिन अजित अजित गुण वृन्दा ॥
संभव शम रस दातारा ।
अभिनन्दन अभिव्रत चारा ॥ चो० ॥१॥
सुमति सुमतिना दाता ।
प्रभु पद्‌म पद्‌म पद राता ॥
शुभ पार्श्व सुपार्श्व उदारा ।
प्रभु चन्द्र चन्द्र शितधारा ॥ चो० ॥२॥
सुविधि शिव सुविधि दाखी ।

शीतल शीतल पद साखी ॥
श्रेयास श्रेय कर नारा ।
वासुपूज्य पूज्य तपचारा ॥ चो० ॥३॥
जिन विमल, विमलता सोहे ।
श्रीअनन्त अनन्त गुण मोहे ॥
जिन धर्म धर्म पति प्यारा ।
जिन शान्ति शान्ति करनारा ॥ चो० ॥४॥
कुंथु कुस्थान निवारे ।
जिन अर भवअरति वारे ॥
जिन मल्लि मल्ल मद मारा ।
मुनि सुव्रत सुव्रत क्यारा ॥ चो० ॥५॥
नमिनाथ नमे सुर इन्दा ।
शुभ नेम नेम शिवनन्दा ॥
पारस सम पार्श्व विचारा ।
महावीर वीर प्रभु प्यारा॥ चो० ॥६॥
चौवीस जिणंद दिल धारा ।
चन्दन पूजन उपचारा ॥

चारित्र चरण आधारा ।
जिन दर्शन भव निस्तारा ॥ चो० ॥७॥

---

११० जिन प्रतिमा स्तवन

(राग—अहिंसा को डंका आलम में)

जिनप्रतिमा जिन समान ही है,
बतलाया श्रीजिनआगम में ।
उनकी तनमनसे भक्ति करो,
फर्माया श्रीजिनआगममें ॥ टेर ॥
हैं नाम स्थापना द्रव्य भाव,
ये सत्यचार चउ स्थानक में ।
दस सत्य भेद भी मान्य कहे,
दसवे ठाणे में ठाणांग में ॥ जि० ॥१॥
नंदीश्वर के अंजन गिरि मे,
बावन गिरि मे, सिद्धालय में ।
ऋषभादिक शाश्वत बिंब चैत्य,
फर्माया चौथे ठाणांग में ॥ जि० ॥२॥

चारण मुनि चैत्य को वदत हैं,
रुचक गिरि में नन्दीश्वर में।
बीसवा शत नव्वें उद्देश में,
भगवती जी पाचवें आगम में ॥ जि० ॥३॥
अरिहंत चैत्य अरिहत और,
साधु हैं रक्षक आलम में।
इनका भगवती दूसरे शत में,
चमरेंद्र ने शर्ण लिया मन में ॥ जि० ॥४॥
सत्रह भेदो से ज्ञाता में,
प्रतिमा पूजे श्री जिन घर में।
करे नमुत्थुण यू द्रौपदी भी,
परकाश करे निज आतम में ॥ जि० ॥५॥
पर तिर्थी ग्रहिंत जिन चैत्य और,
कुदेव प्रणाम का सोगन है।
आनंद का भी सम्यक्त्व पाठ,
अधिकार उपासक आगम में ॥ जि० ॥६॥
अरिहंत चैत्य को वंदन हो,

सोगन हो पर के वंदन में।
यूं अंबड़ परिव्राजक बोले,
व्रत में उववाइ उपागम में ॥ जि० ॥७॥
माणावक में जिन दाढ़ा है,
ऋषभादिक चारों शाश्वत हैं।
मणि पेढग मे जिन प्रतिमा हैं,
रायपसेणी सुर साधन में ॥ जि० ॥८॥
रायपसेणि में पुष्पमाल,
शुभ चूरण वसन चढ़ावत हैं।
सूरियाभ करे सत्रह पूजा,
है पाठ नमुथ्थुण का अन्त में ॥ जि०॥९॥
जिन दाढ़ा हैं सभी सुर गण को,
सन्मान्य अर्च्य सत्कार्य पने।
मंगलकारी कल्याणकरी,
फरमाया जीव अभिगम में जि० ॥१०॥
अब और पीछे क्या श्रेय सही?
क्या कृत्य क्षमा शिव कारण है?

इस भाति विजय ने प्रश्न किया,
सुरलोक में देव समागम में ॥ जि० ॥११॥
यू उत्तर है शत एक आठ,
जिन प्रतिमा हैं जिन दाढा हैं ।
ये श्रेय मोक्ष के कारण हैं,
दिखलाया जीव उपागम में ॥ जि० ॥१२॥
जिन भक्ति धर्म मन में धर के,
सुर पति जिनदाढा को लेकर ।
वर गन्ध माल्य से पूजत हैं,
यों जम्बू द्वीपकी आलम में ॥ जि० ॥१३॥
विन रत्न लिये जिन घर जाना,
किन्तु अलक्रम से जाय नहीं ।
उन मुनि श्रावक को दंड दिया,
श्री कल्प छेद महा आगम में ॥ जि० ॥१४॥
स्त्री चित्र वाले उपाश्रय की,
साधु को मना दशकालिक में ।
अतएव ध्यान का हेतु है,

जिन प्रतिमा श्री जिन भुवन में जि० ॥१५॥
मन्दिर कर्ता श्रमणोपासक,
अच्युत सुर लोक को पाता है।
इत्यादि प्रतिमा पाठ बड़े,
सुलझाये बत्तीस आगम में ॥जि० ॥१६॥
है वहुत इशारा ज्ञानी को,
उत्सूत्र कथन भव वर्धक है।
शाश्वत अशाश्वत चैत्य नमें,
मुनि दर्शन पाठ समागम मे ॥ जि० ॥१७॥

---

१११ श्री गौतम महावीर सम्वाद

(राग—लवींग केरी लाकड़िये, रामे सीता ने मार्या जो)

पावापुरीमां विज्ञान घनना, गौतमे वाद मांड्या जो।
तेने जीती चेलो करीने,
वीरे गणपति मान्या जो ॥ टेर ॥
वीर तुम्हारे बोलड़ीये में, सगा संबंधी छोड्या जो।

सगा संबधी छोड्या तो तुम्हें,
मुक्ति शु मन जोड्या जो। पा ॥१॥
वीर तुम्हारे वोलडीये में, जैनी दीक्षा लीधी जो।
जैनी दीक्षा लीधी तो तमें,
मोक्षनी वाट लीधी जो। पा ॥२॥
वीर तुम्हारे वोलडीये में, सघला भोग वाम्या जो।
सघला भोग वाम्या तो तुम्हें,
मुक्ति सुन्दरी पाम्या जो। पा ॥३॥
वीर तुम्हारे वोलडीये में, चेला चाटी कीधा जो।
चेला चाटी कीधा तो तुम्हें,
मुक्तिना रस पीधा जो। पा ॥४॥
वीर तुम्हारे वोलडीये में, चारित्र दर्शन ओढ्या जो।
चारित्र दर्शन ओढ्या तो तुम्हें,

मोक्षपलंगे पोढ्या जो । पा. ॥५॥
गु० विक्रम सम्वत् १६६१ आश्विन अहमदाबाद

---

११२ श्री गौतम स्वामी

(राग—सै साचा बंदा तेरा—चाल)

हुँ सांचो शिष्य तमारो
प्रभुजी पट्टो लखी द्यो मारो ॥ टेर ॥
लावु' लेखण लावु' शाही, लावु' कागल सारो।
मुक्ति पुरीनु' राज्य लखावु',
मुजरो मानो मारो रे। हूं. ॥१॥
सगां संबंन्धी सर्व तजी ने, आपनी सेवा कीधी।
मात्र एटली आश पूरोने,
जींदगी सोंपी दीधी रे। हूं. ॥२॥
अनार्य आर्द्रक पापी-अर्जुन माली उदायी राज।

शुं कयुं नालक अईमते के,
आप्यु शिवनु राज रे। हू ॥३॥
मरुाती आदि नृप पुत्रो, थाय सात सो सिद्ध।
तो शुं हुं पण मुक्ति न पामुं,
में शी भूलज कीध रे। हू ॥४॥
गोशाले लेग्याने मुकी, आपने पीडा कीध।
बीजपुर पाक वहोराने रेवती,
तेने निजपद दीध रे। हू ॥५॥
चन्दनबाला बाकूल आपी, धरे मुक्तिनो ताज।
श्रेणिक पत्नी त्रेविश शिवपद,
चौदमो नारी समाज रे। हू ॥६॥
अष्टापद पर हुं जइ आव्यो, पदरमो अनगूत।
तेने पण ते मोक्षमा स्थाप्या,
प्रभु न्याय अद्भूत रे। हू ॥७॥

गौतम गणधर महा मुनिवर, मोक्षतान लयलीन।
शाँति पामे वीर वचन थी,
दर्शन पाठ अदोन रे। हूं. ॥८॥
वि० सं० १६८४ वसन्त पंचमी, कुल्पाक तीर्थ।

---

११३ श्री गौतम स्वामी (मु. कुंडलपुर तीर्थ)
(राग—भैरवी, रामकली, आज अनुपम दिवाली)

गौतम नाम समरिये
सुमन जन ? गौतम नाम समरिये॥ टेर॥
पृथ्वी सुत वसुभूति नंदन, गौतम कुल अब तरिये।
इन्द्र भुति छे नाम मनोहर,
हइड़े निश दिन धरिये। सुमन.॥१॥
वीर वजीरजी ज्ञान सुकानी, षड् दर्शन रूप दरिये।
अष्टापद जइ तापस तार्या,

अगुठ लब्धि उच्चरिये । सुमन ॥२॥

जन्म सुहायो गुब्बरगामें, केवल पावा नगरीये ।
महसेन दीक्षा शिक्षा शिव पद,
वरवैभार सुगिरिये । सुमन ॥३॥

महा मंत्रज नाम ए गौतम, जपता जलनिधि तरिये।
नहीं दु ख मरणे मरिये कदापि,
नहीं दारीद्र थी डरिये । सुमन ॥४॥

गौतम नामे भवमोह हरिये, आत्म भाव सवरिये ।
कर्म जभरिये बान्ध्या छुटे,
उत्तम कुल अवतरिये । सुमन ॥५॥

धन वडगावमा श्रीजिनमदिर, वदन पूजन करिये ।
गणधर मन्दिर गौतम चरणा,
देवी ने दिल ठरिये । सुमन ॥६॥

निज दीक्षा दिन यात्रा करता, निज आत्म उद्धरिये ।

चारित्र पद कज दर्शन साधी,
मुक्ति बागमां फरिये । सुमन. ॥७॥

---

११४ श्री गौतम स्वामी (कुंडलपुर वड़गांव)

(राग—भैरवी, अथवा–'आज अनुपम दिवाली')

गौतम नाम समरना,
निशदिन, गौतम नाम समरना ॥टेर॥
वसुभूति नन्दन है गुण सुन्दर,
पृथ्वी मात कूंख रतना ।
इंद्रभूति श्री गौतम गोत्री,
मानों मंगल गहना ॥ निश. ॥१॥
वीरविभु के आदिम गणधर,
अमृत सम है वयणा ।
शासन नायक मन्त्री ध्यानी,

धारे तप जप चरणा ॥निश ॥२॥
अष्टापद की यात्रा कीनी,
किया तापस तप भरना ।
अंगुष्ठ से अमृत पिलाया,
टारा तापस का मरना ॥ निश ॥३॥
वीर विभु ने शिवपद पाया,
हुआ गौतम का ठहरना ।
'वीर वीर' यू नाम जाप से,
किया करमका झरना ॥ निश ॥४॥
केवली गौतम तत्व प्रकाशे,
इन्द्र पूजित जस चरणा ।
स्वर्ण कमल में बैठे स्वामी,
क्या करू उनका वरणा ॥निश ॥५॥
श्री वडगाव में भव्य जिनालय,

जिन मूरत दिल हरना।
पास में स्थापित गौतम मंदिर,
शोभित है गुरु चरणा ॥ निश.॥६॥
उन्नीस से छयासी फागुण की,
तेरश कृष्ण की धरना।
चारित्र दर्शन प्रेम से पाया,
गणधर चरणों का शरणां ॥निश. ॥७॥

---

११५ श्री गौतमाष्टक (इंद्रवज्रा वृत्तम्)

(कर्त्ता—श्री देवानन्द सूरीश्वरजी महाराज)

जो विप्र गौतम गोत्र पृथ्वीमात के सुत रत्न हैं।
वसुभूति नंदन चौद विद्या युक्त वादि रत्न हैं॥
सुर असुर मानव राज पूजित इंद्रभूति शुभमना।
उन पूज्य गोतम स्वामीसे ही, सफल हो मन कामना १

श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र से, त्रिपदी-पदो को सुन कर।
क्षण में बनाई द्वादशांगी, बीज बुद्धि धार कर ॥
था चौदह पूरब-ज्ञान इसमें, श्रुत सागर स्थापना।
उन पूज्य० ॥ २ ॥
तीर्थेश श्री महावीर ने, कल्याण पथ हेतु कहा।
श्री सूरि मन्त्र पवित्र गौतम, नाम से मशहूर रहा ॥
सूरीश इसका जाप करते हैं, हटाकर भ्रामणा।
उन पूज्य० ॥ ३ ॥
जिनका पुनित ही नाम लेकर, जाय मुनिवर भ्रामरी।
लावे सही जल पान अनर, अय प्रासुक गोचरी ॥
पावे सदा सत्कार पद सन्मान, जय यश नामना।
उन पूज्य० ॥ ४ ॥
रवि किरण के आधार से, जो अष्टापद गिरिपर गये।
वहां चैत्य में चौबीश प्रभु को, भाव से वंदन किये ॥

ज़ब वज्र स्वामी जीव के, मिथ्यात्व की की वासना।
उन पूज्य० ॥ ५ ॥
उस तीर्थकी तल हट्टीमें ही, तपसी को प्रतिबोध कर।
अक्षीण लब्धि से सभी को, क्षीर दान से तृप्त कर॥
तप का कराया पारना, पाई जगत में नामना।
उन पूज्य० ॥ ६ ॥
साधार्मिकों की भक्ति करना, धर्म यह प्रख्यात है।
मय दक्षिणा ही भोज्य देना, न्याय भी विख्यात है॥
अतएव तपसी को किया, केवल्य का पहिरामना।
उन पूज्य० ॥ ७ ॥
श्री वर्धमान जिनेंद्र, निष्कर्मा बने मुक्ति गये।
जिन्हें प्रधान ही मानकर, उस स्थान में स्थापित किये
देवेंद्र ने उत्सव किया, सुर वधु लेवे भामना।
उन पूज्य० ॥ ८ ॥

त्रैलोक्य मत्रज बीज है, परमेष्टि का भी बीज है।
विज्ञान ज्ञान का बीज है, जिनराज का भी बीज है॥
जिनका शिवकर नाम जग में,दुःख का करे सामना।
उन पूज्य० ॥ ९ ॥
जो शुद्ध विनय विवेक से, इसको सदा प्रात: पढे।
वो सूरि देवानद दर्शन, भक्त सुख बल से बढे ॥
ध्याता सुगौतम नाम से, हो पुनित तन वानी मना।
उन पूज्य० ॥ १० ॥

---

११६ गणधर भजन

(राग—चालो सुणिए रे २ मधुरी जिनवाणी)

अमें सुणशु रे,अमे सुण शु रे,मधुरी जिनवाण।टेर
समो सरणमा बैठा प्रभुजी, उपदेशे श्रीकार।
चोत्रिश अतिशय पात्रिश वाणी,

वली विलसे गुण चार ॥ म०॥१॥

वीरजी फेड़े इन्द्रभूतिना संशय शल्य ते वार।
संशय हरी एक एक बनावे,
त्यां गणधर अगिआर ॥ म० ॥२॥

अग्नि भूतिजी वायु भूतिजी, अव्यक्त सुधर्म धार।
मंडित पुत्र मौर्य अकंपित,
अचल भ्राता गुणकार ॥म०॥३॥

श्री मेतार्य तथा प्रभासा, गणपति ए निरधार।
वास क्षेप थी स्थापे अनुज्ञा,
गणधर रचे अंग बार ॥ म० ॥४॥

वीर वचन थी वीरति प्रगटे, थाय सफल अवतार।
चारित्र ज्ञान ने दर्शन साधी,
पामीशुं भव पार ॥ म० ॥५॥

---

११७ कदम्ब गणधर (मु० कदम्बगिरी तीर्थ)

(राग—वहालु वतन मने वहालु वतन)

कदम्ब स्वामी ने करू नमन ॥ टेक ॥

मोटुं तीरथ श्री शत्रुंजय,
ढूंक मनोहर आनन्दघन ॥ क० १ ॥

गई चौवीसी माहे प्रगट्या,
चौवीश जिनवर शांति सदन ॥ क० २ ॥

चौवीशमा श्री सम्प्रति नामे,
थया तीरथ पति धर्म रतन ॥ क० ३ ॥

तेहना गणधर कदम्ब स्वामी,
अहीं पधार्या अति प्रसन्न ॥ क० ४ ॥

एक करोड मुनिओं नी साथे,
अहीं थी पहुँच्या सिद्धि भुवन ॥ क० ५ ॥

कदम्बगिरि ट्रकनी उपर,

सुन्दर शोभे स्वामी चरन ॥ क० ६ ॥
भेट्या तीरथ जीवन पावन,
आज स्वीकार्युं स्वामी शरण ॥ क० ७ ॥
चारित्र सेवा दर्शन देवा,
कदम्ब स्वामीनां कर्यां कवन ॥ क० ७ ॥

---

११८ श्री सिद्ध स्तवन

(राग—मालकोश, प्रभु ? तुंहीं तुंही)

करो शुद्ध सोहं, शुद्ध सोहं सुद्ध सोहं जाप रे।
अभेद भावे आतमा, परमात्म रूप प्रकाश रे ॥टेर॥
शुद्ध केवल ज्ञान आतम, परम दर्शन मान रे।
सौख्य अव्याबाध निशिदिन, चरण क्षायिक जाण रे
स्थिति अक्षय शुद्ध आतम, अनामिपणुं धार रे।
अगुरु लघु गुण शुद्ध आतमा, पूर्ण वीर्य विचार रे २

आठ गुण समूह जगमा, शुद्ध आतम रूप रे।
कर्म बाध्या गुण आठे, ए विभाव विरूप रे ३॥
जे विभावे करे रमणता, ते संसारी ठाम रे।
दूर करे पर भाव ने ते, शुद्ध आतमराम रे ४॥
श्री चारित्र ने ज्ञान शुद्धि, अन्य शुद्धि छेक रे।
एम आठे शुद्ध धाना, जीव सिद्ध छे एक रे।

---

११६ नवकार मंत्र

(राग—खमाच, ताल पंजाबी ठेका)

महावीर प्रभु मुख से यूं फरमावे. महा० ॥ टेर
चौदे पूरव का सार जगत में, पांच पद को बतलावे १
श्री अरिहंता सिद्ध महंता, सूरि वाचक मुनि भावे २
दिल मे ध्यावे जिव्हा से गावे, देह से भक्ति मनावे ३
मन में अडसट्ठ अक्षरों धर के, जो परमेष्ठीको ध्यावे ४

वो सिंह झंझीर भूत अनल भय, पशु विष रोग हटावे
अधि उपाधि व्याधि विडारे, परमानंद पद पावे ६
भवजल तारण सुखोंका साधन, मंत्र बड़ा ही कहावे ७
चारित्र शुद्धि कारण जपते, दर्शन शिवफल लावे ८

---

१२० पंच परमेष्ठी स्तवन

(राग—जिनराज नाम तेरा)

परमेष्ठी ! नाम तेरा राखु हमारे घट में ॥ टेर ॥
जो चार कर्म दमता, पूरे अभिष्ट समता,
अरिहंत चर्ण नमता ॥ राखु० ॥१॥
आठों ही कर्म जारा, भगवंत सिद्ध प्यारा,
करूं ध्यान मैं तुमारा ॥ राखु० ॥२॥
नायक संघ भुवन में, आचार्य ध्याया मन में,
झुकता हूं श्री चरन में ॥ राखु० ॥३॥

सिद्धात में प्रवीण हो, पर को भणाने लीन हो,
वाचक प्रभु ! अदीन हो ॥ राखु ० ॥४॥
सभी जीव के हो भ्राता, मुनि धर्म ध्यान ध्याता,
कुगति से शुद्ध त्राता ॥ राखु ० ॥५॥
सभी ऋद्धि सिद्धि धाम, नहीं ओर का ही काम,
इन पाच को प्रणाम ॥ राखु ० ॥६॥
परमेष्ठी पाच पद हैं चारित्र शिव धरत हैं,
दर्शन मगल करत है ॥ राखु ० ॥७॥

---

१२१ नवपद स्तवन

(राग — जिनराज नाम तेरा०)

श्री सिद्धचक्र पद को, राखु हमारे दिल में ॥टेर॥
अरिहंत अंतरगी, बारह गुणा के सगी ।
श्री पूज्यतम सुसगी ॥ राखु ० ॥ १ ॥

गुण अष्ट युक्त रक्त, निज गुण में आसक्त।
श्री सिद्ध कर्ममुक्त ॥ राखु० ॥ २॥
छत्तीस गुणवान, सूरि कनक समान।
है संघ के सुकान ॥ राखु० ॥ ३॥
पच्चीस गुण पाठक, हैं नील वर्ण धारक।
अज्ञान के निवारक ॥ राखु० ॥ ४॥
सत्ताइस श्रीकार, गुण कृष्ण वर्ण धार।
साधु दशा स्वीकार ॥ राखु० ॥ ५॥
अड़सट्ठ शुद्धि कारा, दर्शन सफेद धारा।
शिव पंथ का मिनारा ॥ राखु० ॥ ६॥
पच्चास और एक, गुण श्वेत रंगी नेक।
है ज्ञान सद्विवेक ॥ राखु० ॥ ७॥
वर श्वेत भेद सित्तर, जो दुष्ट कर्म नस्तर।
चारित्र है अनुत्तर ॥ राखु० ॥ ८॥

बारह भेद भारी, तप श्वेतवर्ण धारी।
है सौख्य मोक्षकारी ॥ साधु० ॥ ९ ॥
यह सिद्धचक्र मंडल, शिवराह है अविकल।
दर्शन विलास उज्वल ॥ साधु० ॥१०॥

---

१७२ आरती (राग—पीलू)

जय जय आरती जग सुखकारी,
चौबीसे जिनवर उपकारी ॥ जय० ॥ १ ॥
पहिली आरती च्यवन मनाया,
चार गति का भ्रमण चुकाया ॥ जय० ॥२॥
दूसरी आरती जन्म जो धारा,
नारी नरक में हुआ उजियारा ॥ जय० ॥३॥
तीसरी आरती दीक्षा लीनी,
आत्म स्मरण की साधना कीनी ॥ जय० ॥४॥

चौथी आरती केवल पाया,
समवसरन में संघ बनाया ॥ जय० ॥५॥
पांचवीं आरती सिद्ध स्वरूपी,
हुए चिद्घन अमर अरूपी ॥ जय० ॥६॥
पांचों आरती प्रेम से कीजे,
पांचवीं गति दर्शन पाईजे ॥ जय० ॥७॥

---

१२३ श्री मंगल दीपक (राग—पीलू)

मंगल दीपक मंगल पाया,
आरती से शुभ आयु बढ़ाया ॥मं०॥१॥
भरत सगर श्रेणिकजी राया,
कुमारपाल ने मंगल गाया ॥मं०॥२॥
आरती करके पाप कटाया,
आनंद उत्सव खुशी मनाया ॥मं०॥३॥

धन्य दिवस घडी आज मनाया,
ज्यू दिवाली पर्व सुहाया ॥मं०॥४॥
चारित्र मगल हम घर पाया,
दर्शन मगल सघ में सवाया ॥मं०॥५॥

---

१२४ माणिभद्र महावीर (मु० मगरवाडा)

(स्तुति स्रगधरा)

वीरेन्द्र: स्वच्छमूर्ति जिनपति चरणा
ऽऽसेविना सिद्धिदाता ।
आरूढो दिव्यनागं मुनिपति विमला-
ऽऽनद सेना प्रवीण ।
शु ढाभ्यो दिव्यरूप सुरमणि-सुरभी-
कल्प—द्रुम्मै. समान. ।
वीर: श्री माणिभद्र प्रदिशतु कुशलं

बुद्धिसिद्धी समृद्धिं ॥ १ ॥

छंद

गुण गातां गर हट्ट, अन्न धन कपड़ो आवे ।
गुण गातां गर हट्ट, प्रगट घर संपत पावे ॥१॥
गुण गातां गर हट्ट, राजमान भोज दिरावे ।
गुण गातां गर हट्ट, लोक सहु पूजा लावे ॥२॥
सुख कुशल आशा सफल, उदय कुशल एणी परे कहे
गुण माणिक ना गावतां, लाख लाख रीझां रहे ३।

---

१२५ श्री माणिभद्र वीर आरती

(मु० मगरवाड़ा)

जय वीर ! जय वीर ! ॥ टेर ॥

पहिली आरती मणिभद्रजी, हाथी असवारी ।
जैन धर्म की झंडी, फिरकावे सारी ॥ १ ॥

दूसरी आरती मणिभद्रजी, डमरो ध्वज राजे ।
दो धर्मों के पोषक, क्रोड वदन गाजे ॥ २ ॥
तीसरी आरती मणिभद्रजी, वर अंकुश धारी ।
तीनों रतन की रक्षा, करे त्रिशूल धारी ॥ ३ ॥
चौथी आरती मणिभद्रजी, भुवनपति देवा ।
चारों संघ की सारे, सुख संपत सेवा ॥ ४ ॥
पाचवीं आरती मणिभद्रजी, दर्शन गुण पाया ।
हेम विमल सूरि की, आणा दिल लाया ॥ ५ ॥

---

१२६ आदिनाथ (मु० भावनगर)

(राग—नागर वेलीओ रोपाव)

मने मुगटो पहेराव, माता साथे लइने जा ।
उतरासन्न पहेराव, मने देरासर लईजा ॥ टेक ॥
श्री आदीश्वर प्रभु प्यारा, परमेश्वर जय जयकारा ।

एनां दर्शन कराव, माता० ॥१॥
जेनी सेवामां रहीए, तो कदिए न दुःखी थईए।
एनां चरणे नमाव, माता० ॥२॥
जे पूजक ने सुख आपे, निज समो वड़ियो करी स्थापे
एनी पूजा कराव, माता० ॥३॥
जेने सेवे सुर राजा, नर नारी अने महाराजा।
एनी आंगीओ रचाव, माता० ॥४॥
श्री भावनगर नगीना, चारित्र ने दर्शन लीना।
एने घरमां लई आव, माता० ॥५॥
(वि० सं० गु० १९९१ चै० सु० १)

---

१२७ श्री पल्लविया पार्श्वनाथ (मु. पालनगर)
(राग—सदा संसारमां सुख दुःख सरखा मानी लइये)
पल्लविया पार्श्व प्रभु, तारी मूरति छे सुहानी।

चनी अमृत स्यारी, पूरण भारी आ मजानी। टेक।
प्रहलादन राजा थयो, आबूनो परमार।
कनक प्रतीमा पार्श्वनी, देखी बन्यो गमार॥
धर्म नो द्वेष धारी, गाली नाखी ते सुनानी।
भर्यो भंडार, तेखी चार, कीधी ऐ हेवानी। पल्ल-१
कोढ़ थयो रोगी थयो, पाम्यो दुख अपार।
काढी मुक्यो राज्य थी, सहुको घे फटकार॥
सुणाने शीलधवल सूरिने निजनी कहानी।
प्रतिमा पार्श्वनी करी पूज्य, बोले सूरि ज्ञानी। पल्ल. २
निम्ब भराव्यु आपनुं, मनमोहन दिदार।
भक्ति भावे पूजता, पाम्यो राज श्रीकार॥
बसावी पूर पालनपुर, मन्दिरमा मजानी।
प्रतिमा नाथनी धरी ने, पूजे ते राज रानी। पल्ल. ३
गम्भत् चार सुर्मातरे, कर्यूरि ने हाथ।

मोटो उत्सव मांडी ने, वेसार्या जगनाथ ॥
पूजा रंग रोल, चढ़े मण सोल, सुपारी सदानी ।
दशे दिशमां, प्रभुनी आ, अमर कीर्ति गवाणी ।पल्ल ४

मुक्तिनगर सुहामणु', मांहे कमल उद्यान ।
वच्ये विनयना चोकमां, चारित्र महल प्रधान ॥
विराजो न्याय शाली ने मृगेन्द्र महित ध्यानी ।
सुदर्शन ज्ञान, न्याय प्रधान, वल्लभ ने उजाणी । पल्ल ५

संवत ओगणिसेबाणु १९९२ मां,
पोष दसम भृगु धूर ।
पार्श्व प्रभु ने प्रणमता, प्रगट्या पुण्य प्रचुर ॥
सूरि श्री सोम हीरे, ए पुजी प्रतिमा पुरानी ।
चारित्र अभंग, दर्शन रंग, शिरे आण मानी । पल्ल. ६

---

१२८ श्री पचासरा पार्श्वनाथ (मु पाटण)

(राग—चिंतामणी पार्श्व प्रभु अर्ज मारी आ स्वीकारो)

पचासरा पार्श्व प्रभु, दासनी अरदास धारो।
दयालु देव देवा, दीन दु:खी ने उगारो ॥टेक॥

(साखी)

आठमो ने नी सालमा, वस्तुं नगर धनवान।
वनराजे करी स्थापना, सूरि देवेन्द्र प्रमाण ॥
पूजे वनराज माता रूपसुन्दरी देव प्यारो।
सूरिशीलगुण कृपाथी, कर्यो आतम सुधारो ॥१॥

(साखी)

लाख चौरासी भटकता, दीठा दु:ख अपार।
शरणे आव्यो आपने, पाम्यो प्रमोद प्रचार ॥
अनेकोने उगार्या, पास ? आपी हाथ तमारो।
बचावो नाथ, आव्यो आज, तारक ? मारो वारो ॥२॥

(साखी)

पाटणमां भेटया प्रभु, भय भंजन सुखकार।
चतुर क्रांतिथी दीपता, पुण्य योग जयकार॥
प्रभु मुक्ति कमलमां श्री चारित्र नो छे सितारों।
सुदर्शन ज्ञान, न्याय प्रमाण, वल्लभ वात धारो॥३॥

---

१२६ पार्श्वनाथ (मु० चारुप, तीर्थ)

(राग—कदमों की छाया में)

चारुप मंडन पास, चरणों मां करूं वंदना॥टेक॥
वामा जाया, सुर हुलराया,
आपो ज्ञान प्रकाश रसीला नृप नंदना। चा.॥१॥
आषाढ़ी श्रावके, बिंब भराव्यु,
वर्षोंवीत्यां खास, मूर्ति छे मन रंजना। चा.॥२॥
प्रकट प्रतापी, देव प्रभावी,

पुरो मननी आश, संसार भय भंजना। चा ॥३॥
नेहे निहाली, ल्योने उगारी,
सेवकनी अरदास, स्वीकारो मोह गंजना। चा ॥४॥
दर्शन दाया, तुम गुण गाया,
चारित्रनी सुवास, म्हेकावो गुणमडना। चा ॥५॥

---

१३० पार्श्वनाथ (मु० सेरीसा तीर्थ)

(राग — नागर वेलीओ रोपाव)

मोहन पार्श्व कुमार, आव्यो तारे दरबार।
मारा दुःखडा निवार, मारो मुजरो स्वीकार। टेक।
वामा देवीना जाया, दिक कुमरिए हुलराया।
त्रण भुवनना सिरदार, आव्यो० ॥१॥
पुरुषा दानी विख्याता, जग सार्थवाह जगत्राता।
मेरे साथ पर्षदा बार, आव्यो० ॥२॥

समकित सत्य जाणयु, तारूं स्वरूप पिछाण्युं।
तारा वचन रसमा, तरबोल थइने न्हाऊं। तारी ३
ससार सुख अकारूं, ससारमा तुं तारूं।
मायाना फेंकी चश्मा, तारी समीपे आऊं। तारी. ४
मोरंया पार्श्व दीठा, मान्या मोहनजी मीठा।
तु ही तुंही ए रटना, अहलेक हुं मचाऊं। तारी ५
मुक्ति कमलना गधे, आत्मा चञ्यो तरगे।
चारित्र ज्योति झटमां, दर्शन दिले जगावुं। तारी ६

---

१३२ श्री पार्श्वनाथ (मु० अहमदावाद)

(राग—वहालु वतन मने वहालु वतन)

मन्या तारक प्रभु पार्श्व जिनद, ॥ टेक ॥
वामा जाया, सुर हुलराया,
इच्याकुमागर पूनम चन्द । म. ॥१॥

अमरी भमरी, नाटक नाचे,
नमे सुरासुर चोसठ इंद । म. ॥२॥
नगर शेठना, भव्य भुवनमां,
सुन्दर मूरत भरी आनन्द । म. ॥३॥
बाणुं वर्षे भेट्या हर्षे,
पूनम कार्तिकी नयना नंद । म. ॥४॥
चारित्र दर्शन, गुणानुं फरसन,
प्रभु भक्ति नो पीवो मकरंद । म. ॥५॥

---

१३३ अहिंसा—पद

अहिंसा का तत्व जगत भर में,
बतलाया वीर जिनेश्वर ने ।
सभी भारत जीव को विश्व प्रेम,
सिखलाया वीर जिनेश्वर ने ॥ टेक

१६६ गुरु स्तुति

(ॐ आनन्दघन–ए राह)

ॐ ह्रीं श्री गुरु देव समरीयें,
श्री गुरु चारित्र विजय समरीये ।
घेलाशा सुत सुभगानंदा,
उपकेश वंशमां पूनम चन्दा ।
सुख कंदा गुरु दिलमां धरीये, ॐ ॥१॥
शांति सुधाकर विद्या सागर,
वीर वचन विकास दिवाकर ।
नमी अघहर अज्ञान ने हरीये, ॐ ॥२॥
विनय विजय गुरु शिष्य सनुरा,
दर्शन ज्ञान ने न्याय थी पूरा ।
तत्व चतुरा सद् गुण वरीये, ॐ ॥३॥
अशरण शरण ने पर उपकारी,

पतितउद्धारी महाव्रत धारी।
दर्शन वंदन पूजन करीये, ॐ ॥४॥
श्री यशो विजय जैन गुरु कुल,
गुरुगुण गातुं बालक मडल।
कर जोडी चरणे शिर धरीये, ॐ ॥५॥

१७० दीक्षा—उत्सव (मु० नंदीश्वर द्वीप)

(राग—धन्य सो जिन वाणी सुणाय जायगी)

दीक्षा उत्सव करे, सुर सु दरी मली ॥ टेक ॥
भगवई अंग, श्री ठाणांग, जंबू द्वीप साखे।
तथा ज्ञातांग, जीव उपांग श्री जिनराज भाखे ॥
रति कर रूप, ने दधि मुख अंजन चार पाखे।
नंदीश्वर नाम, जिनेश धाम, बावन चैत्य दाखे ॥
माने पुण्य फली, सुर सु दरी मली ॥ दिक्षा० ॥१॥
प्रवचन पीठ, यथाय दृष्ट, ६४९८ बिराजे जिनेन्द्र।
करे उत्सव, करोडो देव, पूर्व मा शक्र इन्द्र ॥
उत्तरनी दिश, ईशानी ईश, दक्षिणे चम्मरेन्द्र।

बलि पश्चिम, दधि मुख सीम, लोकना पाल ईन्द्र ॥
पूजे हली मली, सुर सुंदरी मली ॥ दीक्षा० ॥२॥
नंदीश्वर द्वीप मांहे-शाश्वता, जिन-ज्यां बिराजे।
वेणु वीणा ददामा दुंदुभि, भेरी अवाजे ॥
तिणि तिणि तुं तिणि तिणि तुं सारंगी सुर राजे।
दगड़ त्रों त्रों, धप मप ध्रों, तता धी, ढोल गाजे ॥
छाजे शोक दली, सुर सुंदरी मली ॥ दीक्षा० ॥३॥
षड्ज गंधार वृषभ, पंचम आलाप भरी।
ग्राम त्रण सात स्वरो, मूर्छना इकवीस धरी ॥
मनोहर सुरपुरी, तान ने वितान धरी।
विनय शृंगार धरी, मुग्ध सुंदर रूप करी ॥
देह कुसुम कली, सुर सुन्दरी मली ॥ दीक्षा० ॥४॥
इकशत आठ, देवो साथ देवी नाच नाचे।
रचे बत्रीश, नाटक गीत, घुंघरु धारी राचे ॥
तता थै ताल रणि रणि चालू रचि भ्रमतार माचे।
सुदर्शन चंग, अभिनय रंग, अमरता साची जाचे।
नमे लली लली, सुर सुंदर मली ॥ दीक्षा० ॥५॥

गहुंली संग्रह

१७१ वीर उपदेश (गहुंली)

आज प्रभु महावीर पधारे, राजगृही उद्यान ।।टेर।।
गणधर श्रुतधर ज्ञानी लब्धिधर तपसी ध्यानी ।
चौद सहस मुनि लार पधारे, तीर्थपति भगवान् ।।
परिषद् बारह आवे, महावीर प्रभु फरमावे ।
दुर्लभ नरभव पाया साधो, दानशील तप ध्यान ।।
तीनों रत्नों धारो, चारों ही कषाय को टारो ।
विरति भाव दिल में ठाकर, अपना कर कल्यान ।।
अहरकाल परमावे, प्रभु के गुन दिल में ठावे ।
चेलना रानी गहुँली करके, करे गान ईकतान ।।
केई चारित्र स्वीकारे, श्रावक के व्रत को धारें ।
दर्शन पाकर ज्ञान अदाकर, करें प्रभु का ध्यान ।।

१७२ गुरु दर्शन (गहुंली)

(राग—बलिहारी २ जगनाथ)

बलिहारी २ गुरुराज हो जाउं तोरी ।
गुणवंता गुरुजी, उपदेश दीजिएजी ॥
चौराशी फिरते आया, गुरुजीका दर्शन पाया।
मिला गुण रत्नोंका भंडारी । गुरुराज० ॥१॥
तारण तरण खेवैया, संसार पार करैया ।
मेरी नैया को लीजे तारी । गुरुराज० ॥२॥
सुखका तरीका दीजे, दुःखो का नाश कीजे ।
दिजे विज्ञान हमें भारी। गुरुराज० ॥३॥
धन्य धन्य तारक वानी, चारित्र ज्ञान प्रमानी।
कीजे सफल अवतारी । गुरुराज० ॥४॥

---

१७३ दीक्षा (गहुली)

(राग—नहीं छेडु वांछित लुंगा)

मारू मन मोह्यु दीक्षामा, मने गमे न बीजे क्याय।
सहु जीव थी मैत्री धरनी, नहीं जीभने छुटी करवी।
चोरी चारे परिहरनीं रे, मने० ॥ १ ॥
आतमानो गुण अभोगी, निर्मम नि सग अरोगी।
ए रूप बनुं हु योगी रे, मने० ॥ २ ॥
ससार मुसाफिर खानु, जे आवे तेने जवानुं।
सुकृत साथे रहेनानु रे, मने० ॥ ३ ॥
सहु साजन महाजन आवो, श्री गुरु जी ने पधरावो।
करि गहुली गुरुने वधावो रे, मने० ॥ ४ ॥
प्रगटे जो पुण्य अकूरा, अंतराय तुटे जो पूरा।
तो बनशुं साधु शूरा रे, मने० ॥ ५ ॥
छे तीर्थ पतिनी वाणी, साची चारित्र कमाणी।

ए ज्ञानी नी उजाणी रे, मने० ॥ ६ ॥

---

१७४ तपस्या (गहुंली)

(राग—केसरिया थाशु' प्रीत करीरे)

गुरु आशिष आपो, करिए तपस्या शुभ भावशु' ।
जगदीश्वर अलबेला स्वामी, बारसोदिन तपतपिया
खटमासी तप वीरे कीधु', कर्म खपावन रसिया रे ॥
धन्य धन्नो अणगार वखाण्यो, शालिभद्र तपशूरा ।
ढंढण ऋषिए अन्न न लीधु', कर्या कर्मना चूरा रे ॥
छट्ठ छट्ठ तपथी पारणु' कीधु' गणधर गौतमस्वामी
अंगुठ वरसे अमृत लब्धि चरण नमु' शिर नामीरे ॥
बारह वर्ष नां आंबेल करता, जगच्चंद्र सूरि राजा ।
तपा तपा कही चरणों पूजे, उदेपुर महराजा रे ॥
ए बल आपो अमने गुरुजी, अमे पण तप आदरीए।

आप चरण मां जीवन अर्पी,अणाहारी पद वरीएरे ॥
वर्षी तप मुक्तावली मासी, वेमासी अट्ठाई ।
वर्धमान ओली आगम तप,करशुं शक्ति वडाई रे ॥
हौंश घणी तप आराधनमा, अतराय निर्झरिए ।
चारित्र दर्शन ज्ञान न्यायथी,झटपट शिव संचरिए ॥

---

१७५ जिनवाणी (प्रशसा गहुली)

(राग—अब तो जिनवाणी)

अब तो जिनवानी सुनाइ जायगी ॥ टेक ॥
महाव्रत गुप्ति, पाच समीति, धारी श्री गुरूजी ।
जिनाज्ञा ठान, ज्याज समान, तारक श्री गुरूजी ॥
गुण मत्तावीश शात दमीश,ज्ञानी श्री गुरूजी ।
हमारे पुण्य उदय से, पधारे हैं गुरूजी ॥
ज्ञान ध्यान की ज्योति जगाई जायगी ॥अब०॥

जिनागमतत्व श्रावकव्रत, भेदो को सुनावें।
कहें नव तत्व, जीवन सत्य, सुधी राह बतावें ॥
प्रभु गुरु धर्म के सत मर्म, पावन्दी जचावें।
अविरति धूप, मिथ्यात कूप, की पीड़ा मिटावे ॥
सुन के जूठ बुद्धि हटाई जायगी ॥अब० ॥
भरी नयचंग, सातो भंग, चउ निक्षेप ठानी।
प्रमा विचार, तत्व उदार, तर्क गमा प्रमानी ॥
शिवं कर स्थान, देव विमान, देने वाली मानी।
चारित्रका रंग, ज्ञान अभंग, ऐसी वीर वानी ॥
संघ मे बड़ी खुशी मनाई जाय गी ॥अब० ॥

---

१७६ मिथ्यात्व त्याग

छोटी मोटी भगिनी हो मिथ्यात्वपना छोड़ दो
प्रभु वीतरागी, गुरुजी त्यागी, जैन धरम रागीरे ।

ये तीन तत्व पाये समर्थ, वे ही परम सत्य रे ॥
कुगुरू प्रसग पापका अग, उसका न करो संगरे।
समकित जावे इज्जत जावे, शील मलीन थावेरे ॥
तावीज गन्डा धागा अडंगा,कहा से लगाया फदारे।
शीतला सातम,नाग की पाचम,तीजा पूजन भ्रमरे॥
कर्म प्रमाने सुख दुख पावे, ने भोग नहीं जावे रे।
दृढ़ समकीति है शुभ नीति, लहे धन सुत रतिरे ॥
मिथ्या प्रवृत्ति, नरक की दूति,उसको हणिजे जूक्तिरे
चारित्रवानी ज्ञानी ने मानी,परम सुखों की खानीरे॥

---

१७७ धर्म का आमंत्रण (नोता)

आश्रो सजनी आश्रो जी,
काई धरम करो सुखकार। सजनी आश्रोजी।
जिन मन्दिर में आश्रोजी काई पूजो प्रभु हितकार

गुरु वंदन को आओ जी कांई स्वीकारो व्रतवार
गुरु उपदेश में आओजी कांई अपना करलो सुधार
सामायिकमें आओजी कांई रोको मनके विकार
प्रतिक्रमण में आओ जी कांई काटो कर्म के तार
देशवगाशी में आओजी कांई रोको आश्रवद्वार
पौषधव्रत में आओजी कांई बनो भावी अनगार
साहमिवात्सल्य मेंआओजी कांईबनो शासनसरदार
चारित्र पुर में आओजी कांई खेलो आनंद बहार
मोक्षमहल में आओ जी कांई ज्ञान का है दरबार

---

१७८ जिनागम (गहुंली)

जिनवाणी गुनखानी श्रुतको लाखों प्रणाम ॥टेर॥
आचारांग श्रीसूत्रकृतांग,
श्रीस्थानांग श्रीसमवायांग।

भगवती सूत्र सुनाम श्रुत० १
छठा ज्ञाताधर्मकथांग,
सातवा उपासक दशांग ।
श्री अंतकृत दशांग ॥ श्रुत० २
अनुत्तर उपपाती दशांग,
प्रश्नव्याकरण है दशवा अंग ।
श्री विपाक अभिराम, श्रुत० ३
बारवा दृष्टिवाद प्रमाण,
चौदह पूरव उसमें जान ॥
भविक जीव विश्राम, श्रुत० ४
अंग ये बारह आगम मान,
तीन जगत का करें कल्यान ।
सारे सब ही काम, श्रुत० ५
गुरु में जो जिनवानी पावे,

चारित्र भक्ति दिलमें लावे ॥
ज्ञानी ले शिव धाम, श्रुत० ६

१७६ गुरु आमंत्रण (गहुंली)

(राग—आवो यशोदाना कंत)

आवो आवो गुणी गुरुराज, विनति स्वीकारो रे।
करो पावन अमपुर आज, अमने सुधारो रे॥
गयो काल अनादि अनंत, भमता संसारे रे।
नवि मलिया श्री गुरु जहाज, तो कोण तारे रे॥
धन्य धन्य दिवस घड़ी आज, सुरतरु फलियो रे।
मारां सिध्यां सघलां काज, गुरुयोग मलियो रे॥
जिनवाणी वदो महराज, दूर्गति कापो रे।
अम मोह चीरी शिरताज, सन्मति आपो रे॥
गुरु ! आप कृपा जो होय, समकित वहीशुं रे।

धरी श्रावकना व्रत बार, निरते रहीशुं रे ॥
अम पुण्य उदय जो थाय, चारित्र लईशुं रे ।
गुरु आणा वही अम उर, शिवपुर जईशुं रे ॥
पगले पगले रचु आज, गहुंली रुपाली रे ।
गुरु चारित्र दर्शन ज्ञान, नीत्य दीवाली रे ॥

---

१८० गुरु प्रवेश (गहुंली)

(राग— धनाश्री)

भले पधार्या गुरुराज, गुणवन्ता गुरुजी ? भले०
कमल विजय सूरि नाम सुहकर, सुणता चित्त उल्लास
साधु सघ सहीत पधारी, पुनित कर्यु पुर आज
धन्य भाग्य अम तुम दर्शन थी,सफल थया सहु काज
अधिक अद्भुत शक्ति वधज्यो, करजो अम उपकार
जैन धर्म प्रतिपाल बनीने, कर्या अनेक उपकार

चारित्र पदने श्रावक प्रार्थे, कष्ट करो सहु ठार
ज्ञानानन्द थी गुरु ने विनवे, भले पधार्या शीरताज

---

१८१ विहार (गहुंली)

(राग—भेखरे उतारो राजा भरथरी)

विहार करी गुरुजाशो नहीं, करी वियोगी आ वारजी
आप वियोग न संघ सहे, नयणें आंसुनी धारजी ॥ वि
उपाश्रये जतां आवतां नर नारीना वृंद जी
उपदेशामृत पाइ ने, टाल्या कर्मना फंद जी ॥ वि
ज्ञान बोध रूड़ो आपता, हित शखामण साथ जी
ते हवे कोण सुणावशे. ज्ञानधर्मनी वातजी ॥ वि
धर्म स्नेह लगाड़ी ने, रागी कर्या जनमनजी
तरछोड़ी शुं चाल्या जशो, नहीं तजी ए भगवंतजी
दुखमां धीरज आपतां, सुखमां देता सुबोधजी

पाप करम थी वारता कया करीये आप शोधजी ॥ त्रि
जीतना परिग्रह पालना, अष्ट प्रवचन मातजी
खाडा धार पर चालवुं, धन्य धन्य गुरु अवतारजी
चारित्र पद वंदन करी, गुण गाया गुरुराजजी
ज्ञानानद थी वीनवुं, फरी देज्यो धर्म लाभजी ॥ त्रि

---

१८२ विहार (गहुली)

(राग—धुलेवा नगरमा पधार जो रे)

वहाला गुरु ? फरी फरी दर्शन आपजो रे—टेक
जावुं जावुं तमे ना करो रे, अमदिल दुःख अपार रे।
धर्मलाभ कोण आपशेरे, कोण समज दातार रे ॥
ज्ञान अमृत कोण छाट शेरे, हणशे कोण मिथ्यात रे॥
न्याय नये भरी देशनारे, कोण सुणावशे वात रे
आप होते अम सघमारे, मोटो हतो आधार रे

आप वियोगे संघमांरे, चाली छे आंसुनी धार रे
आपे आनन्द करावियोरे, ते कदी नवि विसराय रे
अमे सौबालक आपनां रे,करजो निश दिन सहायरे
आप कृपानां सागरु रे, आज ते दीठा न क्यांय रे
कुटुम्ब मोहमां ना फस्या रे, ते शुं ? परना थाय रे
कुशल मंगल मार्ग मां रे. ए अम अंतिम आशरे
चारित्र दर्शन ज्ञाननीरे, रहेजो हैये सुवासरे

---

१८३ जीव भ्रमण

(नेमजीरे कारण बन मे चाली हो, राजुलियां)

चौराशी लख योनी फिरता आया,
हो मुनिवरजी ? महाव्रतधारी गुरुवरजी।
नसीबसे हमें आज मिले गुरु राया,हो मुनि० १
पृथ्वी और अपकाय में सातों लाख, हो मु०

आग वायु में फिरा सातों लाख, हो मुनि० २
वनस्पति प्रत्येक में भी दश लाख, हो मुनि०
साधारण में फिरा चौदह लाख, हो मु० ३
निकलेन्द्रिय मे दो दो और दो लाख, हो मु०
नारक तिर्यंच देव में चारों लाख, हो मु० ४
चौदह लाख मनुष्य योनि में गमाया, हो मु०
ऐसे आठ कर्मों ने हमें फसाया, हो मु० ५
इस चक्कर मे हमें बचाकर लीजे, हो मु०
सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र दे दीजे, हो मु० ६
श्री चारित्र गुरु का शरणा लीना, हो मु०
मेरक ज्ञानने जन्म सफल अब कीना, हो मु० ७

---

१८४ गुरु वंदन (गहुंली)

(राग—चालो सखी वंदन ने जइए–)

सखि चालो गुरु वंदन जइए,
वंदन करीने पावन थइए ॥टेर॥
संसारनी जाल सवि तोड़ी,
मद माया ममता मोह मोड़ी।
गुरु वयणे मन दइए जोड़ी॥ सखि० ॥१॥
खट् द्रव्यनां भावो रूपालां,
वांचे सूत्र अरथ रढ़िआला।
श्रवणें धरी थइए उजमालां॥ सखि० ॥२॥
गुरुजी गुण ना भरीया दरीया,
पुराये भविकमन गागरियां।
जे जीले ते भवजल तरीयां॥ सखि० ॥३॥
शांत दांत त्यागी तपचारी,

सद् ज्ञान ध्यान सयम धारी।
गुरु गुण ने गाइए दिल धारी ॥ सखि० ॥४॥
गुरु गुण जपता नन्यो रागी,
परमारथ मा प्रीति जागी।
केवल ज्ञान स्वरूपनी रढ़ लागी॥ सखि० ॥५॥

---

१८५ अग्यार अग (गहुंली)

(राग—छत्री फलक)

मारे शरण भलु गुरुराज, अमृत देशना झरे रे।
चालो सखि ए सुणवा काज, मधुरी देशना झरे रे।
महावीर वाणी रसपूर, अमृत देशना झरे रे।
गणधरे गू थी भरपूर मधुरी देशना झरे रे॥
त्रिपदीनो करे विस्तार, अमृत देशना झरे रे।
शासन सिद्धात उदार, मधुरी देशना झरे रे॥

अंग पहेलुं आचारांग, अमृत देशना झरे रे ।
आचार कथन गुणधाम, मधुरी देशना झरे रे ॥
सूत्रकृत बीजुं छे नाम, अमृत देशना झरे रे ।
षट् दर्शनवाद आराम, मधुरी देशना झरे रे ॥
स्थानांगजी सूत्र उदार, अमृत देशना झरे रे ।
दश स्थान तणो अधिकार, मधुरी देशना झरे रे ॥
समवायांग सूत्र श्रीकार, अमृत देशना झरे रे ।
आगम हुन्डी निरधार, मधुरी देशना झरे रे ॥
प्रश्न भगवती गोयम स्याम, अमृत देशना झरे रे ।
प्रभु उत्तर द्ये अभिराम, मधुरी देशना झरे रे ॥
ज्ञाता धर्म कथा चरित्र, अमृत देशना झरे रे ।
वदे साधु आचार पवित्र, मधुरी देशना झरे रे ॥
उपासक दशा सिद्धांत, अमृत देशना झरे रे ।
दश श्रावक व्रत वृत्तांत, मधुरी देशना झरे रे ॥

अतकृतजी सूत्रमा जाण, अमृत देशना झरे रे।
मुनि मोक्ष गयानी पीछाण, मधुरी देशना झरे रे ॥
अनुत्तरोपपाति प्रमाण, अमृत देशना झरे रे।
अनुत्तर विमान प्रयाण, मधुरी देशना झरे रे ॥
प्रश्न व्याकरण मदबोध, अमृत देशना झरे रे।
आश्रव संवरनो बोध, मधुरी देशना झरे रे ॥
विपाक अग्यारमुं सार, अमृत देशना झरे रे।
कर्म उदय नो अधिकार, मधुरी देशना झरे रे ॥
अग अर्थ ते समकित मान, अमृत देशना झरे रे।
चारित्र-ज्ञान बहुमान, मधुरी देशना झरे रे ॥

---

१८६ नंदीसूत्र (गहुली)

(राग—वदना वदना वदना रे)

साभलो सामलो साभलो रे,

वेनी ? नंदीजी सूत्र ने सांभलो ॥टेर॥
गुरु सुणावे नवनव भावे,
संघ समूह आवी मलो रे ।
गुरुमुख हरखे अमृत वरसे,
मानो अणमोली ए पलो रे ॥ वे० ॥१॥
जिनवर आगम तत्त्व समागम,
सुणता पुण्य पासा ढलो रे ।
जगदानंदी सूत्र ए नंदी,
पांचे ज्ञानोनी छे कलोरे ॥ वे० ॥२॥
सुत्र सरवैयो पाप रवैयो,
समकीत नवनीतनो नलो रे ।
देववाचकनी रचना चकनी,
सूत्र पीस्तालीशमुं कलो रे ॥ वे० ॥३॥
ज्ञान ए मोती जगमग ज्योति,

ज्ञान विना लोक आधलो रे।
लखी लखावी भणी भणावी,
दई द्यो नरकने आगलो रे ॥ चे० ॥४॥
सुणी सुणावी ज्ञान वधावी,
तोडो करमनी साकलो रे।
गुरुनी वाणी गुणनी खाणी,
सुणी मुक्तिमा जइ मलो रे ॥ चे० ॥५॥
ज्ञानने पामी निष्न ने वामी,
मोह सुभट दलने दलो रे।
ज्ञाननी अरजी ज्ञानिनी मरजी,
मघ मरल आशा फलो रे ॥ चे० ॥६॥

---

१८७ जिनागम (गहुंली)

(राग—तप करीए समता राखी घटमां)

मनमोह्यु जिनागम वाणीमां.........टेर

स्याद्वादनो भर्यो खजानो, वीरे दीधो ल्हाणीमां।
सप्तभंगी नी अदभूत रचना,
चार निक्षेप प्रमाणीमां ॥ म० ॥१॥

सातनयोनी अनुपम शैली, मीन रमे जेम पाणीमां।
आठकर्मनी अटपटी घटना,
मोह विजयनी उजाणीमां ॥ म० ॥२॥

सक्रिय अक्रिय रुपी अरुपी, षट् द्रव्योनी निशानीमां
धर्म अधर्मनो पंथ प्रकाश्यो,
शुभ कर्मोनो कमाणीमां ॥ म० ॥३॥

जिन आज्ञा विणजीव संसारे, फरे बलद जेम घाणीमां
विरति विनानु मानव जीवन,

रेडफ्यु आ भूलथाणीमां ॥ म० ॥४॥
पुन्य पुण्य प्रतापे लावे, जैन धर्म गुण खाणीमां।
चारित्र दर्शन ज्ञान न्याय थी,
घरी मंत्री शिवराणीमा ॥ म० ॥५॥

---

१८८ गुरु चंपक फुल की (गहुली)
(राग—वाजो वाग्यां ने वली वागशे)
वेनी ? चपो मोरियो आगणे,
वेनी खीन्या रे अद्भूत फूल।
गुरुजी ने थाडिये ॥१॥
वेनी कोण ते चापो मोरियो,
वेनी कोण ते खीन्यां फूल । गु ॥२॥
वेनी मन ते चापो मोरियो,
वेनी गुरुनी खीन्यां फूल गु ॥३॥

वेनी महक महकेछे शीलनी,
वेनी तप जप रंग अमूल। गु. ॥४॥
वेनी पांच महाव्रत पांदड़ी,
वेनी ध्यान पराग प्रफुल्ल। गु. ॥५॥
वेनी ए फुल मांहे मोहियुं,
वेनी भवि मनडुं बुलबुल। गु. ॥६॥
वेनी सोहागण करे गहुँली,
वेनी चारित्र ज्ञान सुमूल। गु. ॥७॥

१८९ अपनी दशा

(राग—महावीर स्वामी ? मैं क्या २ सुनाऊं)

गुरुजी हमारी ऐसी दशा है,
क्या २ सुनाऊं कैसी दशा है। टेर
तप करने पर भूख सतावे,
गपसप में वो पास न आवे। गु. १

दान धरम में कुछ न लगाना,
नाटक फेल में लच्मी गमाना। गु २
साधर्मिक की भक्ति भूलाई,
विधर्मीयो से प्रीत लगाई। गु ३
प्रभु पूजा का समय न पावे,
अखबारों से याद न आवे। गु ४
सामायिक में अलकस भारी,
दिल्लगी करने में तैयारी। गु ५
व्याख्यान वाणी में नींद निमारी,
होवे तमासा में हुशियारी। गु ६
प्रतिक्रमण की क्या करे बातें,
बाग में प्यारी ग्वतम होए रातें। गु ७
जप माला में मन न टीकावे,
मोतियन की माला दिल डावें। गु ८

मानते हैं हम सत जीव धर्म,
पर ये होवे उलटे कर्म । गु. ६
ऊंधी सूज ये हमसे हटाओ,
गुरुजी ? ऐसी बूटी पिलाओ । गु. १०
दिजिए चारित्र ज्ञान सीतारा,
हमारे जीवन में हो उजियारा । गु. ११

---

१९० संसार गहुंली

(राग—गजल-कव्वाली)

कहे सखि ? क्यां गुरुवर छे,
गुरु विण ना गमे मुझने ॥ टेर
अनादि कालथी भमतां, गुरु त्यागी नहीं मलिया।
सह्यां दुःख नर्क निगोदे, दुःखो शा वर्णवुं तुझने ॥
विकल इंद्रियनां दुःखो, हृदय ने कमकमावे छे।

गति तीर्यंचनी पीडा, वितक शागा वित्या मुफने ॥
अरे नरजन्म पण लाध्यो, विषय तृष्णा धनाशामा।
गयो एल्येज जन्मारो, व्यसन निंदादमा मुफने ॥
नथी गमतुं हवे घर आ, नथी गमती हवे माया।
मरीने राख थावानुं, शरीरना मोह शा मुफने ॥
जगत् जंजाल ने छोडी, धरू जिननामनी अहलेक।
मले गुरुजी मने एवा, वमारे मोक्षमा मुफने ॥
मले महावीर सम योगी, अचल चारित्र वरध्यानी।
गुरु ज्ञानी दहे पापो, गुरु एवा मले मुजने ॥

---

१६१ गीतारथ गुरु गहुली

(राग—धाज दगी, धारा २ पाम्नी मने मलीयारे)

गुरुजी गुरुराज गीतारथ मलीयारे,
मागमनना मनोरथ फलिया।

गुरु पांच महाव्रत पालेरे,
पांचे आश्रवने नीत्य खालेरे।
पांच सुमति ने अजुआले ॥ गुणी० ॥१॥
गुरु पांच आचारे पूरारे,
पांच इन्द्रिय दमता शूरारे ।
करे चार कषाय नां चूरा ॥ गुणी० ॥२॥
मन वाणी ने वश करता रे,
वहम चर्य गुणो ने धरता रे ।
त्रण्ये गुप्ति ने अनुसरता ॥ गुणी० ॥३॥
गुरु मधुकर जीवन गालेरे,
चार विकथा प्रमादने टाले रे ।
अड कर्मना पूंजने वाले ॥ गुणी० ॥४॥
गुरु जिन वाणी उपदेशे रे ।
जिन वरनी आणामां रहशे रे

ते जल्दी शिव सुख लेशे ॥ गुणी० ॥५॥
जे गुरु वरना गुण गाशे रे,
ते चारित्र सपद पाशे रे ।
वली ज्ञानी ननी शिव जाशे ॥ गुणी० ॥६॥

---

१६२ गुरुवंदन (गहुली २७ गुण)

गुरुजी कृपा अवतार, भविया ॥ गु० ॥
नमो नमो अणगार, भविया ॥गु०॥ टेर ॥
पाच महाव्रत सुधा धारे, पालें शुद्ध आचार ॥भ०
रात्रि भोजन दोष को टारे, लावे शुद्ध आहार ॥भ०
छैंकाय जीवकी रक्षा करते, करते पर उपकार॥भ०
पाचो इन्द्रिय को वश करके, पावे भव की पार॥भ०
संतोष पडिलेहण चित्त शुध्धि, सयम शम आचार
योग त्रयी के दूषण टारें, सुधारे ससार ॥भ०॥६॥

परिषह उपसर्गों को सहतैं, सत्तावीश गुणधार ।।भ०
ऐसे गुरु के चरन में आकर, करलो अपनी सुधार ।।
गुरु वानीको दिलमें ठानो, काटो करम की कतार
चारित्र दर्शन को अपना कर, बनो ज्ञान सरदार ।।भ०

---

१९३ गुरुकृपा महात्म्य (गहुंली)

(राग—श्री कहुँ कथनी मारी राज०)

गुरुजी दैवी सीतारा, राज गुरुजी सीतारा ।
भव्य जीवोंका आधारा, राज गुरुजी दैवीसीतारा टेर
गुरु है दीपक गुरु है नैया, गुरु है अमृत धारा ।
गुरु के चर्ण में आय बसे जो, उसका होवे निस्तारा १
गुरु से ज्ञान मिले जीवों को, गुरुसे होय सुधारा ।
नगुरा इस संसार में मारे मारे फिरे बेचारा ।।२।।
चौर भी हुए शासन नायक, श्री श्री प्रभव कुमारा ।

शय्यभव भी पूजित स्वामी, गुरु कृपा के द्वारा ॥३
गुरु कृपा से भीक्षुक पावे, सम्प्रति नृप औतारा।
नलीनी गुल्म में देव बना है, वाल अवंती कुमारा ॥
ऐसी कृपा हो हम पर गुरुजी होवे हमारा उद्धारा।
चारित्र पाकर ज्ञानी हो हम पावे सुख अविकारा ५

---

१६४ ज्ञान दीपक (गहुली)

(राग—नजर टुक महेर की परक-कव्वाली)

गुरजी ! ज्ञान का दीपक, हमारे दिलमें चेताओ टेर
अदा अज्ञान ने घेरा, जगत सारे में अंधेरा।
लगाते हैं सभी फेरा, गुरुजी ज्योत ले आओ ॥गु०
फिरे हम घेल में हरदम, इसी संसार घानी में।
हटा कर ये सभी पघन, हमारे नैन खोलाओ ॥गु०
कोई बने इन्द्र इन्द्राणी, कोई राजा बना रानी।

सभी अज्ञानी हैं प्राणी, गुरु ? सद्ज्ञान बतलाओ ॥
जहां अज्ञान है जालीम, वहां संसार है सालीम ।
उसी अज्ञान को हरके, जीवन में ज्ञान प्रगटाओ ॥
विजय चारित्र गुरुवरजी, यही है ज्ञानकी अरजी ।
गुरु और शिष्य नाते से, ज्योति से ज्योत मिलाओ ॥

---

१९५ जयणा गहुंली

(राग—भूलो मत वलमा नेमि श्याम, है पूर्व भव प्रीति)

जयणा से कीजे सघरे काम यह जिन धर्म की रीति
जीवों की दया धारो दिल में करो सब से प्रीति ॥
मरना है सब को सच्ची बात, पर कौन जाने मीती ।
पहिले से ये तो करलो ठीक, पीछे न रहे भीति ॥
ऐश आराम के काम में, जींदगानी बीती ।
अबतो कुछ करलो आतम ` हरो भवकी भीति

देव पूजन गुरुवंदना, तप जप की नीति ।
स्वीकारो व्रत सब निरतिचार, दिलमें गुप्ति समीति
चारित्र पदके ज्ञानी न कोई, देखो सारी चीति
उनसे ही होगा आत्म कल्याण, सची ज्ञानकी गीति ।

---

१६६ उपाश्रय में आमंत्रण (गहुली)

उपाश्रय में आना बहिन ? उपाश्रय में आना।
गुरुजी के गुण गाना बहिन?उपाश्रय में आना ।।टेर
वीरप्रभु ने फरमाया था, माल कोशका गाना।
गुरु उन आगम को सुनावें,अमृत रस पहिचाना ।।
वीतरागी प्रभु गुरुजी त्यागी,केवली धर्म बखाना।
समकित पाने को तीनों को,अपने दिल में ठाना ।।
पाच अणुव्रत तीनों गुण व्रत,चारो शिक्षा माना।
ये बारेव्रत श्रावक के हैं, इन्हें ले घर आना ।।

पांच महाव्रत हैं साधु के, स्वीकारे जो स्यानां ।
वे ही सिद्धशिला पर पावे, आनंद सुख ठिकानां ॥
विजय मुक्तिगणि शासन राजा, विजय कमलसूरिरानां
विनय विजय चारित्र विजयजी, ज्ञानने दिल में ठाना

---

१६७ उपाश्रय का आमंत्रण

गुरुजी पधार्या पोपालमां रे, आपेछे, अनुपम बोध रे
सलुणी वेन ? वहेला उपाश्रये आवजो रे—
स्नाने करी शुचि देहडीरे, समकित शुचि मन मोदरे
पहेरो साड़ी सुहामणीरे, शील साडी ने ओढरे
धारो घरेणां हेमनां रे, तपजपना धरी ओपरे
रुमजुम रुमजुम झांझरो रे, दूर करो निज क्रोधरे
मोतिमाला कंठे ठवोरे, वाणीमां सत्य प्रमोद रे
तिलक करो निज भालमां रे जिन आणा गुण धोधरे

बाल वचाने लानजो रे, विरतिपणुं धरो गोदरे
द्रव्यने भावथी शोभतारे, थाये दुःख नो रोधरे
चारित्र गुरुने वांदतारे ज्ञाननो होय उद्योतरे

---

१६८ धर्मप्रचार गहुंली

(राग—धन २ वह जग में नरनार, सिधाचल को०)

धन २ दर्शन विजय महाराज,
हमे जैन धर्म दिलाने वाले ।
धन २ ज्ञान विजय महाराज, हमें०
धन २ न्याय विजय महाराज, हमें०
तिन गुरुजी तशरिफ लाये, मेरठ जिला में आये
सुधारा आपने सारा समाज । हमें० १ ।
हमें जैन धर्म समझाया, इन्सान का फर्ज बताया
मिले है तकदीर से गुरु राज । हमें० २ ।

शास्त्रार्थ में पंडित आया, उसने भी शिर निवाया
सुनी जब आपकी ठोस अवाज। हमें ३।
नहीं करते गुरु ! उपकार, नहीं लेते हमें सुधार
नहीं हम होते ऐसे आज । हमें० ४।
श्री सुमति चारित्र मंडल, गुजारिश करें सारा संघ
रहो हरदम सेवक शिरताज। हमें० ५।

---

१६६ धर्मप्रचार गहुंली

(बजादे ३ बंसरी,)

हमारे हमारे हमारे गुरुजी ।
श्रीदर्शन श्रीज्ञान श्रीन्याय गुरुजी ॥
गुरुजी आप पधारे, उपदेश सुनाये प्यारे ॥
गंवार भी सुधारे । बुलंद जैन सीतारे ॥
सीतारे (३) गुरुजी ॥ श्री० १॥

आओ गुरुजी ? आओ। गिरते हमें उठाओ ॥
समार से बचाओ। नुक्से अजीर पिलाओ॥
पिलाओ (३) गुरुजी ॥ श्री० २ ॥
गुरुचरण में ही सारा। सबने अरज गुजारा॥
दिल में हो उजियारा। है आपका सहारा ॥
महारा (३) गुरुजी ॥ श्री० ३ ॥

—तिलोकचन्द्र जैन
श्री सुमति चारित्र मित्र मडल सरधना यू० पी०

---

२०० घडी

(गजल)

अरे घडी? कुछ तो रख शाति, घडाधड क्यों तू चलती है
रसिक व्याख्यान सुनने को जरा क्यों न ठहरती है
भरा ससार दु:खभारी, धर्म है सिर्फ सुख कारी

मिला गुरुराज उपकारी, जिहां सुख शांति मिलती है
गुरु उपदेश देते है वचन शांति का कहते है
सभी सुणनेकों आते हैं, जिहां घड़ी दो निकलती है
नहीं कोइ वात करते हैं, नहीं बालक भी रड़ते हैं
अजब शांति इसीपे है, कटा कट तूंही करती है
सभीचुप है धनी रंका, करे नहीं कोई भी शंका
वजावत है तूंही डंका, श्रवण में विघ्न करती है
इदर मीनीट लगती है, तुही घंटा से भगती है
समय जल्दी खतम करते, शरम तू क्यों न रखती है
सूये नंबर पे पड़ते हैं, गुरुजी मौन धरते हैं
घड़ी को इससे कहते हैं तुंही क्यों जल्दी चलती है
सुधासम वाणी भरती है, प्रशम चारित्र धरती है
विमल दर्शन को करती है, जरा सुन क्यों तू भगती है

२०१ चौमासी चौदश गहुली

(राग—सुनो चन्दाजी ? सीमंधर परमातम पासे जाजो)

सुनो बेनीजी? धर्म करो सुखकारी चौमासा आया।
जो चौमासा में बोता है बारिश होते फल पाता है।।
उसे वर्ष पर्यन्त सुखशाता है ।। सुनो० ।।१।।
मिलती है जिन आगम वाणी ।
और अर्थ विवेचन गुण खानी ।।
गुरु बरसावे अमृत पानी ।। सुनो० ।।२।।
अपने दिल में समकित धरना ।
विरति तप नियम व्रत करना ।।
पहिनो अपने तन शील गहना ।।सुनो० ।।३।।
प्रभु पूजन गुरु वन्दन धारो ।
पौसह सामायिक स्वीकारो ।।
अपने नर जन्म को सुधारो ।। सुनो० ।।४।।

आरंभ समारंभ को टारो।
हील मिल के ज्ञान कथा धारो।
करो दिल में विनय को उजियारो ॥सुनो०॥५॥
प्रभु गुरु चारित्र का गुण गाना।
गहुली कर के दिल बहलाना॥
शुद्ध ज्ञान से शिव भवन जाना ॥सुनो०॥६॥

---

२०२ पर्युषण पर्व की गहुंली

(राग—आवो आवो पालजी मुज मलियारे)

सुनो बेनी ? पर्व पजुसण आयारे,
सब संघ के दिल में भाया ॥ सु० ॥
हर साल में छै अट्ठाईरे, बड़ी भादों की सुख दाईरे।
प्रभुने मुख से फरमाई। सुनो० १
देखेलौकिक पर्व उदाररे, जैन धर्म के पर्व श्री कार।

सन में संवच्छरी सीरदार । सुनो० २
गुरुदेव को वंदन करनारे,जिनवाणी दिल में धरनारे
पाच पावंदी को भिमरना । सुनो० ३
समारभ आरंभ को टारोरे,जीव मारी को भी निवारोरे
और जीवदया दिल धारो । सुनो० ४
सब साधर्मी का वच्छल्लरे,करो भक्ति पूजा नेशल्लरे
हील मिलकर रहो निर्मल्ल । सुनो० ५
नीत्य पडिकमणा दोय, पालीरे,
सवच्छरी सव के साखीरे
मिच्छामि दुक्कड जीवराशि । सुनो० ६
तप अठ्ठम को आराधोरे,नाग केतु की समता साधोरे
त्रिमासे तप धर्म आराधो । सुनो० ७
चैत्य परिपाटी में फिरनारे,प्रभु पूजा उच्छव करना रे
जैन धर्म प्रभावना करना । सुनो० ८

पर्वके आराधक प्रानीरे, करे चारित्र ज्ञान कमानीरे ।
बने सिद्ध आनन्द की खानी । सुनो° ६

क्र० २०३ पर्युषणा दूसरा दिन की गहुंली

(राग—नजर टूक महर की करके)

श्रावक के कृत्य ग्यारह हैं, करें सो सुख पावेगा
सालाना कृत्य कहें गुरुजी करें सो सुख पावेगा
चतुर्विध संघ की भक्ति, तथा साधर्मिकी भक्ति
त्रिविध यात्रा यथा शक्ति ॥ करें° १ ॥
अट्ठाई चैत्य की यात्रा, रथोत्सव तीर्थ की यात्रा
बने यूं त्रिविधा यात्रा ॥ करें° २ ॥
अभिषेक शांति पाठों का, चढ़ारा देव द्रव्यों का
जिनालय में बडी पूजा ॥ करें° ३ ॥
गीतों से रात्रि को भक्ति, परम श्रुतज्ञान की भक्ति

उजमणा भी यथा शक्ति ॥ करें ४ ॥
तीरथ प्रभावना वृद्धि, जीवन आलोयणा शुद्धि
चारित्र ज्ञान की वृद्धि ॥ करें० ५ ॥

२०९ पर्युषणा तीसरा दिन की गहुली
(राग—कुंवर कन्हैया बांसरिया कहां भूल आये)

तुमे प्यारे, बन्धु आओ, मन मध को खिमाओ।
रागद्वेष री बात बनी हो उनके घर चलेजाओ ॥
जाति वैर की वैरवृत्ति को, दिलमें दूर हटाओ
दो हाथ मिलाओ ॥ प्यारे १ ॥
वैनी उदायी राजा ने, चंड प्रद्योत खिमायो
अपराधों की माफी देकर, धर्मी बन्धु बनायो
राना भी बनायो ॥ प्यारे २ ॥
मृगावती चन्दनबालाने, समत खामणा किना
केवल पावर मोक्ष पधारी, आतम सुख में लीना

क्षमापन लाओ ॥ प्यारे ३ ॥
कुम्हार का मिच्छामि दुक्कडं, धोखाबाज़ी हटाओ
मन वाणी काया की शुद्धि, सबसे प्रेम जमाओ
सीना से मिलाओ ॥ प्यारे ४ ॥
चार कषाय को दूर हटा कर, मोक्षपूरी में जाओ
चारित्र ज्ञान की सारंगी से, शास्वत रंग जमाओ
आनंद बढ़ाओ ॥ प्यारे ५ ॥

---

२०५ व्या० १ कल्प सूत्र (बारसा) सूत्र

(राग—अहिंसा का डंका भारत में)

श्रीभद्र बाहु की बानी, श्री कल्पसूत्र गुण खानी ॥टेर
भादों में सूत्रजी लाओ, इज्जत से घर पधराओ।
श्रीसंघ को घर बुलाओ, घरमें आनंद मनाओ ॥
जुलूस चढ़ा कर आओ, गुरुजी के पास ले आओ।

श्रीकल्प सूत्र वहराओ, पूजाभक्ति गुण गाओ
सुनो शुद्धिसे यह वानी, धूप दीपक गहुँली ठानी
उपदेश करें गुरु ज्ञानी, नहीं कोई इस सूत्र के शानी
नौवाचना नौक्षणजानो,दिन पाच में पुरी मानो
श्रीधर्मसारथी मानो, शुरूका व्याख्यान पीछानो
दुसरेंमें लक्ष्मी जी गाया,तीसरे में ज्योतिषी आया
चौथे में जन्म सुनाया, श्रीवीर जन्म दिल भाया
पचम में दीक्षा पाठ, छठे में मोक्ष की बात
तेवीश प्रभु वर्णन सात, आठवें गुरुओ की पाट
संवत्छरी को अतिचंग सुने मूलपाठ इकरग
वो चारित्र ग्रान तरग, पावे शिवमाला सग

चारित्र दर्शन ज्ञान के स्वामी, तीर्थंकर अवतार ॥१३

---

२०७ कल्पसूत्र, व्या० २-३ चौदह स्वप्न

(राग—पनिहारी)

प्रभु आये जब गर्भ में सुनो बेनीजी,
देखें सुपन उदार बेनीजी ।
प्रभु माता उस रात को सु०
देखें चौद श्रीकार बेनीजी ॥१॥
हाथी पहिले सुपन में सु०
दुसरा वृषभ बखान बेनीजी ।
तीसरे स्वप्न में सिंह है सु०
चौथी लक्ष्मी मान बेनीजी ॥२॥
पांचवी माला फूल की सु०
छठा चांद श्रीकार बेनीजी ।

सातवें स्वप्न में सूर्य है सु०
आठवा ध्वज उदार वेनीजी ॥३॥
नवमा चादी का कलश है सु०
दशमा पद्मसर जान वेनीजी ।
ग्यारवा जलधि जानिए सु०
बारवा देव विमान वेनीजी ॥४॥
तेरवा रत्नों का ढेर है सु०
चौदवा अग्नि प्रमान वेनीजी ।
जो देखे इन स्वप्नों को सु०
भाग्यवती वो जान वेनीजी ॥५॥
चौदह स्वप्न से जो हुवे सु०
वो धने श्री जिनचंद वेनीजी ।
टारें चारो संघ को सु०
वरते सुख आनन्द वेनीजी ॥६॥

चौदह रज्जुके लोक में सु०
सिद्ध बने शिरताज बेनीजी।
चारित्र ज्ञान के योग से सु०
पावो शिवपुर राज बेनीजी ॥७॥

---

२०८ कल्पसूत्र, व्या० २ स्वप्न (गहुंली)

(राग—कव्वाली, अरजी तो कर रहा हूँ, चाहे मानो०)

अब स्वप्न पाठी बोले, सुपन का फल यूं होगा। टेर
बेयाली तीस स्वप्न, उनमें से चौद स्वप्न।
पावे जिनेन्द्र माता, सुपन का० ॥१॥
हाती के दांत चार, यूं धर्म चार सार।
तीरथ पति कहेगा, सुपन का. ॥२॥
दूसरा वृषभ स्याना, समकित का बोना जाना।
प्रभुसे ही होना माना, सुपन का. ॥३॥

तीसरे में शेर देखा, प्रभु तीर्थ सिह देखा।
कामादि हाती भागे, सुपन का ॥४॥
चौथे सुपन में लच्मी, प्रभु पावे तीर्थ लच्मी।
वापिक दान होगा, सुपन का. ॥५॥
पुष्पों की माल खुशनो, प्रभुकी भी कीर्ति खुशनो।
शिरो धार्यता भी होगी, सुपन का ॥६॥
छठे सुपन में चद्र, यू स्वामी लोक चन्द्र।
आनन्द कारी होगा, सुपन का ॥७॥
श्री सूर्यसे भांमडलं, ध्वज से ही धर्म ध्वज दल।
धारक जिनेन्द्र होगा, सुपन का ॥८॥
ज्यों स्वप्न में कलश है, प्रभु धर्म का कलश है।
प्रभु लोक पूज्य होगा, सुपन का ॥६॥
ज्यों पद्म का सरोनर, यू ठाने पद्म सुरवर।
प्रभु पद्मचारी होगा, सुपन का. ॥१०॥

ज्यों स्वप्न में रत्नाकर, प्रभु ज्ञान का रत्नाकर।
प्रभु केवली बनेगा, सुपन का. ॥११॥
सु विमान वासी देव, प्रभु की करेंगे सेव।
ज्यों है सुपन विमान, सुपन का. ॥१२॥
ज्यूं रत्न राशि हैगा, यूं रत्न गड़ बनेगा।
प्रभुजी उपदेश देगा, सुपन का. ॥१३॥
निर्धूम अग्नि ज्वाला, भवि जीव शुद्धि माला।
होगी प्रभु कृपा से, सुपन का. ॥१४॥
चौदह रज्जु के उपर, बने सिद्ध कर्म्म हर कर।
यूं पुत्र ईश बनेगा, सुपन का. ॥१५॥
स्वप्नों का फल मिलेगा, सबका कल्याण होगा।
चारित्र ज्ञान गावे, सुपन का. ॥१६॥

---

२०६ कल्प सूत्र वीर चरित्र (गहुली)

(राग—माह वासु पूज्य विलासी च पाना वासी)

भद्रबाहु की वानी,गुणो की खानी वीरचरित्र प्रधान
कल्प सूत्र में ठानी,हृदय में मानी, वीर चरित्र प्रधान
चत्रिय कुंड में सिद्धारथ नृप,त्रिशला रानी सयान
चैत शुदि में तेरश रात को,उत्तरा फाल्गुनी जानरे
हुआ जग उजियारा, हर्ष प्रचारा,प्रभुका जन्म पीछान
छप्पन दिक कुमरी करें मिलकर,सूतिक कर्म श्रीकार
चौसठ इन्द्र करें जन्मोत्सव, मेरु शिखर अतिप्यार
वहा मेरु डिगाया,शक्रसमजाया, अवधियुत भगवान
सिद्धारथनृप हर्षित होकर, करे उत्सव मयदान
बारवें दिन वीरादरी के बीच, भोजन और गुलतानरे
शिशुकोगोद करके,तारिफ करके,नाम रक्खा वर्धमान
आमल की क्रीडा में सुरसे, पावे पदवी वीर

लेखशाला में पंडित के भी, संशय टारे गंभीररे
बडी इज्जत पावे, व्याकरण बनावे,पंडित करे सन्मान
वर्धमान श्री श्रमण व श्रमणे भगवन् श्रीमहावीर
तीनों नाम, प्रभुका भ्राता, नंदी वर्धन धीर रे
सुदर्शना जीजी, चाचा सुपासजी,पत्नी यशोदा मान
सिद्धारथ श्रेयांस यशस्वी, ये पिता के नाम
त्रिशला पियकारिणी विदेहा, ये माता के नामरे
प्रियदर्शनापुत्री, जसवती नाती,दोदो नाम बखान
माता पिताजी स्वर्ग गये तब, करें सचित्त परिमाण
दोय साल तक भ्रात आग्रहसे, त्यागी गृही वर्धमान
लोकांतिक आवे,प्रार्थना सुनावे,बनो शासन सुलतान
प्रभूजी वार्षिक दान को देकर, आये ज्ञात उद्यान
दीक्षा लेकर श्रमण बनें जब, हुआ मनका ज्ञान रे
चारित्र उदारा जयजय कारा चरण में झुके ज्ञान

२१० कल्पसूत्र व्या० ६ महावीर तप,

(राग—पीलु, चेतन शुद्ध दशा अणाहारी)

तप की जय हो तप की विजय हो,
तप धारी प्रभु वीर की जय हो।
बारह साल छै मास व पद्रह,
दिन तक छद्मस्थ काल मनाया॥
उप सर्गों को सहते प्रभु ने,
तप और ध्यान से काल विताया॥त०॥१॥
छैमासी तप और छै मासी,
पाच दिन कम दूसरा माना।
चौमासी नौ त्रिमासी दो,
दोमासी छै व्रत पहिचाना॥त०॥२॥
देढ़ माम तक व्रत दुवारा,
माम ख्मण वारह स्वीकारे।

पक्ष क्षपण तप कीने बहूत्तर,
अट्ठम तप भी बारह धारे ॥ त० ॥३॥
भद्र प्रतिमा बेला तप की,
महा भद्रा भी चार व्रतो की।
सर्व तो भद्र प्रतिमा साधे,
वीर प्रभु दश दिन के व्रतो की ॥ त० ॥४॥
दो सौ उन्तीस बेले कीने,
दीक्षा का दिन एक मिलाया।
तिन सो उनपच्चास दिवस ही,
वीर विभुने आहार पाया ॥ त० ॥५॥
छद्मस्थ वीर ने यूं तप करके,
जगत् को तपका पाठ पढ़ाया।
यह तप करो कल्याण जगत् का,
चारित्र ज्ञान को अति सुखदाया ॥ त० ॥६॥

२११ कल्पसूत्र व्या० ६ गणधरदीक्षा

(गहुली)

(राग—भूलो मत बलमा नेमि श्याम, पूरव भवकी प्रीति)

ऋजुवाली मे कर विहार, केवली वीरजी प्यारे
एकादशी के प्रात:काल, महसेन वन में पधारे
समोसरन बना बीच, बैठे वीर जी प्यारे
पावा पुरी के उद्यान, आवे लोगों सारे
उसी समय सोमील विप्र के घर ब्राह्मण सारे
मिलकर करे वहा यज्ञ, पडित बहुत पधारे
शुरू में इंद्र भूति विप्र, पांच सौ शिष्य हैं लारे
आए प्रभुजी के पास, जो अभिमान के मारे
सर्वज्ञ नाम से करके द्वेष, वहाँ शास्त्रार्थ उचारे
सुनकर वेदो का सचा अर्थ, मन की शंका विडारे
गौतम स्वामी पाकर ज्ञान वीर की दीक्षा स्वीकारे

प्रभु से सुने श्री त्रिपदी सूत्र पांच सो शिष्य भी लारे
गौतम बनाये बारह अंग, गणधर पदवी धारे
अब अग्निभूति वायुभूत व्यक्त सुधर्म पधारे
मंडित मौर्य पुत्र अकंप, अचल भ्रात पधारे
मेतारज विज्ञ प्रभास, आकर संशय टारें
दीक्षा स्वीकारे प्रभु के पास, त्रिपदी सूत्र विचारे
ग्यारह ये गण धार, चौंआली सौ लारे
तीर्थ स्थापन करें वीर, सब जय नाद उच्चारे
चारित्र दर्शन ज्ञान, न्याय को भव्य स्वीकारे

---

२१२ कल्पसूत्र व्या. ६ वीरमोक्ष अधिकार

(राग—श्री श्री सुमति जिनंद जय हो)

श्री महावीर शासन की जय हो।
वीर की जय हो, संघ की जय हो,

जय जिनवाणी रग जय हो ।।टेर।।
तीर्थ प्रतिष्ठा वीर ने कीनी,
ठाने चारो संघ, जय हो।
तीर्थंकर पद तीस वरस तक,
जग उपकार करद, जय हो ।। श्री १
इन्द्रभूति गौतम आदि थे,
साधु चौदह हजार, जय हो।
श्रमणी चंदनवाला आदि,
थी छत्तिस हजार, जय हो ।। श्री २
एक लाख शंख आदि श्रावक,
और उनसट्ट हजार, जय हो।
रेवती आदि श्राविका तीन लाख,
और टारह हजार, जय हो ।। श्री ३
सात सौ साधु केवल ज्ञानी,

चौद सौ श्रमणी संघ, जय हो।
तेरह सौ मुनि अवधि ज्ञानी,
चारसौ वादी वृन्द, जय हो ॥ श्री. ४
पांच सो मन पर्यव को धारे,
श्रुत केवली शत तीन, जय हो।
अनुत्तर में गये आठसों साधु,
शिव विश्रान्ति अदीन, जह हो ॥श्री. ५
सातसों वैक्रिय लब्धि धारें,
खोला मोक्ष प्रयाण, जय हो।
मोक्ष का चौथी साल से प्रारंभ,
तीन पुरुष तक मान, जय हो ॥श्री. ६
पावापुरी में प्रभुजी पधारे,
हस्तिपाल नृप शाल, जय हो।
यहां अंतिम चौमासा ठाना,

उम्र बहोंत्तर साल, जय हो॥ श्री ७
दीवाली की रात के अंत में,
नक्षत्र स्वाति प्रमाण, जय हो।
छट्ठ तपस्वी प्रभु फरमावे,
अंतिम सूत्र प्रधान, जय हो। श्री ८
इन्द्र ने प्रभु से प्रार्थना कीनी,
आयु बढ़ा दो नाथ, जय हो।
प्रभुजी ने निर्णय फरमाया,
नहीं होवे यह बात, जय हो॥ श्री ६
सुरगन सर्वारथ सिद्धि में,
मोक्ष पधारे वीर, जय हो।
जन्म मरण किमाड हटाकर,
सिद्ध बुद्ध बने वीर, जय हो॥ श्री. १०
द्रव्य उद्योत किया नृपोने,

दीपावली प्रकाश, जय हो ।
देव ने निर्वाणोत्सव कीना,
नंदीश्वर भी खास, जय हो ॥श्री. ११
गोतम स्वामी ने भावना भाकर,
पाया केवल ज्ञान, जय हो ।
चारित्र ज्ञान कल्याणक उत्सव,
करे सुर सुरी बहुमान, जय हो ॥ श्री १२

---

२१३ कल्पसूत्र व्या० ७ जिनचारित्र गहुंली

(राग—केसरिया थांसु प्रीति करीरे)

श्री भद्रबाहुजी, तैवीश प्रभुकी कहें वांचना ॥ टेक
तेवीसवे तीर्थंकर हुए, पार्श्व प्रभुजी प्यारे ।
अश्वसेन नृप वामारानी, उनके ये दुलारे रे ॥
शहर बनारस में प्रभुजी के, चार कल्याणक ठाना

सम्मेत गिरिमे मोच्च पधारे,बने शिवपुरी के रानारे
अरिष्ठनेमि यदुकुलचंदा, बावीश वे अरिहंत
समुद्र नृप शिवादे रानी, पुत्र हुए ब्रह्म वतरे
दो कल्याणक शौरिपुर में, तीन हुए उज्जयत
राजेमती को मोच्च में ठाकर, करें कर्मों का अतरे
वीर प्रभु के मोच्च समय का, अतरकाल बताया
सब प्रभु का चौथा आरामें, उत्तर काल जताया रे
तीसरा आरा के आखीर में, हुए प्रथम जिननाथे
नाभि-मरुदेवी के नदन, विनिता पुरी के नाथरे
ऋषभदेव,पहिला नृप,पहिला-साधु,आघ जिणद
पहिला तीर्थंकर सुरपूजित, काटे कर्मका फद रे
अष्टापद से मोच्च पधारे, मादि आनताकाल।
सागर कोटा कोटि रहीन की,ऋषभ वीरका कालरे
जिन अधिकार यहा तक ठाना,

यह सप्तम व्याख्यान ।
वक्ता श्रोता पावे आनंद, चारित्र दर्शन ज्ञानरे ॥

---

२१४ व्या० ७ नेमव्याह प्रार्थना गहुंली

(राग—पनिहारी)

गोपी कहे श्री नेमजी सुनो देवरजी ।
व्याह करो मन रंग देवरजी ॥
मात पिता को खुश करो ॥ सु० ॥
उत्सव हुए अतिचंग दे० ॥१॥
लाओ गोरी भामिनी सु० कामकला का सार दे०
पत्नी तुम्हारे भाई को सु० हैं बत्तीस हजार दे०
एक कन्यासे व्याह करो सु० नहीं है बोज की बात दे०
रक्षण भी ना कर सको सु० तो बैठा है भ्रात, दे०
व्याह पत्नी पुत्रादि से सु० कूछ

गृही ऋषभ शान्ति हुए सु० तीर्थंकर भगवान दे०
पुनवाले सुनत हुए सु० यदुकुल के भगवान दे०
पशु पंछि भी पत्नी से सु० करे प्रतिदिन गुलतानदे०
क्वारे की इज्जत नहीं सु० न गृहस्थीओ में वास दे०
साडसा वह फिरता फिरे सु० न करे कोई विश्वास दे
बेजनानाको ना मिले सु० यात्रा पर्व आनन्द दे०
औगर व्याह उद्यानमें सु० क्वांरेको क्या आनंद दे०
सधा स्नान न दु ख में सु० पत्नी का सहकार दे०
अतिथि पावणा सापुका सु० पत्नी ही करें सत्कार दे
गोवनिलाम को मोचते सु० मुस्कराये श्री नेम दे०
नारे लगाये गोपी ने सु० व्याह करेगा नेम दे०
राजमती से नेम की सु० हुई सगाई तुरत दे०
सावन सुदिमें छठसा सु० लग्न निकाला तुरत दे०
द्वारिका में उमन हुआ सु० प्रतिघरमें अतिचग दे०

होगा ब्याह निमित्त से सु० चारित्र ज्ञान अभंग दे०

---

२१५ व्या० ७ नेमजी की बरात गहुंली

(राग—कोठे ऊपर लयला बैठी, मजनु दीवाना)

रथके ऊपर नेमजी बैठे, ब्याह करन को आवे ॥टेर॥
मुकुट पहिना कुन्डल पहिने, मोतियन हार सुहावे।
फुलकीमाला तोरावाला, मरकतरंग सुहावे ॥रथ०
राजमहल से चले बराती, नेम दुल्हा बन आवे।
बाजा बाजे, धमधमगाजे, सबको साथ बुलावे ॥र०
घोड़ा हाती की बड़ी शोभा, शाही रंग जमावे।
गंध्रप गावे राग मिलावे, रस शृंगार जमावे ॥रथ०
पिता समुद्र विजयजी चाले, सजधज यादव लाले
कृष्णजी आवे, बलजी आवे, साजन महाजन आवे
उग्रसेन राजा के घर के, पास चलाकर जावे।

गावे गौरी मिलकर गोपी, अद्भुत रूप सुहावे ॥रथ
कोठे ऊपर राजूल बैठी, सखिया मखौल उडावे।
नेमकुमार की अनुपम शोभा, राजुल नैन लुभावे
अब राजूलकी नैना फरके, विघ्न की शका लावे।
सब पशु मिलकर नारे लगावे, दयाका सगीत गावे
पशु पची के रचा कारण, नेमजी रथ फिरावे।
वार्षिक देवे दीचा लेवे, गढ़ गिरनारमें जावे ॥रथ०
केवल ज्ञान को पाकर स्वामी, समोसरन को सुहावे।
चारित्र पाकर, ज्ञानी होकर, राजुलभी गिर जावे र०

---

२१६ कल्पसूत्र व्या० = स्थविरावली

(गहुली)

(राग—गमच, कर दे माका हो मागचा)

श्री महावीर की पाट परपरा,

सूरि मुनि को नमो नमो ।
निर्ग्रन्थ कोटिक चंद्र वनौकस्,
तपस्वी मुनि को नमो नमो ॥ टेर—
पांचवे गणधर स्वामी सुधर्मा, १
केवली जम्बु २ को नमो नमो ।
प्रभव ३ शय्यंभव ४ श्री यशोभद्रो, ५
संभूति सूरि ६ को नमो नमो ॥ श्री०॥१॥
स्थूलि भद्रजी ७ सुहस्ति सूरि, ८
सुस्थित सूरि ९ को नमो नमो ।
इन्द्र दिन्ना १० दिन्न ११ सींह गिरिजी, १२
वज्र स्वामीको १३ नमोनमो ॥ श्री०॥२॥
वज्र सेन गुरु १४ पुष्य गिरिजी, १५
फल्गुमित्र १६ को नमो नमो ।
धनगिरि १७ शिवभूति १८ भद्र १९ नक्षत्र, २०

रत्न सूरि २१ को नमो नमो ॥ श्री०॥३॥
नाग २२ जेहिल २३ श्री विष्णु २४ कालक,२५
श्री सपलित २६ को नमो नमो।
वृद्ध सूरि २७ संगपालित २८ हस्ति, २६
धर्मसूरि को ३० नमो नमो ॥ श्री०॥४॥
हस्ति ३१ श्रीधर्म ३२ श्रीसिंह ३३ श्रीधर्म,३४
जम्बू ३५ नंदित को ३६ नमो नमो।
देशी गणिजी ३७ स्थिर गुप्त सूरि, ३८
कुमार गुप्त ३६ को नमो नमो ॥ श्री०॥५॥
श्री देवर्षि क्षमा श्रमणजी, ४०
पूर्व वेदी को नमो नमो।
चारित्र दर्शन ज्ञान के स्वामी,
त्यागी मुनि को नमो नमो ॥ श्री०॥६॥

---

२१७ वड़ा गुरु वंदन (पद गहुंली)

(राग—श्री सिध्धगिरि को वंदन)

महावीर के पाट को वंदन हो,
पटधारी मुनिको वंदन हो ॥ टेर ॥
पंचम गणधर सुधर्म गणी ।
जंबू स्वामी श्री प्रभव मुणी ॥
श्री शय्यंभव यशो भद्र गणी ।
संभूति गणि स्थूल भद्र मुणी ॥ म० १
सुहस्ति सूरि सुस्थित सूरि ।
श्री इन्द्रदिन्न गणि दिन्न सूरि ॥
श्री सिंह सूरि श्री वज्र सूरि ।
श्री वज्र सेन गणि चंद्र सूरि ॥ म० २
सामन्त भद्र वड़े देव सूरि।
प्रद्योतन श्री मानदेव सूरि ॥
श्री मानतुंग गुरु वीर सूरि ।

मुनिसुंदरजी रत्न शेखर जी ॥
लक्ष्मी सागर सुमति गणि जी ।
श्री हेम विमल सूरि मुणिजी ॥ म० ७
आनन्द विमल विजयदाना ।
श्री हीर सूरि जगगुरु माना ॥
श्री सेन देव सिंह सूरि जाना ।
श्री सत्य विजय गणि मुनि राना ॥ म० ८
कपूर क्षमा जिन विजय गणी ।
श्री उत्तम पद्म विजयजी गणी ॥
श्री रूप कीर्ति कस्तूर गणि ।
गुरु दादा श्रीमणि विजयगणि ॥ म० ९
श्री बुद्धि विजय श्री मुक्ति गणि ।
श्री विजय कमल सूरीरामणि ॥
श्री विनय विजय जी स्थविर गुणी।

चारित्र निजयजी पूज्य मुनि ॥ म० १०
भारत में आज मुनि निचरें।
शत आठ सदा प्रतिबोध करें॥
श्री दर्शन ज्ञान व न्याय धरे।
सब जीव के श्रीकल्याण करे ॥ म० ११

गुरु स्तुति

श्री अकबर भूपाल. कृपालेषु शिरोमणि.।
विदधे येन तस्मै स्तात् श्री जगद्गुरवे नम ॥
मुनि जलधि वेलाब्धव, तपोगच्छाब्ज भासिने।
मूलचन्द गणीन्द्राय, नमोस्तु ब्रह्मचारिणे॥
तपोगच्छैक नाथाय, मूलचन्द्र महर्षये।
मुक्ति विजय गणिने, नम. मुक्त्येक दायिने॥
गुरु मन्नामि तपोग-च्छे निशाम्ने प्रतिष्ठे।

विजय कमल सूरिः, सूरि सम्राट् प्रशान्तः ॥
भविक मधुप पुष्ट्यै, दत्त सम्यक्त्व पौष्पः ।
समजनि भुवि पूज्यः, तं नमामि त्रियोगैः ॥
श्रीसिद्धाचल तीर्थराज तिलके. श्रीपादलिप्ते पुरे।
विश्वोप कृतिकं यशोविजयजी,नामाङ्कितं चादिमं
श्रीमद् ज्ञान विवर्धनं गुरुकुलं,जैन वरं स्थापितं।
स श्रीसंयत पुंगवो विजयतां,चारित्र राजेश्वरः॥
श्रमहरणां गुरुवर तणां, चरणां अमीझरणां।
शम भरणां शरणां लउं, हरे जन्म मरणां ॥

धून–संग्रह

(आज श्याम मोहे लीनो वंसरी वजाय के)
देहभान भूल गये, मस्त वीर गान में।
मस्त वीर गान में, गुल्तान प्रभु ध्यान में। देह

(गोरी पूजन चली हनुमानकु)
रहो निस दिन, वीर गुण गान में।
वीर गुण गान में, भक्ति रस तान में॥
( )
भज ले मन वीर ? वीर ?
वीर ? वीर ? वीर ? वीर ? वीर ? वीर ? वीर ? वीर ?
भज ले मन वीर वीर ?
(रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम)
ॐ ह्रीं अर्हम् श्री महावीर,
त्रिशलानन्दन जय जय वीर।
अतुल बली योगिवर वीर,
जिनवर जग दुध्धारक वीर॥
सत् चिद्घन आनन्द श्री वीर,
जय महावीर जय महावीर।
(ॐ अर्हम् श्री अलख निरंजन जय महा जय महा)
ॐ अर्हम् सद् चिद् आनदघन,

जय महावीर जय महावीर ।
(ॐ हरि (३) ॐ ॐ)
ॐ शांतिः ॐ शांतिः ॐ शांतिः ॐ ॐ
ॐ अर्हम् ॐ अर्हम् ॐ अर्हम् महावीर ।
( )

आओ बन्धु ? आओ सिद्धचक्र का गुण गाओ,
अरिहन्त सिद्ध आचारज वाचक,
मुनि से धून लगावो ।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण तप,
हरदम दिल में लावो । सिद्ध०
(राम लक्ष्मण जानकी जै बोलो हनुमान की)
जय बोलो प्रभु वीर की गौतम वीर, वजीर की।
जय बोलो गुरु हीर की जय माणिभद्र वीर की।
जय केसरियानाथ की रिषभदेव जगतात की,
सिद्धचक्र मुनिराज की जय चक्रेश्वरी मात की।